Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ दुर्गा सप्तशती

## भाषाटीका

विविधविषयोपसमलङ्कृता

सम्पादक—एवं भाषाकार

पं०—काशीनाथ शर्मा गौड़

प्रकाशक—

आदित्य प्रकाशन, भैरोनाथ, वाराणसी

प्राप्तिस्थान

श्रीराजराजेश्वरी पुस्तकालय—कालभैरव मार्ग,

वाराणसी। २२१००१

मूल्य—१०)०० मात्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

* अथ *

# दुर्गासप्तशती

## भाषाटीका

( देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र, इन्द्राक्षीस्तोत्र, कुंजिकास्तोत्रादि
विविधविषयोपसमलंकृता च )

सम्पादक—पं. काशीनाथ शर्मा गौड़-वाराणसी

प्रकाशक—आदित्यप्रकाशन, भैरोनाथ, वाराणसी

प्राप्तिस्थान—राजराजेश्वरी पुस्तकालय, कालभैरवमार्ग, वाराणसी

ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र मंत्र यंत्र, औषध व सभी प्रकार की पुस्तकों के लिये
के. के. गोयल एण्ड कम्पनी
214, दरीबा कलाँ दिल्ली-11000६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

आपके सम्मुख सहस्रों प्रकार की दुर्गासप्तशती की पुस्तकें बराबर आती रहती हैं रहेंगी किन्तु उनमें साधारणतया दोष उपस्थित किये जाते रहे हैं जो स्वनामधन्य बनने के और कुछ नहीं प्रतीत होता है उससे पाठ करने वाली आस्तिक जनता को भ्रान्ति होती है—पाठ शुद्ध सांगोपांग सावरण देना तो दूर रहा उसमें कटौती करना काट-छांट करना मूल का नाश करके सबके सामने भ्रान्ति उत्पन्न करना न्याय नहीं अन्याय है। इस दृष्टि से बड़ी छान-बीन करके हस्तलिखित पुस्तक को आधार बनाकर जो १७८५ सम्वत् को लिखी है इस पुस्तक का सम्पादन सर्वहित के लिये किया है जिससे सभी को पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। ऐसी आशा है। अन्त में माता जगदम्बा से प्रार्थना करता हूं कि इस कलिकाल के असह्य नाना प्रकार के कष्टों से छुटकारा पानेवाली आस्तिक वृत्ति सभी को प्रदान करें।

मेष संक्रान्ति
२०३६

काशीनाथ शर्मा गौड़

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

## दुर्गासप्तशत्यान्तर्गत निर्दिष्ट विषयसूची


| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रयोगविधिः | १ | पाठ विधिः ( तांत्रिक ) | १ | नवमोऽध्यायः | १८४ |
| शतचण्डीविधिः | ३ | चण्डिकाशापविमोचनम् | ३ | दशमोऽध्यायः | १९६ |
| कुमारीपूजनम् | ४ | देव्याःकवचम् | ७ | एकादशोऽध्यायः | २०५ |
| कुमारीपूजने विशेषः | ४ | अर्गलास्तोत्रम् | २४ | द्वादशोऽध्यायः | २२१ |
| चण्डीपूजने स्थानविशेषः | ५ | कीलकस्तोत्रम् | ३३ | त्रयोदशोऽध्यायः | २३३ |
| नवरात्रघटस्थापनादि प्रयोगः | ७ | नवार्णजपविधिः | ३९ | सप्तशतीन्यासः | २४० |
| कलशस्थापनम् | ८ | ऋग्वेदोक्तरात्रिसूक्तम् | ४७ | ऋग्वेदोक्तदेवीसूक्तम् | २४१ |
| नवचण्ड्यादि प्रयोगः | १२ | तन्त्रोक्तरात्रिसूक्तम् | ४८ | तन्त्रोक्तदेवीसूक्तम् | २४५ |
| आचार्यादिवरण संकल्पः | १३ | सप्तशतीन्यासः | ५३ | नवार्णजपविधिः | २५१ |
| आवरणपूजनम् | १६ | प्रथमोऽध्यायः | ५७ | प्राधानिकरहस्यम् | २५५ |
| चतुषष्ठी योगिनीपूजनम् | १८ | द्वितीयोऽध्यायः | ८१ | वैकृतिकरहस्यम् | २६४ |
| होम प्रयोगः | २० | तृतीयोऽध्यायः | १०१ | मूर्तिरहस्यम् | २७५ |
| दुर्गा पूजनविधिः | २२ | चतुर्थोऽध्यायः | ११३ | इन्द्राक्षीस्तोत्रम् | २८३ |
| दुर्गापाठ संकल्पः | २४ | पंचमोऽध्यायः | १३० | देव्यापराधक्षमापन स्तोत्रम् | २८७ |
| पुस्तक पूजनम् | २४ | षष्ठोऽध्यायः | १५३ | भगवतीनीराजनम् | २९० |
| ब्रह्मशापविमोचनम् | २५ | सप्तमोध्यायः | १५९ | दुर्गाद्वात्रिंशतनामावली | २९१ |
| कुंजिकास्तोत्रम् | २५ | अष्टमोऽध्यायः | १६७ | | |


॥ विषयसूची समाप्तः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साध्यं सुपासेन दृढेन बद्ध्वा,
निपातयन्तीं खलु साधकस्य ।
पादाब्जयोः खङ्गधरां त्रिनेत्रां,
भजामि दुर्गां जनवस्य सिद्धयै ॥

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अथ दुर्गा प्रयोगविधिः

श्रीगणेशाय नमः। अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनीतन्त्रोक्तानि। प्रतिश्लोक माद्यन्तयोः प्रणवं जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ १ ॥ अग्रे सर्वत्रश्लोकपदं मन्त्रोपलक्षणम्। सप्रणव-मनुलोमव्याहृति त्रयमादौ अन्तेतु विलोमान्तादित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वा शतावृत्तिपाठे-ऽतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ २ ॥ प्रतिश्लोकमादौ "जातवेदसे सुनवाम"[1] इति ऋचं पठेत्सर्व-काम सिद्धिः ॥ ३ ॥ अपमृत्युवारणाय "त्र्यम्बकं यजामहे" मन्त्रं पठेत् आदावन्ते च शतमित्यर्थः। प्रतिश्लोकं तन्मन्त्र जप इत्यन्यत्र ॥४॥ प्रतिश्लोकं "शूलेन पाहिनो देवीति" पाठादपमृत्यु नाशः ॥ अस्यकेवलस्यापि श्लोकस्य लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपेन् अपमृत्यु वारणम् ॥ ५ ॥ प्रतिश्लोकं ' "शरणागतदीनार्तेति" श्लोकं पठेत् सर्व कार्यसिद्धिः ॥ ६ ॥ प्रतिश्लोकं "करोतु सानः शुभ हेतुरीश्वरी इत्यर्धं पठेत्सर्वकार्य सिद्धिः ॥ ७ ॥ स्वाभीष्ट वरप्राप्तये "एवं देव्या वरं लब्ध्वेति ॥ श्लोकं पठेत् ॥ ८ ॥ सर्वापत्तिवारणाय प्रतिश्लोकं "दुर्गेस्मृता हरषिभीतेति" पठेत्। अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षम्, अयुतं, सहस्रं शतं वा जपः ॥ ९ ॥ "सर्वाबाधेत्यस्य" लक्ष जपे प्रतिश्लोकं पाठे वा श्लो-कोक्तं फलम् ॥ १० ॥ इत्थ यदा यदा बाधेति श्लोकं जपेन्महामारी शान्तिः ॥ ११ ॥ ततो

---

१. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुन्दुरिता त्यग्निः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वत्रे नृपो राज्यमिति मन्त्रत्रय जपे पुन: स्वराज्य लाभः ॥ १२ ॥ हिनस्ति दैत्य तेजांसि इति मंत्रेण सदीप बलिदानेन घण्टाबन्धने च बालग्रह शान्तिः ॥ १३ ॥ आद्यावृत्ति मनु-लोमेन पठित्वा ततो विपरीतक्रमेण द्वितीयामनुलोमेन तृतीयामित्थमावृत्तित्रयेण शीघ्रं कार्यसिद्धिः ॥ १४ ॥ सर्वापत्तिवारणाय दुर्गेस्मृता त्यर्द्धऋचं ततो यदन्ति[२] यच्च दूरकेत्यृचं तदन्ते दारिद्र्य दुखेत्यर्द्धमेव कार्यानुसारेण लक्षम् अयुतं सहस्रं इति वा जपः ॥१५॥ कांसोस्मीतृचं[३] प्रतिश्लोकं पठेल्लक्ष्मी प्राप्तिः ॥ १६ ॥ प्रतिश्लोकमनृणां[४] अस्मिन्नित्यृचं पठेद्दण परिहारः ॥ १७ ॥ मारणार्थमेव मुक्त्वा समुत्पत्येति श्लोकं प्रतिश्लोकं पठेन मार-णोक्ता वृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १८ ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि इति श्लोकस्य जपमात्रेण सद्यो मोहन मित्यनुभव सिद्धम् ॥ प्रतिश्लोकं तच्छ्लोक पाठे त्व वश्यम् ॥ १९ ॥ 'रोगान् शेषानिति' श्लोकस्य पाठे सकलरोग नाशः तन्मात्र जपेऽपि ॥ २० ॥ 'इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरेति' श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे पृथग्जपे वा विद्याप्राप्तिर्वाग्वैकृतनाशश्च ॥ २१ ॥ 'भगवत्या कृतं सर्वमित्यादि' द्वादशोत्तर शताक्षरो मंत्रः सर्व कामदः सर्वापत्तिवारणाय ॥२२॥

---

२. ॐ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दतिमिह पवमान वितज्जहि ॥

३. ॐ कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां जलंतीं तृप्तां तर्पयन्तीं पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥

४. ॐ अनृणां अस्मिन्न नृणाः पसस्मिन्तृतीये लोके अनृणाः स्याम् । ये देवयानाः पितृयाणाश्च 'लोकाः सर्वापन्थो अनृणा आक्षियेम ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



'देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद' इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षम् अयुतं सहस्रं इति अन्यतम संख्यया जपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च। एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवलमेव नमस्कारेणातिशीघ्रं सिद्धिः। प्रतिश्लोकं कामबीजं सम्पुटितस्य एक चत्वारिंशद्दिनं त्रिरावृत्तौ सर्वकार्यसिद्धिः ॥ २३ ॥ एकविंशति दिनपर्यन्तमुक्त-रीत्या प्रत्यहं द्वादशावृत्तौ वशीकरणम् ॥ २४ ॥ मायाबीजसम्पुटितस्य फट् पल्लवसहितस्य सप्तदिन"पर्यन्तं त्रयोदशावृत्तावुच्चाटनसिद्धिः ॥२५॥ तादृशमेव दिनचतुष्टयमेकादशावृत्तौ सर्वोपद्रव नाशः ॥२६॥ एकोनपंचाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकं श्रीबीजसम्पुटितस्य पंचदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ २७ ॥ प्रतिश्लोकं वाग्बीजसम्पुटितस्य शतावृत्त्या विद्या प्राप्तिः ॥ २८ ॥

॥ इति प्रयोगविधिः ॥

# ॥ अथ शतचण्डी प्रयोगविधिः ॥

मन्त्रमहोदधौ–शतचण्डी विधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम्। नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने ॥ १ ॥ अतिवृष्ट्यामनावृष्ट्यौ परचक्रभये क्षये ॥ सर्व विघ्नाविनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते। रोगाणां वैरिणां नाशो धन-पुत्र समृद्धयः ॥ शंकरस्य भवान्या वा प्रसादनिकटे शुभम् ॥ ३ ॥ मण्डपं द्वारवेद्याढ्यं कुर्यात्सध्वजतोरणम्। तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा ॥ ४ ॥ स्नात्वा नित्यक्रियां कृत्वा वृणुयाद्दश वाडवान्। जितेन्द्रियान् सदाचारान् कुलीनान् सत्यवादिनः ॥ ५ ॥ व्युत्पन्नांश्चण्डिका पाठ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रतांल्लज्जा दयावतः। मधुपर्क विधानेन स्वर्णवस्त्रादि दानतः॥ ६॥ जपार्थमासनं मालां दद्यातेभ्योऽपि भोजनम्। हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थ गतमानसाः॥ ७॥ भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम्। मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सचेतसः॥ ८॥ नवार्ण चण्डिकामंत्रं जपेयुश्चायुतं पृथक् ॥ इतिकारिकाः॥

## कुमारी पूजनम्

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम्॥ ९॥ द्विवर्षाद्या दशाब्दान्ताः कुमारी परिपूजयेत्। एकाब्दायाः प्रीत्यभावो रुद्राब्दा तु विवर्जिता॥ १०॥ तासां क्रमेण नामानि– कुमारी॥ १॥ त्रिमूर्ति॥ २॥ कल्याणी॥३॥ रोहिणी॥४॥ कालिका॥ ५॥ चण्डिका॥६॥ शाम्भवी॥ ७॥ दुर्गा॥ ८॥ सुभद्रा॥ ९॥ स्तथा। इति नाममन्त्रैस्तासां पूजा कार्याः।

### कुमारी पूजनेविशेषः

तत्र—नाधिकांगी न हीनांगी कुष्ठिनी च व्रणांकिताम्॥ ११॥ अन्धा काणा केकरा च कुरूपां रोम युक्तनुम्। दासी जातां रोगयुक्तं दुष्टां कन्या न पूजयेत्॥ १२॥ विप्रा सर्वेष्ट संसिद्धयै यशसे क्षत्रियोद्भवाम्॥ वैश्यजाधनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्॥ १३॥

गन्धपुष्पधूपदीपभक्ष्यभोज्यैर्वायथाशक्ति वस्त्राभरणैश्च पूजयेत॥

द्विवर्षा सा कुमार्युक्त त्रिमूर्तिर्हायनत्रिका। चतुरब्दा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी॥ १४॥ षडब्दा कालिका प्रोक्त चण्डिका सप्तहायनी। अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद् दुर्गा तु नवहायनी॥ १५॥ सुभद्रा दशवर्षोक्ता नाममन्त्रैः प्रपूजयेत्॥ तासामा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वाहने मन्त्रः प्रोच्यते शंकरोदितः ॥ १६ ॥ मन्त्राक्षरमयी लक्ष्मी मातृणां रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिका साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ १७ ॥ कुमारिकादि कन्यानां पूजामन्त्रान् ब्रुवेधुना । जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणी ॥ १८ ॥ पूजां गृहाण कौमारी जगन्मातर्नमोस्तुते ॥१॥ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम् ॥ १९ ॥ त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥२॥ कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ २० ॥ कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥ अणिमादिगणा धारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ २१ ॥ अनन्त शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥४॥ कामचारीं शुभां कान्तां कालचक्र स्वरूपिणीम् ॥ २२ ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥५॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्ड प्रभञ्जनीम् ॥ २३ ॥ पूजयामि सदा देविं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥६॥ सदानन्दकरीं शान्ता सर्वदेव नमस्कृताम् ॥२४॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥७॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ॥२५॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥८॥ सुन्दरी स्वर्ण वर्णानां सुखसौभाग्य दायिनीम् ॥ सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥९॥२६॥ एतैर्मन्त्रैः पुराणोक्तै स्तां तां कन्यां समर्चयेत् ॥

( इति कुमारीपूजनम् )

## चण्डीपूजने स्थानविशेषः

वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले । घटं संस्थाप्य विधिवत्तत्रावाह्यार्चयेच्छिवाम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥ २७ ॥ तदग्रे कन्यकाश्चापि पूजयेद् ब्राह्मणानिति । उपचारैस्तु विविधैर्नवार्णा वरणान्यपि ॥ २८ ॥ ॐकारः प्रथमं पीठं पूर्णपीठमतः परम् । तृतीयं कामपीठञ्च पूजयेत्सम्प्रदायतः ॥ २९ ॥ पूर्वादि दिक्षु पीठस्य गणेशादि चतुष्टयम् । गणेश क्षेत्रपालौ च पादुके वटुकास्त्रयः ॥ ३० ॥ आग्नेय्यादि चतुर्दिक्षु पूज्यं देवी चतुष्टयम् । जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता ॥ ३१ ॥ पूर्वोक्त यन्त्रे पूर्वकोणे सरस्वती सहितो ब्रह्मा श्रीसहितो विष्णुर्नैर्ऋत्यामुमयासहितः शिवो वायव्यां षट्कोणे चक्रमध्यबीजे श्रीं महालक्ष्मी ह्रीं महाकाली, ऐं महासरस्वती क्लीं दक्षिण वामयोः उदक्सिंहो दक्षिणे महिषः षट्कोणेषु नन्दजा रक्तदन्तिका शाकम्भरी दुर्गा भीमा भ्रामर्योः सबिन्दुनामाद्यवर्ण ताराद्याश्चासां नाम मंत्राः पूजादौ । तार प्रणवः ॥ अष्टत्रयेषु ब्रह्माणी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नारसिंह्यचैन्द्री चामुण्डा उक्तरीत्या नाममन्त्रैः पूज्याः, ततो विष्णुमायादि चतुर्विंशतिदेवताः प्रागादिक्रमेण केसरेषु पूज्याः त्रिपत्रञ्च केसरत्रयम् । ताश्च विष्णुमाया १, चेतना २, बुद्धि ३, निद्रा ४, क्षुधा ५, छाया ६, शक्ति ७, तृष्णा ८, क्षान्ति ९, जाति १०, लज्जा ११, शान्ति १२, श्रद्धा १३, कान्ति १४, लक्ष्मी १५, धृति ६, वृत्ति १७, स्मृति १८, दया १९, तुष्टि २०, पुष्टि २१, मातृ २२, भ्रान्ति २३, चिति २४, रूपा एतावत्यः सप्तशतीस्तवे पंचमेऽध्याये आसां चतुर्विंशतीनां न पाठ इति न भ्रमितव्यम्, कात्यायनीतंत्र विरोधात् ॥ नालमूले तु सम्पूज्यमाधारादि चतुष्टयम् ॥ आधारः कूर्मशेषौ च चतुर्थी पृथिवीनृप ॥ ३२ ॥ गृहकोणेषु गणेश क्षेत्रपालौ वटुको योगिन्यः प्रागादिदिक्षु इन्द्राद्याश्चेति एवं चतुर्दिनं कुर्यात्तत्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रथमेऽह्नि एकावृत्या द्वितीये द्वे तृतीये तिस्रश्चतुर्थे चतस्र इति पञ्चमे होमः।

## होमद्रव्याणि

पायसान्नौत्रिमध्वक्तेर्द्राक्षारम्भाफलादिभिः॥ मातुलुङ्गैरिक्षुखण्डैर्नारिकेल युतैस्तिलैः ॥३३॥ जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिः ॥ इति सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिमंत्रं हुतञ्चरेत् ॥३४॥ अयुतं च नवार्णेन स्थापितेऽग्नौ विधानतः॥ कृत्वाऽऽवरण देवानां होमं तन्नाममन्त्रतः ॥ ३५ ॥ कृत्वापूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसृज्य च। अभिषिञ्चेच्च यष्टारं विद्रौघः फलशोदकैः ॥ ३६ ॥ निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत्। भोजयेच्चशतं विप्रान् भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधेः ॥ ३७ ॥ तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्त्वा गृह्णीपादाशिवस्तथा। एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यंत्युपद्रवाः॥ ३८॥ ( इति शतचण्डीविधिः )॥

# अथ नवरात्रे घटस्थापनादिक्रमः

तत्र यजमान प्राप्त नवार्णदीक्षः सप्तशती दीक्षितो वा गुरुदर्शित क्रियाकलापः कचित् पुण्यभूमौ स्थानं निर्माय ब्राह्ममुहूर्ते समुत्थाय कृतावश्यकः कृतनित्यक्रियः कृतासनपरिग्रहः श्रीगुरूं ध्यायेत्॥ तत्र मंत्राः—

ॐ अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवेनमः ॥ १ ॥ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया॥ चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवेनमः॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


तत आचम्य प्राणानायम्य रक्षादीपं प्रज्वलय्य वद्धांजलिः प्रार्थ्यभूमिं प्रणम्य दशघटिका मध्ये अभिजिन्मुहूर्ते वा कलशस्थापनार्थं वेदिकां कृत्वा पंचपल्लव दूर्वाफल ताम्बूल कुंकुम पुष्प धूपादिसम्भारान् सम्पाद्य संकल्पं कुर्यात्। तत्रं संकल्पः—

देशकालौ संकीर्त्यममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकदीर्घायुर्विपुल धनपुत्र-पौत्राद्यविच्छिन्न सन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्ति लाभ शत्रुपराजय प्रमुख चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं अद्यविहितं कलशस्थापनं दुर्गापूजां सप्तशतीपाठं कुमारीपूजनं च करिष्ये॥ तत्र निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थँ गणपति गौरी पूजनं पुण्याहवाचनं सप्तशतीपाठार्थं ब्राह्मण वरणं च करिष्ये॥

ॐ सुमुखश्चेत्यादि स्मरणपूर्वकं गणपतिपूजनं-विधाय पुण्याहवाचनं कुर्यात्। ततो गन्धाक्षत पुष्पवस्त्रादिकं द्रव्यंचादाय—

देशकालौ संकीर्त्य अद्य शरत्कालीनदुर्गापूजनपूर्वकमार्कण्डेयपुराणान्तर्गत चण्डी-शप्तशतीपाठकरणार्थममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे॥ ॐ वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम्॥ ततो गन्धादिभिः सम्पूज्य भूमिं स्पृशेत्॥ तत्रमंत्रः—

# कलशस्थापनम्—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री॥ पृथ्वीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवी माहि ँ सीः॥ तत्र अङ्कुरारोपणार्थं मृत्तिका प्रक्षेपणमंत्रः—ॐ धान्यमसिधिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानाय त्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥ तत्र कलशस्थापनमंत्रः—

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरुर्जानिर्वर्तस्वसानः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्मा विशताद्रयिः ॥ तत्र कलशे जलप्रक्षेप मंत्र :—

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्त्थो व्यरुणस्यऽऋत सदन्न्यसि व्वरुणस्यऽऋत सदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ तत्रगन्धप्रक्षेपणमंत्रः—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये-श्रियम् ॥ तत्र औषधि प्रक्षेपणमंत्र :—

ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा । मनै नु बभ्रूणामहꣳशतन्धामानि सप्त च ॥ तत्रदूर्वाप्रक्षेपमंत्रः—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ पंचपल्लवमंत्र :—

ॐ अश्वत्थे वो निषदनम्पर्णे वो व्यसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ पुरुषम् ॥ मृत्तिकामंत्र :—

ॐ स्योना पृथिवी नोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथा । पूगीफलप्रक्षेपमंत्रः

ॐ याः फलिनीर्याऽअफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥ पंचरत्नम् :—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत। दधद्रत्नानिदाशुषे॥ हिरण्यप्रक्षेपमंत्रः

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदा धारपृथिवीं द्यामुते मां कस्मैदैवाय हविषाविधेम॥ तत्र कलशे वस्त्रवेष्टनमंत्रः—

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातुव्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥ तण्डुलपूरितपूर्णपात्रमन्त्रः—

ॐ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽइष मूर्जᳬशतक्रतो॥ तत्र वरुणावाहनमंत्र :—

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानास्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेहवो ध्युरुशर्ठः समानऽआयुः प्रमोषीः। प्रार्थनाः—

कलशस्यमुखेविष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रिताः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥१॥ कुक्षौ तु सागरास्सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोथ यजुर्वेदो सामवेदो ह्यथर्वणः॥२॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टि करी सदा॥३॥ आयान्तु ममगृहे (यजमानस्य) दुरितक्षय कारकाः॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥४॥

इत्यादिभिरभिमंत्र्य—देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ उत्पन्नोसि तदा कुम्भः विधृता विष्णु ना स्वयम्॥१॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयिस्थिताः॥ त्वयि तिष्ठन्ति भतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रजापति। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः ॥ ३ ॥ त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः॥ सान्निध्यं कुरुमें देव प्रसन्नो भव सर्वदा। पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायकं॥ इत्यादिमन्त्रैः प्रार्थयेत्॥ तत्र कलशोपरि अग्न्युत्तारणपूर्वकं स्वर्णमयीं दुर्गाप्रतिमां पंचामृतादिना स्नापयित्वा संस्थापयेत्॥ तत्र आवाहनमंत्रः—

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदनि। पूजांगृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये। इत्यावाह्य श्रीसूक्तेन आसनादि षोडशोपचारैः पूजयेत्।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ महिषघ्निमहामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि। यशो देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि में। इत्यादि प्रार्थ्य चण्डीपाठं—कुर्यात्॥ तत्र संकल्पः—

देश-कालौ-संकीर्त्य मम यजमानस्य वा अतुल विभूतिकामः श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थे कवचार्गलाकीलकसहितं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गतं ॐ सावर्णिसूर्यतनय इत्यादि सावर्णिर्भ-वितामनुरित्यन्तं देवीमाहात्म्यपाठं करिष्ये इति संकल्प्य आसनादि विधाय स्वव्यतिरिक्त हस्तलिखितं पुस्तकं स्थापयित्वा पुस्तकं सम्पूज्य—ग्रन्थार्थं बुध्यमान स्पष्टाक्षरं नाति शीघ्रं नातिमन्दं रसभावस्वरयुतं वाचयेत्। अध्यायमध्ये न विरमेत्। अथवा पुनः प्रथमतः पठनं कुर्यात्॥ ततः कुमारीपूजनम्। तत्रमंत्राः—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणि। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तुते॥ १ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीं। त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २॥ कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्। कल्याणजननी देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥ ३॥ अणिमादि गुणाधारा मकाराद्यक्षरात्मिकाम्। अनन्त शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४॥ कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्। कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम्। पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥ ६॥ सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥ ७॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्॥ पूजयामि सदाभक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ ८॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्॥ सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रा पूजयाम्यहम्॥ ९॥ इति पुराणोक्तमंत्रैः कन्याः सम्पूज्य पारणादिने कूष्माण्ड बलिदानं कुर्यात्॥ इति नवरात्रघटस्थापनम्॥

# अथ नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी अयुतचण्डी-लक्षचण्डी प्रयोगविधिः॥

अथ मण्डपं चिकीर्षुः शतचण्ड्यां षोडशहस्तं, सहस्रचण्ड्यां विंशतिहस्तं, चतुर्द्वार-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तोरणपताकादियुतं निर्वात मण्डपं विधाय तन्मध्ये मण्डप तृतीयांशेन—चतुर्हस्तां वा अष्टकोण युतां वा चतुरस्रां पक्वेष्टकरचितां रम्यां हस्तोच्छ्रितां वेदिं कृत्वा तत्पश्चिमे शत-चण्ड्यां द्विहस्तं, सहस्रचण्ड्यां चतुर्हस्तं कुण्डं पद्माकृतिं चतुरस्रं वा मेखलायोनि कण्ठ नाभिनालयुतं कुर्यात् ॥

ग्रहमखपक्षे तदीशान्यांहस्तमात्रां द्वयंगुलंवप्रां ग्रहवेदिं चापि कुर्यात्। एवं कुण्डग्र-न्थोक्त विधिना मण्डपादि रचयित्वा शतचण्ड्यां पलसुवर्णेन सहस्रचण्ड्यां पलपंचकेन मूर्त्यध्यायप्रतिपादितां महिषमर्दिनीप्रतिमां सावयवां कुर्यात्। एतत्सर्वमधिवासदिनात्पूर्वं विधेयम्—

अथ सुमुहूर्ते सपत्नीको यजमानः कृतनित्यक्रियः यथायोग्यालंकृतः जलपूर्ण कलश हस्तः—ॐ भद्रं कर्णेभिरिति मण्डपं प्रदक्षिणी कृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्य स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य दक्षिणपार्श्वे सम्भारान् संस्थाप्य – देशकालौसंकीर्त्य–अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं ममामुक कामना सिद्धयर्थं सनवग्रहमखां नवचण्डीं शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा ब्राह्मणद्वारा-कारयिष्ये। तदङ्गतया विहितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादि वरणं च करिष्ये ॥

# अथ आचार्यादिवरणसंकल्पः

असुककार्यसिद्धयर्थं करिष्यमाण नवचण्डी–वा शतचण्डी वा सहस्रचण्डी वा अयुतचण्डी वा लक्षचण्डी विधिना यज्ञकर्मणि अमुकगोत्रोत्पन्नममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्धाक्षत-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुष्प फलस्वर्णांगुलीयकासनमालाकमण्डलुद्रव्यवासोभिराचार्यत्वेन त्वामहंवृणे। इति वृत्वा—ॐ वृतोऽस्मि। इति प्रतिवचनानन्तरमाचार्यहस्ते यज्ञकंकणं बद्ध्वा गन्धादिभिः सम्पूज्य—ओं आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥ इति प्रार्थयेत् ॥

एवं ऋत्विजो वरणं कृत्वा गन्धादिभिः सम्पूज्य—ॐ ऋत्विजश्च यथापूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवितुमृत्विजोऽर्हथ सत्तमाः ॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तौऽभ्यर्थितामया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम्। पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः। अनुगृह्णन्तु मामद्य शतचण्ड्याख्य कर्मणि ॥ शतचण्डी जपे पूज्याः सन्तु मे नियमान्विताः ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः। चण्डीध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा। मालीकभाषिणः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः। ममापिनियमाह्येते भवन्तु भवतामपि। इति प्रार्थ्यं अर्घ्यं निवेदयेत्। शतचण्डीजपे ऋत्विजो नव ९ आचार्यो दशमः, १० सहस्रचण्डी जपे शतमृत्विजः अष्टौ द्वारपालाश्च कार्याः ॥ तत आचार्यो देशकालौ संकीर्त्य यजमानेन वृतोऽहमाचार्य कर्म करिष्ये। इति संकल्प्य -ओं यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या ह्यपक्रामन्तु राक्षसाः ॥ स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवंत्विमाम् ॥ इत्युक्त्वा ईशानादिसर्वदिक्षु गौरसर्षपान् विकीर्य आचमनं कृत्वा पंचगव्येन कुशैः पवमानसूक्तेन आपोहिष्ठामयोभुव इति ऋचेन च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मण्डपं सर्वत्र प्रोक्ष्य कृतांजलिः—'ओं स्वस्तिनऽइन्द्र इति मन्त्रं वारत्रयं पठेत्॥ मण्डपपक्षे मण्डपदेवतापूजांध्वजपताकोच्छ्रषणं च कुर्यात्। ततो मध्यवेद्यां पश्चिमतः सुखासने प्राङ्मुख उपविश्य—ओं पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्॥ इतिप्राथ्य—ओं पृथ्वी कूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य वामपादा घातत्रयं कृत्वा यथोपदेशं विस्तरतः संक्षेपेण वा भूशुद्ध्यादि कला मातृकान्यासान्तं कृत्वा एकादशन्यासान् कुर्यात्॥

ततोयोनिमुद्रां प्रदर्श्य ध्यायेत् श्वेताननानीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला। रक्तमध्यारक्तपादा नील जंघोरुरुन्मदा। सुचित्र जघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा। चित्रानुलेपना कान्ति रूप सौभाग्यशालिनी। अष्टादश भुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती। आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः कर क्रमात्। अक्षमाला च कमलं वाणोऽसिः कुलिशं गदा। चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घंटा च पाशकः॥ शक्तिर्दण्डश्चर्मचापं पानपात्रं कमण्डलुः॥ इति ध्यानं कृत्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पात्रासादनं कुर्यात्। ततो मध्यवेद्यां सर्वतोभद्रं तन्मध्यकोष्ठेषु अष्टदलं च विलिख्य तत्र ब्रह्मादिमण्डल देवताः स्वस्वमंत्रेण संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य तन्मध्ये पीठपूजां कुर्यात्। तद्यथा—ओं मण्डूकादिपरतत्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य पूर्वादिषु:—ॐ जयायै नमः॥ १॥ ॐ विजयाये नमः॥ २॥ ॐ अजितायै नमः॥ ३॥ ॐ अपराजितायै नमः॥४॥ ॐ नित्यायै नमः॥५॥ ॐ विलासिन्यै नमः॥ ६॥ ॐ दोग्ध्यै नमः॥७॥ ओं घोरायै नमः॥८॥ मध्ये—ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मंगलायै नमः ॥९॥ इति पीठ शक्तिः पूजयेत्। ओं ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय सर्वात्मुमसं सर्गयोगपीठात्मने नमः, इति पुष्पांजलिना आसनं दत्त्वा तत्र—ओं महीद्यौ-इत्यादि पूर्वोक्तैर्मन्त्रैर्वृहत्ताम्रकलशं संस्थाप्य तस्मिन् गन्धपुष्पफलसर्वोषधी दूर्वा पंचपल्लव पंचरत्न सुवर्ण सप्तमृत्तिकादीनि तत्तन्मंत्रेण प्रक्षिप्य कौशेय वस्त्रद्वयेन संवेष्ट्य तदुपरि ताम्रपूर्णपात्रं निधाय कलशे वरुणमावाह्य सम्पूज्य कलशदेवताः स्मृत्वा—कलशस्यमुखे विष्णुः इत्यभिमन्त्र्य—देवदानवसंवादे इत्यादि प्रार्थयेत्। ततः कलशोपरिपूर्णपात्रे रक्तवस्त्रे अष्टगन्धेन यन्त्रं लिखेत अथवा—ताम्रपात्रे लिखितं यन्त्रं स्थापयेत्। तत्र श्रीसूक्तेन आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजा प्रदक्षिणक्रमेण कुर्यात्।

## आवरणपूजनम्

त्रिकोणमध्ये मूलमन्त्रेण देवीं सम्पूज्य त्रिकोणस्य पूर्वकोणे—

ओं सरस्वती सहिताय ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥ नैऋत्यम्—ओं श्रीसहिताय विष्णवे नमः ॥ २ ॥ वायव्यम्—ओं उमासहिताय शिवाय नमः ॥ ३ ॥ उत्तरे—ओं सिंहाय नमः ॥ ४ ॥ दक्षिणे—ओं महिषाय नमः ॥ ५ ॥ इति त्रिकोण देवताः पूजयेत्॥ षट्कोणमण्डले पूर्वादिक्रमेण पूजयेत्॥—ओं नं नन्दजायै नमः ॥ १ ॥ ओं रं रक्तदन्तिकायै नमः ॥ २ ॥ ओं शां शाकंभर्यै नमः ३ ॥ ओं दुं दुर्गायै नमः ॥ ४ ॥ ओं भीं भीमाय नमः ॥ ५ ॥ ओं भ्रां भ्रामर्यै नमः ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अष्टदले-वामक्रमेण-ओं ब्रां ब्राह्मयै नमः ॥ १ ॥ ओं मां माहेश्वर्यै नमः ॥ २ ॥ ओंक्रौं कौमार्यै नमः ॥ ३ ॥ ओं वैं वैष्णव्यै नमः ॥ ४ ॥ ओं वां वाराह्यै नमः ॥५॥ ओं नां नारसिंह्यै नमः ॥ ६ ॥ ओं ऐं ऐन्द्र्यै नमः ॥ ७ ॥ ओं चां चामुंडायै नमः ॥ ८ ॥

[ चतुर्विंशतिदलेष्वपि वामक्रमेण-ओं विं विष्णुमायायै नमः ॥ १ ॥ ओं चें चेतनायै नमः ॥ २ ॥ ओंबुं बुद्ध्यै नमः॥ ३ ॥ ओं निं निद्रायै नमः॥४॥ ओं क्षुं क्षुधायै नमः ॥५॥ ओं छां छायायै नमः ॥ ६॥ ओं शं शक्तये नमः ॥७॥ ओं तृं तृष्णायै नमः ॥ ८॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः ॥९॥ ओं जां जात्यै नमः ॥१०॥ ओं लं लज्जायै नमः ॥११॥ ओं शां शान्त्यै नमः ॥१२॥ ओं श्रं श्रद्धायै नमः ॥ १३ ॥ ओं कां कान्त्यै नमः ॥ १४॥ ओं लं लक्ष्म्यै नमः ॥ १५ ॥ ओं धृं धृत्यै नमः ॥ १६ ॥ ओं वृं वृत्यै नमः ॥ १७ ॥ ओं श्रुं श्रुत्यै नमः ॥ १८ ॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः ॥१९॥ ओं तुं तुष्ट्यै नमः॥२०॥ ओंपुं पुष्ट्यै नमः ॥२१॥ ओं दं दयायै नमः ॥२२॥ ओं मां मात्रे नमः ॥ २३ ॥ ओं भ्रां भ्रांत्यैनमः ॥ २४ ॥ वहिर्भू गृहचतुष्कोणेषु—ईशान्याम्—ओ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ आग्नेय्याम्—ओं क्षें क्षेत्रपालाय नमः ॥ २ ॥ नैऋत्याम्—ओं बं बटुकाय नमः ॥ ३ ॥ वायव्याम्—ओं यों योगिनीभ्यो नमः ॥ ४ ॥ पुनः पूर्वादिषुप्रदक्षिणक्रमेण—ओं लं इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ ओं रं अग्नये नमः ॥ २ ॥ ओ यं यमाय नमः ॥ ३॥ ओं क्षं निऋतये नमः ॥४॥ ओं वं वरुणाय नमः ॥५॥ ओं यं वायवे नमः ॥ ६॥ ओं सों सोमाय नमः ॥७॥ ओं हं रुद्राय नमः ॥ ८ ॥ ओं ब्रं ब्रह्मणे नमः ॥ ९॥ अधः-ओं अं अनन्ताय नमः ॥१०॥

तद्बाह्ये—ओं वज्राय नमः ॥ १॥ ॐ शक्तयेनमः ॥ २॥ ओं दण्डाय नमः ॥३॥ ओं खड्गा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



य नमः ॥ ४ ॥ ओं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ओं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ओं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ओं त्रिशूलाय नमः ॥८॥ ॐ पद्माय नमः ॥९॥ ओं चक्राय नमः ॥१०॥

अथांग पूजा—ओं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि। ओं गिरिजायै नमः गुल्फौ पूजयामि। ओं अपर्णायै नमः जानुनी पूजयामि। ओं हरिप्रियायै नमः ऊरू पूजयामि॥ ओं पार्वत्यै नमः कटिं पूजयामि। ओं आर्यायै नमः नाभिं पूजयामि। ओं जगन्मात्रे नमः उदरं पूजयामि। ॐ मंगलायै नमः कुक्षिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः हृदयं पूजयामि। ॐ माहेश्वर्यै नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ विश्ववन्द्यायै नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ काल्यै नमः बाहू पूजयामि॥ ॐ आप्यायै नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ वरदायै नमः मुखं पूजयामि। ॐ सुवाण्यैनमः नासिकां पूजयामि। ॐ कमलाक्ष्यै नमः नेत्रे पूजयामि। ॐ अम्बिकायै नमः शिरः पूजयामि॥ ॐ देव्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ततः तत्तन्मत्रैर्धूपदीपनैवेद्यादिकं समर्प्य महानीराजनं प्रदक्षिणामेकां नमस्कारांश्च कृत्वा यथासम्भवं छत्रचामरादि समर्प्य फलैर्बलिं दत्त्वा अखण्डदीपं स्थापयेत्। अथरक्तवस्त्रोपरि चतुःषष्ठिकोष्ठगतेषु अक्षतपुंजेषु क्रमेण योगिनीः पूजयेत् ॥—

ॐ जयायै नमः जयामावाहयामि ॐ जयायै इहागच्छ इहतिष्ठ इत्यावाहयेत् ? ॥१॥ एवं सर्वत्र—विजयायै नमः ॥ २ ॥ ॐ जयन्त्यै नमः० ॥ ३ ॥ ॐ अपराजितायै नमः० ॥४॥ ॐ दिव्ययोगिन्यै नमः० ॥ ५ ॥ ॐ महायोगिन्यै नमः० ॥ ६ ॥ ॐ सिद्धयोगिन्यैनमः० ॥७॥ ॐ गणेश्वर्यै नमः० ॥८॥ ॐप्रेतासनायै नमः० ॥९॥ ॐडाकिन्यै नमः० ॥१०॥ॐकाल्यै नमः०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥११॥ ॐ कालरात्र्यै नमः० ॥१२॥ ॐ निशाचर्यै नमः० ॥१३॥ ॐ टंकारिण्यै नमः० ॥१४॥ ॐ रुद्रवेतालिन्यै नमः० ॥ ५॥ ॐ हुंकारिण्यै नमः० ॥१६॥ ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः ॥१७॥ ॐ निरूपाक्ष्यै नमः ॥१८॥ ॐ शुक्लाङ्ग्यै नमः० ॥१९॥ ॐ नरभोजिन्यै नमः० ॥२०॥ फट्कारिण्यै नमः० ॥२१॥ ॐ वीरभद्रायै नमः० ॥२२॥ ॐ धूमाङ्ग्यै नमः० ॥२३॥ कलहप्रियायै नमः० ॥२४॥ ॐ राक्षस्यै नमः० ॥२५॥ ॐ रक्ताक्ष्यैनमः० ॥२६॥ ॐ विश्वरूपायै नमः० ॥२७॥ ॐ भयङ्कर्यै नमः० ॥२८॥ ॐ वीरकौमार्यै नमः० ॥२९॥ ॐ चण्डिकायै नमः० ॥३०॥ ॐ वाराह्यै नमः० ॥३१॥ ॐ शुण्डधारिण्यै नमः० ॥३२॥ ॐभैरव्यै नमः० ॥३३॥ ॐध्वांक्षिण्यै नमः० ॥३४॥ ॐ धूम्राङ्ग्यै नमः० ॥३५॥ ॐ प्रेतवाराह्यै नमः० ॥३६॥ ॐ खड्गिन्यै नमः० ॥३७॥ ॐ दीर्घलम्बोष्ठ्यै नमः० ॥३८॥ ॐ मालिन्यै नमः० ॥३९॥ ॐ मंत्रयोगिन्यैनमः० ॥४०॥ ॐ कालिन्यै नमः० ॥४१॥ ॐ चक्रिण्यै नमः० ॥४२॥ ॐ कंकाल्यै नमः० ॥४३॥ ओं भुवनेश्वर्यै नमः० ॥४४॥ ॐ शकट्यै नमः० ॥४५॥ ॐ महामायै नमः० ॥४६॥ ॐ यमदूत्यै नमः० ॥४७॥ ॐ करालिन्यै नमः० ॥४८॥ ॐ कैशिन्यै नमः० ॥४९॥ ॐ मर्दिन्यै नमः० ॥५०॥ रोमजङ्घायै नमः० ॥५१॥ निवारिण्यै नमः० ॥५२॥ ॐ ओं विलासिन्यै नमः० ॥५३॥ ॐकार्मुक्यै नमः०॥५४॥ॐ लोल्यै नमः०॥५५॥ॐ अधोमुख्यै नमः०॥५६॥ॐ मुण्डाग्राधारिण्यै नमः० ॥५७॥ ॐ व्याघ्र्यै नमः० ॥५८॥ॐ कांक्षिण्यै नमः० ॥५९॥ ॐ प्रेतरूपिण्यै नमः ॥६०॥ ॐ धूर्जट्यै नमः० ॥६१॥ ॐ घोरायै नमः० ॥६२॥ ॐ कराल्यै नमः० ॥६३॥ ॐ विषलम्बिन्यै नमः० ॥६४॥ ॐ चतुषष्ठियोगिनीभ्यो नमः इति नाम मन्त्रेण सम्पज्य पायसबलिं दद्यात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततः तत्रैव एकदेशे—ॐ बं बटुकाय नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। इति—सम्पूज्य—ॐ बं बटुकाय पिङ्गलभासुर नेत्राय बलिं गृहाण २ भक्ष भक्ष क्रन्दय क्रन्दय ह्रीं ह्रूं स्वाहा। इति मंत्रेण बटुकाय क्षेत्रपालाय पायसादि नाना द्रव्यबलिं दत्त्वा हस्तौप्रक्षाल्याचामेत्। ततः अनेन पूजनेन श्रीमहाकाली श्रीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यप्रीयन्तामिति देवी दक्षिणतो जलमुत्सृज्य कुमारी पूजां सुवासिनीं पूजां च कुर्यात्। एवं देवी कुमार्यादिपूजा प्रत्यहं कार्या। द्वितीयदिने द्विगुणा, तृतीय दिने त्रिगुणा, चतुर्थदिने च चतुर्गुणा कार्या।

अथ पाठक्रमः—देवी पुरतः सर्वे विप्राः नवार्णमन्त्रकृताङ्गन्यासाः ग्रन्थार्थं बुध्यमानाः सप्तशतीस्तवं जपेयुः। प्रत्यहं ब्राह्मणभोजनम्। रात्रौ जागरणम्। पंचमेऽह्नि होमः। नवरात्रे नवम्यामेव होमः॥ चतुर्दश्यष्टमी नवम्यन्यतमदिने समाप्तिः कार्याः।

# अथ होमप्रयोगः

आचम्य प्राणानायम्य आनोभद्रादीनं मंगल मंत्रान् पठेत्। संकल्पं कुर्यात्॥

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुक शर्माहं सपत्नीकोऽहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्य विपुल पुत्रपौत्राद्यतनवच्छिन्न सन्तति स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रु पराजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती प्रीत्यर्थे श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं ब्राह्मण द्वारा कृतस्य नवचंडी, वा शतचण्डी वा सहस्रचण्डी वा अयुतचण्डी सप्तशतीपाठ साङ्गतासिद्ध्यर्थं तद्दशांश हवनं, तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं तद्दशांश ब्राह्मणभोजनं च करिष्ये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तदङ्गतया विहितं स्वस्तिपुण्याहवाचनं संक्षेपतः मातृकापूजनं वसोर्द्धारा पूजनं आयुष्यमन्त्रजपमाचार्यादिवरणं कुण्डसंस्कार पूर्वकमग्निप्रतिष्ठापनं च करिष्ये।

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये। संक्षेपत सर्वं ग्रहशान्त्यानुसारेण कृत्वा प्रधानहवने सप्तशती प्रतिश्लोकेन स्वाहान्त होमं चर्वाज्यद्रव्येण कुर्यात् कुण्डे-स्थण्डिलेवाशतनामाग्निं प्रतिष्ठाप्य सुसमिध्य ध्यायेत्। तवः ईशान्यां ग्रहान् सम्पूज्य तदीशान्यां कलशं स्थापयेत्। ततः पूर्ववत् यन्त्रावरणदेवतां पूजां देवीपूजां च कृत्वा कुशकण्डिकां कृत्वा आधारावाज्यभागौ हुत्वा सूर्यादिदिक्पालान्त देवताभ्यो जुहुयात्। सर्वतोभद्रमण्डलदेवता होमं कृत्वा प्रधानदेवता महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीभ्यो गुडूची पायसदूर्वा तिल पलाशपुष्प सर्षप पूंगीफल लाजायवविल्वफलरक्तचन्दन-गुग्गुलद्राक्षारम्भाफल द्रव्यैस्त्रिमध्वैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलशकलैर्जातीफलैर्मातुलुंगैरन्यैर्मधुरवस्तुभिश्च तिलमिश्रघृताक्त पायसेन वा० "शूलेन पाहिनो देवि "इत्यादि चतुर्मन्त्रान् वर्जयित्वा सप्तशत्याप्रतिश्लोकं जुहुयुः। नवार्णमंत्र जपदशांशेन जुहुयुः। अध्यायसमाप्तौ उवाच स्थले च पत्रा पुष्पैर्होमः कार्यः। एवं प्रधानहोमं कृत्वा पूर्वोक्ता जयादि पीठशक्तिभ्यो यन्त्रावरणदेवताभ्यश्च योगिनीभ्यश्च एकेकया हुत्वा जुहुयात्। ततः स्विष्ट कृदादि होमं कृत्वा इन्द्रादि क्षेत्रपालान्त देवताभ्यो बलिं दत्वा पूर्णाहुतिं दत्त्वा प्रणीताविमोकादि कर्मशेषं समाप्य दशांशेन तर्पणं कृत्वा तद्दशांशेनमार्जनं कार्यम्। ततः आचार्यादीन् सम्पूज्य दक्षिणां दद्यात्। उत्तरपूजनं कृत्वा दैव्यै महाबलिं दत्वा प्रार्थनां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कृत्वा जपं निवेद्य कुमारी-ब्राह्मण-सुवासिनीः सम्पूज्य भोजयित्वा दक्षिणादिभिः संतोष्य पीठादिकं आचार्याय दत्त्वा—

"यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥'
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रत्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति: श्रुतिः॥"

इति पठित्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुकृद्युक्तो भुंजीत्। नवचण्डीतो दशगुणः शत चंड्य, शतचण्डीतो दशगुणः सहस्रचण्ड्यां, सहस्रचण्डीतो दशगुणोऽयुतचण्डयां, अयुत चण्डीतो दशगुणो लक्षचण्ड्याविधिः कार्याः॥

इति नवचण्डी-शतचण्डी-अयुतचण्डी—लक्षचण्डी-प्रयोगः समाप्तः॥

# अथ दुर्गा पूजनविधिः

स च जयन्तीति मंत्रेण नवाक्षरेण कार्यः। तदुक्तं दुर्गाभक्तितरङ्गिणीभ्यां देवी-पुराणे—कुर्याद्देवास्सु मंत्रेण पूजां क्षीरघृतादिभिः॥ इत्युक्त्वा जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥ अनेनैवतु मंत्रेण जप-होमौ तु कारयेत्। इति॥

ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणी स्वाहा इति नवाक्षरं। तत्रप्रतिपदिप्रातरभ्यङ्गं कृत्वा—देश-कालौ संकीर्त्य ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकदीर्घायुर्विपुल धन पुत्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पौत्राद्यतनवच्छिन्नसन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थं शारदीयनवरात्र प्रतिपदि विहित कलशस्थापन दुर्गापूजनकुमारीपूजनादि करिष्ये ॥

# कलशस्थापनम्

महीद्यौः इति मन्त्रेण भूमिं स्पृष्ट्वा। ओषधयः सम इति मंत्रेण यवान् विकीर्य०। आजिघ्र कलशं इति मंत्रेण घटं संस्थाप्य। वरुणस्योत्तम्भनमसि इति मंत्रेण जलेनापूर्य। गन्धद्वारां इति मंत्रेण गन्धं क्षिपेत्। या ओषधीः इति मंत्रेण सर्वौषधीः॥ काण्डात काण्डात् इतिमंत्रेण दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत्। अश्वत्थेवो इति मंत्रेण पञ्चपल्लवान्। स्योनापृथिवि इति मंत्रेण सप्तमृदः। याः फलिनीर्या इति मंत्रेण पूंगीफलम्। हिरण्यगर्भः इतिमंत्रेण पंचरत्नानि। हिरण्यं क्षिपेत्। युवा सुवासा इति मंत्रेण वस्त्रं संवेष्ट्य। पूर्णादर्विपरापत् इति मंत्रेण पूर्णपात्रं निधाय। तत्र वरुणं सम्पूज्य-जीर्णायां नूतनायां वा प्रतिमायां दुर्गामावाह्य पूजयेत्। तद्यथा—मन्त्रमुक्त्वा—आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निपूदिनि॥ पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये। सर्वतीर्थ मयं वारि सर्वदेवसमन्वितम्। इमं घटं समागच्छ तिष्ठदेवगणैः सह। दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय। बलिं पूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह। इत्यावाह्य पूर्वोक्तमंत्रेण षोडशोपचारैः पूजयित्वा माषभक्त बलिं कूष्माण्डादि बलिं वा निवेदयेत्। इति संक्षिप्तपूजनविधिः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अथ दुर्गापाठ संकल्पः

विष्णुः ३ ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे अमुकदेशे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने महामांगल्यप्रद मासोत्तमेमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माऽहं मम (अमुकगोत्रोत्पन्नस्य–अमुकनाम्नो यजमानस्य वा)सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थमायुरारोग्यैश्वर्य्यादि वृद्ध्यर्थं सर्वदा हर्ष विजय कामना सिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं सर्वापन्निवारणार्थं—कवचार्गलाकीलक सहितम् मार्कण्डेयपुराणोक्तं मार्कण्डेय उवाचेति पूर्वकं सावर्णिस्सूर्यतनय इत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनु इत्यन्तं रात्रिसूक्तादि देवीसूक्तान्तमादावन्तेऽष्टोत्तरशतनवार्णमन्त्रा सम्पुटितं (अमुक मन्त्रेण सम्पुटितं वा) सप्तशतीस्तव पाठमन्ते रहस्यत्रायपठनञ्च करिष्ये ॥ (इति संकल्प्य)।

# पुस्तक पूजनम् ।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताप्रणताः स्मताम् ॥ इति मन्त्रेण गंधाक्षत पुष्पैःपुस्तकं सम्पूजयेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अथ ब्रह्मशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्री चण्डिकास्तोत्रस्य ब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य वसिष्ठ नारद साम्बसदाधिपत्योर्ब्रह्मा ऋषिः सर्वैश्वर्यकारिणी श्री दुर्गा देवता चरित्रत्रायं बीजम् ह्रीं शक्तिःरूपिणी संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ रामैः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ताभव। ॐ रं रक्तरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै शुम्भवध कारिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ताभव ॥ ॐ श्रीं श्रद्धारूपिण्यै फलदात्र्ये ब्रह्मशापविमुक्ता भव ॥ ॐ मां मातृरूपिण्यै अर्गलासहितायै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव। ॐ श्रीं ह्रीं दुर्गायै सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ नमः शिवायै अभेद्य कवचरूपिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव। ॐ कल्प कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद रूपिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ॥ इति रुद्रयामले चण्डिका ब्रह्मशापविमोचनम् सम्पूर्णम् ॥

# अथ कुंजिकास्तोत्रम्

शिव उवाच–शृणुदेवि ! प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्। येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजपशुभं भवेत् ॥ १ ॥ न कवचं नाऽर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्। न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासं न च वाऽर्चनम् ॥ २ ॥ कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्। अति गुह्यतरं देवि ! देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३ ॥ गोपनीयं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रयत्नेन स्वयोनिवच्च पार्वति । मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥
पाठमात्रेण संसिद्धिं कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम् ।

अथमंत्रः—श्रृं श्रृं श्रृं शं फट् ऐं ह्रीं क्लीं ज्वलोज्वल प्रज्वल ह्रीं ह्रीं क्लीं स्रावय स्रावय शापं नाशय नाशय श्रीं श्रीं जूं सः आदाय स्वाहा ॥

नमस्ते रुद्ररूपायै नमस्ते मधुमर्दिनि । नमस्ते कैटभारी च नमस्ते महिषमर्दिनि ॥ १ ॥ नमस्ते शुंभहंत्री च निशुम्भासुरघातिनी । नमस्ते जागते देवि जपसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ २ ॥ ऐंकारि सृष्टिरूपायै ह्रींकार प्रपालिका । क्लीं काली कालरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥ चामुण्डा चण्डघाती च यैं कारी बरदायिनो । विच्चेने भयदानित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणी ॥ ४ ॥ धां धीं धूं धूर्जटे पत्नी वां वीं बूं वागीश्वरी तथा । क्रां क्रीं क्रूं कुंजिकेदेवि शां शीं शुम्भे शुभं कुरु ॥ ५ ॥ हूं हूं हूं काररूपिण्यै जां जीं जूं भालनादिनि । भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरबीभद्रे भवान्यै ते नमोनमः ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ अं कं चं टं तं पं सां विदुरां सां विदुरां विमर्दय विमर्दय हं क्षां क्षीं स्त्रीं जीवय जीवय त्रोटय त्रोटय जृम्भय जृम्भय दीपय दीपय मोचय मोचय हुँ फट् जां वौषट् ऐं ह्रीं क्लीं रंजय रंजय सञ्जय सञ्जय गुंजय गुंजय बन्धय बन्धय भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवि भद्रे संकुच संकुच संचल संचल त्रोटय त्रोटय म्लीं स्वाहा ॥—

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा। म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्णं कुंजिकायै नमो नमः ॥ १ ॥ सां सीं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे। इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागृतहेतवे ॥ २ ॥ अभक्ते न च दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ! । विहानां कुंजिकादेव्या यस्तु सप्तशतीं पठेत् ॥ ३ ॥ न तस्य जायते सिद्धिर्ह्यरण्ये रोदितं यथा।

॥ इति रुद्रयामले हरगौरीतंत्रे शिव-पार्वती संवादे कुंजिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# ॥ पाठविधिः ॥

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वंशोधयामि नमः स्वाहा ॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । ॐ नमः परमात्मने, श्रीपुराण-पुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्रीब्रह्मणो द्वितीय-परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलि-युगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक-देशान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथा-नामसंवत्सरे अमुकायने महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् मासोत्तमे मासे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभयोगे शुभकरणे एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्रश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माऽहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत राजकृतसर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्तिधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं कवचार्गलाकीलकपाठ रात्रिसूक्तपाठ न्यासविधिसहितनवार्णजपसप्तशतीन्यासध्यानरहस्यत्रयशापोद्धारसहितं दुर्गासप्तशतीपाठमहं करिष्ये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ चण्डिकाशापविमोचनम् ।

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य वशिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्मा ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गादेवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव १ ॥ ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ २ ॥ ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥३॥ ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देववन्दितायै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ ४ ॥ ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥५॥ ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ ६ ॥ ॐ तृं तृषा-स्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ ७ ॥ ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधका-रिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ ८ ॥ ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ ९ ॥ ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ १० ॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


भव ॥ ११ ॥ ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मव-
शिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ १२ ॥ ॐ कां कान्ति-
स्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता
भव ॥ १३ ॥ ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै
ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता
भव ॥ १५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्व-
रूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥ १६ ॥ ॐ
क्रीं काल्यैकालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ
विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १७ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गा-देव्यै नमः ॥ १८ ॥

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर ।
चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः ॥ १९ ॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः ॥ २० ॥

॥ इति रुद्रयामलोक्त दुर्गाकल्पे चण्डिकाशापविमोचनम् सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ देव्याःकवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीवज्रकवचस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, क्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे (मम रक्षार्थे) सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः । बीजत्रयेण (क्रीं ह्रीं क्ली) षडंगः ।

ध्यानम्—रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्त सर्वाङ्गभूषणा ।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥१॥
रक्त तीक्ष्ण नखा रक्त रसना रक्तदन्तिका ।
पतिन्नारी बाह्नु रक्ता देवीं भक्तं भजेज्जनम् ॥२॥

ॐ अस्य श्रीचण्डीवज्रकवचस्य से विनियोग पढ़कर जल छोड़े। तीनों बीजों से क्रीं, ह्रीं, क्लीं से दो आवृत्ति में षडंगन्यास करने के बाद ध्यान कर देवी को प्रणाम करे।

ध्यान—रक्तवस्त्रवाली-रक्तवर्णा-सर्वांग में रक्तआभूषण सुशोभित हैं जिसके रक्त आयुधों वाली, नेत्र, तथा केश रक्तवर्ण वाली अतिभयंकररूपा, रक्तवर्ण के तेज दांत और नखों वाली, रक्त आसन पर स्थित देवी भक्तों के वशीभूत रहने वाली जैसे स्त्री पति के वश में रहती है उनका ध्यान करता हूं ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥

चण्डिकादेवी को प्रणाम कर मार्कण्डेय ऋषि बोले—हे ब्रह्माजी ! संसार में मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला परम गुप्त चण्डीपाठ है वह किसी ने भी पहले नहीं कहा है वही मुझसे कहिये ॥ १ ॥ ब्रह्माजी बोले—हे विप्र सब प्राणियों का उपकार करनेवाला पवित्र देवी का कवच है उसे हे महामुने ! तुम सुनो ॥ २ ॥ महात्मा ब्रह्माजी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ ७ ॥

ने कहा—प्रथम-शैलपुत्री, दूसरी—ब्रह्मचारिणी, तीसरी—चित्रघण्टा, चौथी—कूष्माण्डा (दुर्गा) ॥ ३ ॥ पांचवीं—स्कन्दमाता, छठीं—कात्यायनी, सातवीं—कालरात्री, आठवीं—महागौरी (अन्नपूर्णा) ॥ ४ ॥ नवीं—सिद्धिदात्री (सिद्धमाता) ये नवदुर्गा हैं ॥ ५ ॥ अग्नि से जला हुवा, शत्रुओं से घिरा, रण में संकटग्रस्त, भयानक दुर्ग में घिरा मनुष्य भय से पीड़ित होकर इन ९ नामों का स्मरण कर शरण में आता है ॥ ६ ॥ उन्हें, किसी भी प्रकार युद्ध का संकट अशुभ नहीं होता है। किसी भी प्रकार की विपत्ति-शोक-दुःख-भय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ ११ ॥

कुछ भी लेशमात्र को नहीं होता है ॥ ७ ॥ देवेशि !—भक्तिपूर्वक जिसने भी तुम्हारा स्मरण किया है उनकी निश्चय ही सर्वप्रकार वृद्धि होती है भक्ति करने से उनकी सर्वदा रक्षा होती है ॥ ८ ॥ प्रेत पर आरूढ़ चामुण्डा देवी हैं, भैंसे पर वाराही, हाथी पर ऐन्द्री, गरुड़ पर वैष्णवी ॥ ९ ॥ बैलपर माहेश्वरी, मोर पर कौमारी, कमल पर लक्ष्मी देवी हाथ में कमल लिये स्थित हैं ॥ १० ॥ श्वेत रूप धारण करने वाली ईश्वरी देवी बैल की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १३ ॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १४ ॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ १५ ॥

सवारी करती हैं, सभी आभूषणों से विभूषित, ब्राह्मी हंस को सवारी करती हैं ॥ ११ ॥ इस प्रकार सभी माताएँ सभी योगों से परिपूर्ण सभी अलंकारों से सुशोभित, अनेकों रत्नों से शोभायमान ॥ १२ ॥ दिखाई देती हैं जो रथपर सवार हैं क्रोधावस्था में हैं तथा अपने हाथों में शंख-चक्र-गदा-शक्ति-हल-मूसल ॥ १३ ॥ खेटक-तोमर-फरसा-पाश-भाला-त्रिशूल और उत्तम शार्ङ्ग धनुष नामक आयुधों ॥ १४ ॥ से राक्षसों का नाशकर भक्तों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १६ ॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ १७ ॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋर्त्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥ १८ ॥

को अभय प्रदान करने वाली देवताओं के हित के लिये देवियों ने रूप धारण कर रखा है। ॥१५॥ हे महारौद्रे ! आपको नमस्कार है। हे महाघोर पराक्रमवाली ! आपको नमस्कार है। हे महाबलवाली ! आपको नमस्कार है। महान् उत्साह वाली। हे भय को नाश करने वाली ॥ १६ । हे दुःख में दर्शन देनेवाली, शत्रुओं के भय को बढ़ाने वाली मेरी रक्षा करो। पूर्वदिशा में ऐन्द्री, मेरी रक्षा करें, अग्निकोण में अग्निदेव मेरी रक्षा करें, ॥ १७ ॥ दक्षिण दिशा में वाराही देवी मेरी रक्षा करें। नैऋत्यकोण में खड्गधारण करने वाली देवी मेरी रक्षा करें। पश्चिम में वारुणी देवी रक्षा करें। वायुकोण में मृगवाहिनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ १९ ॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ २० ॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ २१ ॥

देवी रक्षा करें ॥ १८ ॥ उत्तर में कौमारी रक्षा करें । ईशान में शूलधारिणी देवी रक्षा करें । ब्रह्माणी ऊपर से तथा वैष्णवी नीचे से रक्षा करें ॥ १९ ॥ शव पर आरूढ चामुण्डा देवी दशो दिशाओं की रक्षा करें । जया देवी, आगे से, विजया देवी पीछे से मेरी रक्षा करें ॥ २० ॥ अजिता देवी बाएँ तरफ से और अपराजिता देवी दाहिने ओर से मेरी रक्षा करें, उद्योतिनी देवी शिखा की रक्षा करें । और उमा देवी शिर की रक्षा करें ॥२१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ २२ ॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ॥ २३ ॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ २४ ॥

मालाधारी ललाट की रक्षा करें । यशश्विनी देवी भृकुटियों की रक्षा करें । और त्रिनेत्रा देवी भृकुटियों के मध्य में रक्षा करें । यमघण्टा देवी नासिका के पुटों की रक्षा करें ॥ २२ ॥ शंखिनी देवी नेत्रों के मध्य में द्वारवासिनी कानों की रक्षा करें । काकिका देवी कपोलों की रक्षा करें । शाङ्करी देवी कानों के मूल की रक्षा करें ॥ २३ ॥ सुगन्धा देवी नासिका की और चर्चिका देवी ऊपर के ओठों की रक्षा करें अमृतकला देवी नीचे के ओठों की कक्षा करें । सरस्वती देवी जिह्वा की रक्षा करें ॥ २४ ॥ कौमारी देवी दाँतों की, चण्डिका देवी कण्ठभाग की रक्षा करें । चित्रघण्टा घांटी की रक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ २५ ॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ २६ ॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोःखड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥ २७ ॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ २८ ॥

करें । महामाया तालू की रक्षा करें ॥ २५ ॥ कामाक्षी देवी ठोड़ी की, सर्वमंगला वाणी की रक्षा करें । भद्रकाली ग्रीवा की रक्षा करें । धनुर्धरी पीठ के रीढ के बांस की रक्षा करें ॥ २६ ॥ नीलग्रीवा कण्ठ के बाहर की, नलकूबरी नाड़ी की नलियों की रक्षा करें । खड्गिनी-कन्धों की, वज्रधारिणी भुजाओं की रक्षा करें ॥२७॥ दण्डिनी देवी दोनों हाथों की और अम्बिका अंगुलियों की, शूलेश्वरी नखों की, कुलेश्वरी कुक्षि की रक्षा करें ॥२८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ २९ ॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥ ३० ॥
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥ ३२ ॥

महादेवी स्तनों की, शोकविनाशिनी मन की, ललितादेवी हृदय की, शूलधारिणी उदर की रक्षा करें ॥ २९ ॥ कामिनी नाभि की और गुह्येश्वरी गुह्य की, पूतना लिंग की, महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें ॥ ३० ॥ भगवती कटि की, विन्ध्यवासिनी दोनों गोड़ों की, सर्वकामप्रदायिनी महाबला जंघाओं की रक्षा करें ॥३१॥ नारसिंही टखनों की, तैजसी पावों के पृष्ठभाग की, श्रीधरी पाँवों की अंगुलियों की, तलवासिनी पावों के अधोभाग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु ॥३५॥
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।

के तलुओं की रक्षा करें ॥ ३२ ॥ दंष्ट्राकराली नखों की, ऊर्ध्वकेशिनी केशों की रक्षा करें। कौमारी रोमकूपों की, वागीश्वरी त्वचा की रक्षा करें, ॥ ३३ ॥ पार्वती रक्त की, मज्जा की, वसा, मांस और हड्डियों तथा मेदों की रक्षा करें ॥ कालरात्रि आंतो की रक्षा करें। मुकुटेश्वरी पित्तकी रक्षा करें ॥ ३४ ॥ पद्मावती पद्मकोश की, चूड़ामणि कफ की रक्षा करें। ज्वालामुखी नखों की ज्वाला की, अभेद्या सब सन्धियों की रक्षा करें ॥ ३५ ॥ हे ब्रह्माणि ! आप वीर्य की, छत्रेश्वरी छाया की, धर्मधारिणी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥३६॥
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥३७॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्ति च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥३९॥
गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।

की रक्षा करें ॥ ३६ ॥ वज्रहस्ता प्राण-अपान-व्यान-उदान और समान की रक्षा करें। मेरे प्राण की कल्याण शोभना रक्षा करें ॥ ३७ ॥ योगिनी रस-रूप गन्ध-शब्द-स्पर्श की रक्षा करें। नारायणी सभी कालों में सत्व-रज-तम की रक्षा करें ॥ ३८ ॥ वाराही आयु की रक्षा करें। वैष्णवी धर्म की रक्षा करें। चक्रिणी यश की रक्षा करें। कीर्ति-लक्ष्मी-धन-विद्या की रक्षा करें ॥ ३९ ॥ इन्द्राणी मेरे शरीर की रक्षा करें और हे चण्डिके आप मेरे पशुओं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥४०॥
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥४१॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥४२॥
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥४३॥
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।

की रक्षा करें। महालक्ष्मी पुत्रों की, भैरवी भार्या की रक्षा करें ॥४०॥ सुपथा मार्ग में रक्षा करें। महालक्ष्मी राजद्वार में रक्षा करें। विजया चारों तरफ से मेरी रक्षा करें ॥४१॥ शेष स्थान जो रक्षा से हीन हैं और कवच के छोड़े हुए हैं उनकी सम्पूर्ण पापों को नाश करने वाली जयन्ती देवी रक्षा करें ॥ ४२ ॥ जो मनुष्य अपना शुभ चाहता हो तो कवच के बिना एक पद भी आगे न चलें। नित्य कवच का पाठ तथा उससे अपनी रक्षा करता हुआ मनुष्य जहाँ-जहाँ जाता है ॥ ४३ ॥ वहाँ-वहाँ द्रव्यलाभ-सभी कामनाओं की सिद्धि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥४४॥
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥४५॥
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः ॥४६॥
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।

सहित विजय पाता है। पुरुष जिस-जिस कामना की इच्छा करता है वह निश्चय ही प्राप्त होती है। पृथ्वी पर सभी ऐश्वर्य प्राप्त होता है ॥ ४४ ॥ कवच से रक्षित मनुष्य अपराजित होकर युद्ध में निर्भय रहता है ॥ त्रैलोक्य में पूजनीय होता है ॥ ४५ ॥ इस देवी के कवच को देवता भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं दुर्लभ है। श्रद्धा से दृढ़ता के साथ जो भी मनुष्य नित्य-प्रातः-मध्याह्न-सायंकाल तीनों संन्ध्याओं में इस कवच का पाठ करता है ॥ ४६ ॥ उसको देवी की कला प्राप्त होती है। त्रैलोक्य में अजेय होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥४७॥

नश्यन्ति व्याधय सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।

स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमंचापि यद्विषम् ॥४८॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥४९॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥५०॥

अपमृत्यु से बचता है, शतायुः होता है ॥ ४७ ॥ लूता-विस्फोटक आदि सम्पूर्ण व्याधियों से उसकी रक्षा होती है । स्थावर-विष, जंगम-विष, कृत्रिम-विष ॥४८॥ पृथ्वी पर होनेवाले अभिचार मन्त्र-यन्त्र-भूचरप्राणी, खेचरप्राणी, जलचरप्राणी और औपदैशिक ॥ ४९ ॥ संसर्ग से उत्पन्न रोग, कुल में उत्पन्न रोग, गण्डमाला, डाकिनी-शाकिनी, अन्तरिक्षचर-प्राणी, महाबलशाली, घोर डाकिनियाँ ॥ ५० ॥ ग्रह-भूत-पिशाच-यक्ष-गन्धर्व-राक्षस-ब्रह्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।
मनोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥५२॥
यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥५३॥
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी ॥५४॥

राक्षस-वेताल-कूष्माण्ड भैरव ॥ ५१ ॥ ये सभी जिसके हृदय में कवच हैं उस मनुष्य के दर्शनमात्र से उपरोक्त सभी बाधाए नष्ट हो जाती हैं । और कवच से मान की उन्नति, राजा के तेज को बढ़ाने वाला केवल यही एक कवच ही है दूसरा नहीं ॥ ५२ ॥ जो भी मनुष्य चण्डी के पाठ को इस कवच को करने के बाद करता है वह पृथ्वी में यश का भागी और कीर्ति वृद्धि को प्राप्त करता है ॥ ५३ ॥ जब तक अनन्त भगवान ( शेष ) इस भूमण्डल पर्वत-वगीचे तथा वन को धारण करे रहते हैं तब तक इस कवच का पाठ करने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥५५॥
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥५६॥

इति श्रीवाराहपुराणे हरिहर ब्रह्मविरचितं सप्तशत्यांगदेवीकवचं सम्पूर्णम् ॥

वाला मनुष्य पुत्र-पौत्रों से युक्त पृथ्वी पर स्थिर रहता है ॥ ५४ ॥ महामाया की कृपा से मनुष्य शरीर के अन्त में उस नित्य परमस्थान को प्राप्त करता है। ऐसा दुर्लभ देवताओं को भी है ॥ ५५ ॥ और यह पुरुष परमरूप प्राप्त होकर शिवजी के साथ आनन्द करता है ॥ ५६ ॥

[ बाराहपुराण के अन्तर्गत हरिहरब्रह्मविरचित देवीकवच भाषाटीका समाप्त ] ॥१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता । श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् (श्री प्रीत्यर्थे ) श्रीजगदम्बा प्रीतये सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोगः ॥ बीजत्रयेण ( श्रीं ह्रीं क्लीं ) षडङ्गः ।

ध्यानम्—सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।
लक्ष्यालक्ष्य स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्न व्यवस्थिता ॥१॥
मातुलिंगं गदा खेटं पानपात्रं च बिभ्रति ।
नागं लिंगं च योनिं च बिभ्रति नृप मूर्धनी ॥२॥
तप्तकांचनवर्णाभा तप्तकांचन भूषणा ।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥३॥

विनियोग के ऋषि विष्णु, छन्द अनुष्टुप्, देवता महालक्ष्मी हैं पढ़कर जल छोड़े ।

ध्यान—सबकी आदिरूपा, सत्य, रज, तम तीनों गुणों वाली परमेश्वरी महालक्ष्मी हैं ये लक्ष्य और अलक्ष्य हैं तथा सम्पूर्ण जगत में व्याप्त भी हैं । इनके हाथों में बीजोरा नीबू-गदा-खेट, पानपात्र है । शिर पर नागलिंग और योनि विद्यमान है । तप्तसुवर्ण के समान क्रान्ति वाली सुन्दर तप्तसुवर्णाभूषण धारण किये अपने तेज से सम्पूर्ण आकाश मण्डल को व्याप्त करती हैं ॥ १–३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥१॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥२॥
मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥

चण्डिका को नमस्कार करते हुए मार्कण्डेय मुनि बोले कि—जयन्ती-मंगलाकाली भद्र-काली कपालिनी-दुर्गा-क्षमा-शिवा-धात्री-स्वाहा-स्वधारूपों से व्याप्त देवी को नमस्कार है ॥ १ ॥ हे देवि ! तुम्हारी जय हो। हे चामुण्डे ! तुम्हारी जय हो। हे भूतों (प्राणियों) की पीड़ा को हरण करने वाली तुम्हारी जय हो। हे सर्वत्र जय देने वाली कालरात्रि ! तुम्हारी जय हो ॥ २ ॥ हे मधु-कैटभ का नाश करने वाली ! हे ब्रह्मा को वर प्रदान करने वाली ! तुमको नमस्कार है। हे देवि ! मुझे रूप-दो-जय दो-और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥४॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥५॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥६॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।

नष्ट करो ॥ ३ ॥ हे महिषासुर का नाश करने वाली ! हे भक्तों को सुख देने वाली ! हे देवी तुमको नमस्कार है। मुझको रूप दो, जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं का नाश करो ॥ ४ ॥ हे रक्तबीज का वध करने वाली ! हे चण्ड-मुण्ड का नाश करने वाली ! हे देवि ! मुझे रूप दो जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ ५ ॥ हे शुंभ-निशुम्भ और धूम्राक्ष का मर्दन करने वाली मुझे रूप दो जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रओं को नष्ट करो ॥ ६ ॥ हे वन्दना करने वाले चरणोंवाली ! हे सम्पूर्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥७॥
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥८॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥९॥
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१०॥

सौभाग्य प्रदात्री देवि! मुझे रूप दो-जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ ७ ॥ हे अचिन्त्य रूप और चरित्रों वाली! हे संपूर्ण शत्रुओं का नाश करने वाली! मुझे रूप दो जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ ८ ॥ हे चण्डिके! हे दुःखों का नाश करने वाली! हे देवि! भक्ति से सभी कालों में नमन करने वाले अपने भक्तों को रूप दो-जय दो, यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ ९ ॥ हे चण्डिके! हे व्याधिनाशिनी! भक्तिपूर्वक स्तुति करते हुए अपने भक्तों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥११॥
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१३॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।

को रूप दो, जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १० ॥ हे चण्डिके ! पृथ्वीतल पर भक्ति से सर्वदा जो तुम्हारा पूजन-करते हैं उन्हें रूप दो-जय दो और यश देते हुए शत्रुओं को नष्ट करो ॥ ११ ॥ हे देवि ! मुझे सौभाग्य दो, आरोग्यता दो, परम सुख दो, रूप दो, जय दो, और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १२ ॥ हे देवि ! शत्रुओं का नाश करो । अधिक बल दो, रूप दो, जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १३ ॥ हे देवि ! मेरा कल्याण करो ! मुझे परम सम्पत्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१४॥
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१५॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥

दो। रूप दो, जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १४ ॥ हे सुर-असुरों के मुकुटरत्नों से घिसे हुए चरणों वाली! अर्थात् उनके मस्तक से वन्दित हे अम्बिके! मुझे रूप दो जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १५ ॥ हे देवि! अपने भक्तों को विद्या दो, यश वाला बनाओ। लक्ष्मी वाला करो, रूप दो जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १६ ॥ हे प्रचण्ड दैत्यों के अभिमान को नाश करने वाली! हे चण्डिके मुझ शरणागत को रूप दो-जय दो, यश देते हुए मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१९॥
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।

शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १७ ॥ हे ब्रह्मा द्वारा चारो मुखों से स्तुति की जाने वाली चार भुजाओं वाली परमेश्वरि ! मुझे रूप दो-जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १८ ॥ सर्वदा भक्ति से कृष्ण द्वारा स्तुति की जाने वाली ! हे देवि ! हे अम्बिके ! मुझे रूप दो- जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १९ ॥ हिमाचल पुत्री के स्वामी श्रीशिवजी द्वारा बन्दना की हुई हे परमेश्वरी ! मुझे रूप दो-जय दो- और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ २० ॥ हे इन्द्राणि के पति इन्द्र द्वारा सद्भावों से पूजिता ! हे परमेश्वरि ! मुझे रूप दो, जय दो और यश देते हुए मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥
देवि प्रचण्डदोर्दण्ड दैत्यदर्पविनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥

शत्रुओं को नष्ट करो ॥ २१ ॥ हे देवि ! हे प्रचण्ड भुजदण्ड से दैत्यों के मद को नष्ट करने वाली ! मुझे रूप दो-जय दो और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ २२ ॥ हे देवि ! भक्तजनों के आनन्द का उदय करने वाली ! हे अम्बिके ! मुझे रूप दो-जय दो-और यश देते हुए मेरे शत्रुओं को नष्ट करो ॥ २३ ॥ हे देवि ! सुन्दरि और मन के अनुकूल चलने वाली, कठिन संसार-सागर से तारने वाली श्रेष्ठकुल में उत्पन्न हुई मुझे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥२५॥

॥ इति सप्तशत्याङ्ग अर्गलास्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्री दो ॥ २४ ॥ जो भी मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करने के उपरान्त महास्तोत्र का पाठ करता है वह चण्डी सप्तशती संख्या के सम्पत्ति के रूप में वर प्राप्त करता है ॥ २५ ॥

श्री मार्कण्डेयपुराण के सप्तशती के अन्तर्गत अर्गलास्तोत्र भाषाटीका सम्पूर्णम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अथ कीलकस्तोत्रम्

निम्न विनियोग पढ़कर जल छोड़े, इसके शिव ऋषि हैं। छन्द अनुष्टुप है। महासरस्वती देवता हैं। ऐं बीज है, ह्रीं शक्ति है, क्लीं कीलक है। देवी प्रीत्यर्थ सप्तशती के पाठाङ्गत्वेन जप का विनियोग करते हैं जल छोड़े। बीजत्रय-तीनों बीजों—ऐं, ह्रीं, क्लीं से दो आवृत्ति कर के षडंग न्यास करें।

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिवऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, (श्री प्रीत्यर्थे) श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः। बीजत्रयेण (ऐं ह्रीं क्लीं) षडंगः॥

ध्यानम्----उमागौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती।
शाकंभरीं स्तुवंध्यायं जपन्संपूज्य यन्मन्॥ १॥
अक्षय्य मश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतादिकम्।
भीमापि नीलवर्णा भा दंष्ट्रादशनभासुरा॥ २॥

ध्यान—उमा-चण्डी गौरी, सती कालिका विपत्तिनाशक पार्वती हैं। जो मनुष्यों द्वारा ध्यान-जप-पूजन से नमस्कृत की जाती हैं। उनसे शीघ्र ही अन्न पान-अमृत फल पाता है॥१-२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



## ॐ नमश्चण्डिकायै ।

**मार्कण्डेय उवाच**

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥१॥
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।

चण्डिका देवी को नमस्कार करते हुए मार्कण्डेय ऋषि बोले—शुद्ध ज्ञान स्वरूप शरीर धारण करने वाले, वेदत्रयी रूप, तीन नेत्रों को धारण करने वाले, अर्द्धचन्द्र धारण करने वाले श्री शिवजी को सभी प्रकार के कल्याण की प्राप्ति के लिये नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ जो पुरुष नवार्ण मंत्र के कीलक को जान ले और नवार्ण मंत्र के जप में लगा रहता है वह कल्याण प्राप्त करता है ॥ २ ॥ इससे उच्चाटन मोहन-विद्वेषण-मारण-वशीकरण आदि सभी क्रियाएँ सिद्ध होती हैं । इस कीलकस्तोत्र के पाठ से स्तुति करने से देवी सिद्ध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति ॥३॥
न मन्त्रो नौषधं तंत्र न किंचिदपि विद्यते ।
विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥४॥
समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशङ्कामिमांहरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥५॥
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥६॥
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।

होती हैं ॥३॥ न तो ऐसा कोई मंत्र है न कोई औषधि है न तन्त्र है जिसके जपने के बिना ही सम्पूर्ण उच्चाटन आदि क्रियाएँ सिद्ध हो जाँय ॥४॥ सम्पूर्ण वस्तुएँ सिद्ध हो जायेंगी। इस लोक में शंका को मानकर महादेवजी ने इस सम्पूर्ण शुभमन्त्रों-मन्त्र-तन्त्र आदि को कील दिया है ॥ ५ ॥ इसलिये महादेवजी ने इस चण्डिकास्तोत्र का नियन्त्रण कर दिया। इसके अनुसार इसको मनुष्य अच्छे पुण्यों से पाता है ॥ ६ ॥ वह सम्पूर्ण क्षेम कुशल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥७॥
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसिध्यति ।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥८॥
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥९॥
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापि हि जायते ।

को पाता है इसमें सन्देह नहीं करना। सावधान जो मनुष्य कृष्णपक्ष की चतुर्दशी या अष्टमी को ॥ ७ ॥ प्रथम देता है फिर उससे लेता है। उसी से यह देवी दुर्गा प्रसिद्ध होती है—अन्यथा नहीं होती हैं। ऐसे कीलक से यह स्तोत्र महादेव जी ने कीलित किया है। इसका फल ऐसा जानो की अष्टमी चतुर्दशी को पाठ करने मनन करने से सिद्धि होती है अन्यथा नहीं ॥ ८ ॥ कोई भी मनुष्य सप्तशती चण्डी को निष्कील कर देने पर इसका सम्पुट नित्य जपता है पाठ करता है, वही सिद्ध होता है, वही देवी का गण होता है वही जगत की रक्षा के लिये देवताविशेष गन्धर्व होता है ॥ ९ ॥ बिचरते हुए उस पुरुष को कहीं भी भय नहीं होता है, अपमृत्यु का नाश होता है। वह मनुष्य मरता है और मोक्ष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१०॥
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥११॥
सौभाग्यादि च यत्किंचिद् दृश्यते ललनाजने ।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तद् ॥१३॥

पाता है ॥ १० ॥ इसकी विधि अच्छी रीति से जान ले तब इसका पाठ प्रारम्भ करे और विधि-विधान न जाने तो उसका पाठ करने से नष्ट होता है। अतः पण्डित लोग इसको पूर्ण विधान सहित जान कर ही पाठ करे ॥ ११ ॥ हे देवि ! स्त्रियों में जो सौभाग्य दिखाई पड़ता है वह सब आपकी ही कृपा से, ऐसे इन शुभ मंत्रों का जप करना शुभप्रद है ॥ १२ ॥ जो भी मनुष्य इस स्तोत्र का धीरे-धीरे पाठ स्पष्टरूप से करता है उसे अतुल सम्पत्ति प्राप्त होती है। इस पाठ का प्रारम्भ करना उचित ही है ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥१४॥

इति भगवत्याः सप्तशत्यांग कीलकस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

---

जिस भगवती देवी का पाठ करने से ऐश्वर्य-सौभाग्य, आरोग्यता-सम्पदा ये सब प्राप्त होती हैं तथा शत्रुओं की हानि और मोक्ष की प्राप्ति होती है। उसकी मनुष्यों को अवश्य स्तुति करनी चाहिये ॥ १४ ॥

॥ सप्तशति के अन्तर्गत कीलकस्तोत्र भाषाटीका सम्पूर्ण ॥

---

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ नवार्णजपविधिः ।

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

## नवार्ण मन्त्रविधिः ।

अस्य नवार्ण मन्त्रस्य से विनियोगः तक पढ़कर जल छोड़ दें । इस नवार्ण मंत्र के ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर ऋषि हैं । नन्दा-शाकम्भरी भीमा शक्ति हैं । रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामरी बीज हैं ॥ अग्नि-वायु-सूर्य तत्व हैं । महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवी के लिये जप का विनियोग छोड़ते हैं ।

## ऋष्यादिन्यासः ।

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'—( हस्तौ प्रक्षाल्य )

ऋष्यादिन्यास—ॐ ब्रह्म विष्णु महेश्वराऋषिभ्यो नमः से शिर का। ॐ गायत्र्युष्णि अनुष्टुपछंदसेभ्योनमः से मुख। महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमः से हृदय। ऐं वीजायनमः से गुदा। ह्रीं शक्तयेनमः से पाद। क्लीं कीलकायनमः से नाभि।

मूल मंत्र से कर का संशोधन करे--ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



करन्यासः—ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नम से अंगूठा। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः से तर्जनी अंगुली। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः से मध्यमा अंगुली। ॐ चामुण्डायै से अनामिका उंगली। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः से कनिष्ठा अंगुली। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे से करतल कर पृष्ठों का स्पर्श करे।

## हृदयादिन्यासः

**ॐ ऐं हृदयायनमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।**

हृदयादि न्यासः—ॐ ऐं हृदयाय नमः से हृदय का। ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा से शिर का। ॐ क्लीं शिखायैवषट् से शिखा का। ॐ चामुण्डायै से दोनों बाहुओं का। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट से त्रिनेत्र का। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट से चुटकी बजाकर चारों तरफ घुमाते हुए अपनी हाथ की हथेली पर दो अंगुलियों से ताली बजावे।

## अक्षरन्यासः

**ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे। ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः वामनासापुटे । ॐ विं नमः मुखे । ॐ च्चे नमः गुह्ये ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति दिग्बंधः ॥

बीजन्यासः—ॐ ऐं नमः शिखायाम् से शिखा । ॐ ह्रीं नमो दक्षिण नेत्रे से दाहिना नेत्र । ॐ क्लीं नमो वामनेत्रे से बायाँ नेत्र । ॐ चां नमो दक्षिणकर्णे से दाहिना कान । ॐ मुं नमो वामकर्णे से बायां कान ! ॐ डां नमो दक्षिण नासापुटे से नासिका के दाहिने पुट का । ॐ यैं नमो वामनासापुटे से बायं नाक के छिद्र का । ॐ विं नमो मुखे से मुख का । ॐ च्चें नमो गुह्ये से गुदा का स्पर्श करें । मूल मंत्र से हाथ का का संशोधन करे ।

## दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः । ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः । ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः । ॐ क्लीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ चामु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

दिग्न्यासः—ॐ ऐं प्राच्यै नमः से पूर्व दिशा को। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः से अग्नि-कोण को। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः से दक्षिण दिशा को। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः से नैर्ऋत्य कोण को। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः से पश्चिम दिशा को। ॐ क्लीं वायव्यै नमः से वायव्य कोण को। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः से उत्तर दिशा को। ॐ विच्चे ईशान्यै नमः से ईशानकोण को। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः से आकाश को। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः से भूमि को प्रणाम करे।

ध्यानम्—खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥

ध्यान का अर्थ—खड्ग, चक्र, गदा-बाण-धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डीं, शिर और शंख आदि आयुधों को अपने दसों हाथों में धारण किये हैं। त्रिनेत्रा हैं सर्वांग में नाना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आभूषण धारण कर रखा है। नीलमणि के समान शरीर का रंग है ऐसी मधु-कैटभ का दमन करने वाली दस पैर वाली महाकाली देवी का ध्यान विष्णु भगवान ने किया उसको में प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥

जिस देवी ने अपने १८ हाथों में–अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कमण्डल, दण्ड, शक्ति, तलवार, ढाल, शंख, घण्टा, सुरापात्र, त्रिशूल, पाश और चक्र ले रखे हैं–ऐसी कमलासन पर प्रसन्न मुद्रा में बैठी महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

भगवती देवी अपने कमल के समान आठो हाथों में घंटा, त्रिशूल-हल, शंख, मुसल, चक्र, धनुष और बाण धारण किये हैं। और शरद् पूर्णिमा के चन्द्र के समान-शीतल सुन्दर मुख की कान्ति वाले चन्द्रमा के समान पार्वती के शरीर से उत्पन्न जिन्होंने शुम्भादिदैत्यों का नाश किया है ऐसी महासरस्वती देवी का मैं निरन्तर भजन करता हूँ ॥३॥

( इस मंत्र से माला का पूजन करे )

ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः ॥

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

इस मंत्र से माला की प्रार्थना करे।

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



( जप करते समय प्रार्थना करे माला ग्रहण करे । )

**ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।**

के बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे का १०८ बार ( १ माला ) जप करें।

जप के बाद—इस मंत्र को पढ़कर देवी के वामहस्त में जप निवेदन करे जल को छोड़कर—

मूल मन्त्रं—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥
अष्टोत्तर-शतं संख्यया नवार्ण मन्त्रं जपेत् ॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# ॥ अथ ऋग्वेदोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः । विश्वा अधि-
श्रियोऽधित ॥ १ ॥ ओर्वप्रा अमर्त्या निवतोदेव्युद्वतः । ज्यो-
तिषा बाधते तमः ॥ २ ॥ निरुस्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती ।
अपेदु हासते तमः ॥ ३ ॥ सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्न
विक्ष्महि । वृक्षे न वसतिं वयः ॥४॥ निग्रामासो अविक्षत नि-
पद्वन्तो निपक्षिणः । निश्येनासश्चिदर्थिनः ॥ ५ ॥ यावया वृक्यं
वृकं यवयस्तेनमूर्म्ये । अथानः सुतरा भव ॥ ६ ॥ उपमापेपि
शत्तमः । कृष्णं व्यक्तमस्थित । उष ऋणेव यातय ॥७॥ उपते-
गा इवाकर वृणीष्वं दुहितर्दिवः । रात्रिस्तोमं न जिग्युषे ॥८॥

॥ इति ऋग्वेदोक्तरात्रिसूक्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् ।

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच —

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ २ ॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ३ ॥

जो भगवति विश्वेश्वरि जगतमाता-जगतरक्षक तथा संसार की भक्षक हैं, उन्हीं भगवान विष्णु की तेजस्वरूपा अनुपम शक्ति निद्रा का चिन्तन करते हुए ॥१॥ ब्रह्माजी बोले—तुम स्वाहा हो, स्वधा हो, वषट्कार हो, स्वरूपा हो, हे नित्ये ! तुम अमृतरूपा हो, अक्षरमयी हो, त्रिमात्रा हो ॥ २ ॥ तुम्हीं अर्धमात्रिका हो, जिसका उच्चारण विशेषता से किया जाता हैं ॥ हे देवि तुम-संध्या हो, सावित्रीरूप हो, तुम संसार की जननी (माता) हो ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ ४ ॥
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।

तुमको सारा संसार धारण करता है। तुम्हीं संसार को पालती हो तुमहीं पैदा करती हो और तुमहीं संसार का विनाश करती हो ॥ ४ ॥ संसार की उत्पत्ति के समय सृष्टिस्वरूपा हो तथा संसार का पालन करते समय तुम स्थितिरूपा हो, हे देवि ! संसार का नाश करते समय संहाररूपा हो जो जगत् को जगन्मय बनाती हो ॥ ५ ॥ महाविद्या, महामेधा, महामाया, महास्मृति, महामोहा, महादेवि, महेश्वरि भी तुम्हीं हो ॥ ६ ॥ हे दुर्गे ! सम्पूर्ण चराचर जगत् की तुम त्रिगुणात्मिका प्रकृति स्वरूपा शक्ति हो। तुम-कालरात्रि-महारात्रि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ ९ ॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥१०॥
यच्च किंचित क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।

मोहरात्रि-दारुणरात्रि-रूपी रात्रि हो ॥ ७ ॥ तुम श्री हो, ईश्वरी हो, मंत्ररूपी ज्ञान हो, जिससे बुद्धि को बोध होता है। तुम लज्जा हो, पुष्टि हो, तुष्टि हो, शान्ति हो, क्षान्ति हो ॥ ८ ॥ तुम खड्गिनी हो, शूलिनी हो, घोरा हो, गदिनी, चक्रिणी, शंखिनी, चापिनी हो, बांण-परिघ और भुशुण्डी हो ये सब आपके आयुध शस्त्र हैं ॥ ९ ॥ हे देवि ! तुम सौम्य हो, सौम्यतर हो, तथा संसार के समस्त पदार्थों में सर्वसुन्दरी हो, हे देवि ! तुम श्रेष्ठ हो, श्रेष्ठतर हो, श्रेष्ठतरों में भी सम्पूर्ण ईश्वरी हो ॥ १० ॥ हे अखिलात्मिके सब सद्-असद् पदार्थ हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तस्य सर्वस्य या शक्ति सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥११॥
ययात्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥१२॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥१३॥
सात्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१४॥

उन सभीं पदार्थों की शक्ति आप ही हो, आपकी स्तुति कैसे करूँ॥ ११ ॥ जिसने संसार की सृष्टि की है। जो संसार का पालन करती हैं, संहार करती हैं तुम्हीं ने निद्रा वश विष्णुभगवान् को करलिया है कौन आपकी स्तुति कर सकता है॥ १२ ॥ मुझको, महेश्वर को विष्णु को तुम्हीं ने शरीर धारण कराया है तुम्हारी स्तुति करने में हे देवि ! कौन सामर्थ्य रखता है॥ १३ ॥ तुम्हारी स्तुति करने की सामर्थ्य मनुष्य व देवताओं में नहीं है, इन दुष्ट-दुराधर्ष मधु-कैटभ नामक राक्षसों को भी आपने मोहित कर लिया है॥ १४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥

॥ इति तन्त्रोक्तरात्रिसूक्तम् ॥

जगत के स्वामी विष्णुभगवान को जगाओ, विष्णु भगवान को जल्दी ही बुद्धि दो जिससे इन सभी राक्षसों का वध हो सके ॥ १५ ॥

इति दुर्गासप्तशती के अन्तर्गत रात्रिसूक्त भाषाटीका समाप्त ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ सप्तशतीन्यासः ।

प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । तत्रादौ न्यासाः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ शूलेन

सप्तशती पाठ में प्रथम-मध्यम-उत्तम तीन चरित्र हैं, ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र ऋषि हैं । श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती देवी ३ देवता हैं, गायत्री, उष्णिक अनुष्टुप ३ छन्द हैं। नन्दा, शाकंभरी, भीमा ३ शक्ति हैं । रक्तदन्तिका-दुर्गा-भ्रामरी ३ बीज हैं । अग्नि वायु सूर्य ३ तत्व हैं ऋग-यजुः सामवेद ३ ध्यान हैं इनकी सभी कामना की सिद्धि के लिये महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती देवता की प्रीति के लिये जप का विनियोग छोड़ दें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ अनामिकाभ्यांनमः ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॥

करन्यास करने में—इन मंत्रों से उन स्थानों को स्पर्श करता जाय—ॐखड्गिनीशूलिनी मंत्र से अंगुष्ठाभ्यां नमः। शूलेन पाहिनोदेवि से तर्जनीभ्यां नमः। प्राच्यां रक्षप्रतीच्यां से मध्यमाभ्यां नमः। सौम्यानि यानि रूपाणि से अनामिकाभ्यां नमः। खड्ग शूलगदादीनि से कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वस्वरूपे से करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः से दोनों हाथों का स्पर्श करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



हृदयादिन्यासः—

खड्गिनी शूलिनी घोरा०—हृदयायनमः। शूलेन पाहि नो देवि०—शिरसे स्वाहा। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च०—शिखायैवषट्। सौम्यानि यानि रूपाणि ०—कवचायहुम्। खड्गशूलगदादीनि०—नेत्रत्रयायवौषट्। सर्वस्वरूपे सर्वेशे०—अस्त्रायफट्।

॥ इति सप्तशती न्यासः ॥

हृदयादिन्यास—करने के लिये खड्गिनी शूलिनी मंत्र से—हृदय का। शूलेनपाहिनो देवि से शिरका—प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यों से शिखा का। सौम्यानि यानि रूपाणि से कवच का। खड्गशूलगदादीनि से नेत्रत्रय का स्पर्श करे। सर्वस्वरूपे से अस्त्राय फट् से चुटकी बजावे। और हाथ पर दाहिने हाथ से ताली बजावे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ध्यानम्—विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासि खेटविशिखाश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

देवी सिंह पर बैठी, बिजली के समान कान्तिमान, भाला, ढाल लिये हुए ८ कन्याओं के मध्य में स्वयं अपने हाथों में—चक्र, गदा, खड्ग, ढाल, बाण, धनुष, त्रिशूल और तर्जनी से धनुष की डोरी की टङ्कार करती हुई माथे पर चन्द्र धारण किये हुए त्रिनेत्रा दुर्गा देवी का भजन करता हूं ।

॥ इति सप्तशती न्यासः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ श्री दुर्गासप्तशती प्रथमोऽध्यायः ।

विनियोगः—

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मार्षिः महाकालीदेवता, गायत्री छन्दः, नन्दाशक्तिः, रक्तदन्तिकाबीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्——खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

प्रथम चरित्र के ब्रह्मार्षि, महाकाली देवता, गायत्री छंद, नन्दाशक्ति, रक्तदन्तिका बीज, अग्नि तत्त्व, ऋग्वेद का स्वरूप है—ऐसी महाकाली की प्रीति के लिये विनियोग छोड़े ।

अर्थ—खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डी, शिर और शंख आदि आयुध अपने दसो हाथों में धारण किये हैं । त्रिनयना ने सर्वाङ्ग में आभूषण धारण किया है नीलमणि के समान शरीर का रंग है ऐसे मधुकैटभ को दमन करने वाली दस पैर वाली महाकाली देवी का स्मरण विष्णु भगवान ने किया उसका मैं स्मरण करता हूं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ 'ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ॥ १ ॥

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ॥ २ ॥
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ।
सुरथो नाम राजाऽभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥ ४ ॥
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ।

ॐ नमश्चण्डिकायै । ॐ ऐं मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥ १ ॥

सावर्णि नाम के आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र कहे जाते हैं उनकी उत्पत्ति का वर्णन विस्तार से कहता हूं सो तुम सुनो ॥ २ ॥ महामाया जगदम्बा की दया से जिस प्रकार वही सूर्य के पुत्र महाभाग सावर्णि मन्वन्तराधिप हुए सो मैं कहता हूं ॥ ३ ॥ स्वारोचिष मन्वन्तर के पूर्व चैत्रवंश में उत्पन्न हुए राजा सुरथ समस्त पृथ्वी के चक्रवर्ती राजा हुए ॥ ४ ॥ राजा सुरथ अपनी प्रजा का पालन पुत्रवत करते रहे। उसी समय में कोला नाम की नगरी के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥
तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥
ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥

बहुत से राजा सुरथ राजा के शत्रु हो गये ॥ ५ ॥ बड़ी प्रबल दण्डनीति वाले राजा सुरथ का शत्रुओं के साथ संग्राम हुआ। कोलाविध्वंसी संख्या में कम थे फिर भी राजा को हरा दिया ॥ ६ ॥ तब राजा सुरथ मलीनमन अपने नगर को लौट आया और अपने शहर का राज्य करने लगा। फिर उन बलवान शत्रुओं ने राजा सुरथ पर आक्रमण कर दिया ॥ ७ ॥ राजा के दुरात्मा दुराचारी मन्त्रियों ने राजा को क्षीणशक्ति जानकर उनका धन तथा सेना सामग्री सहित छीन ली ॥ ८ ॥ प्रभुत्व नष्ट राजा सुरथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥१०॥
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥११॥
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टमानसः ।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥१२॥

अकेले ही शिकार खेलने के बहाने घनघोर जंगल में चले गये ॥ ९ ॥ उस जंगल में राजा सुरथ ने बहुत से शिष्यों के साथ सुशोभित मेधा ऋषि का आश्रम देखा वहाँ हिंसक जन्तुओं ने भी अपनी हिंसावृत्ति का त्याग कर रखा था ॥ १० ॥ कुछ काल तक मुनि द्वारा सत्कारित होकर इधर-उधर घूमते हुए राजा सुरथ ने वहां ऋषि आश्रम में निवास किया ॥ ११ ॥ मोहमाया से आकर्षित होकर राजा सोचने लगा कि मेरे पूर्वजों द्वारा रक्षित-राजधानी मुझसे छिन गई ॥ १२ ॥ मेरे दुराचारी मंत्रियों से राजधानी का पालन धर्मा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥१३॥
मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते ।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥१४॥
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥
संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोषो गमिष्यति ।

नुसार होता है या नहीं। मेरा प्रधान हाथी हमेशा मदमत्त रहने वाला है ॥ १३ ॥ शत्रुओं के वश में रहकर क्या क्या भोग भोगता होगा। क्योंकि मेरे साथ रहकर अच्छा भोजन खुशी से करने वाले मनुष्य मेरा अनुगमन करते थे ॥ १४ ॥ बिना विचार के व्यय करनेवाले दुष्ट मन्त्रि वगैरह दूसरे राजा के अधीन रहकर उनकी आज्ञा का पालन करते होंगे ॥ १५ ॥ महान् कष्ट से पूर्वजों द्वारा संचय किया धन ये अपव्यय नष्ट करते होंगे। इन सब बातों को सोचता हुआ मग्नावस्था को प्राप्त हुआ ॥ १६ ॥ राजा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥१६॥
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥१७॥
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥१९॥

वैश्य उवाच ॥ २० ॥

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥२१॥

सुरथ ने मेधा ऋषि के आश्रम की ओर आते हुए एक वैश्य को देखकर उससे पूछा तुम कौन हो और यहाँ आने का क्या कारण है ॥ १७ ॥ तुम किस शोक से दुःखी हो और तुम्हारा लक्ष्य क्या है। राजा की प्रेम भरी बातें सुन ॥ १८ ॥ समाधि नामक वैश्य ने नम्रतापूर्वक राजा से कहा ॥ १९ ॥ वैश्य बोला–हे राजन् ! मैं समाधि नामका बनिया हूँ। मैं धनवानों के घर में पैदा हुआ हूँ ॥२१॥ मेरे दुष्ट स्त्री, पुत्रों एवं कुटुम्बियों ने मिलकर धन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादायमे धनम् ॥२२॥
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥२३॥
प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥२४॥
कथं ते किं नु सद्वृत्ताः दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥२५॥

के लोभ से मुझे घर से निकाल दिया है। इस समय मैं पुत्र, दारा (स्त्री) एवं धन से रहित हूँ ॥ २२ ॥ अब मैं अपने स्त्री-बन्धु-बान्धवों से दुःखी होकर इस वन में आया हूँ यहां मुझे उनके अच्छे बुरे समाचार कुछ भी नहीं मिलते ॥ २३ ॥ यहां प्रवृत्त रहने से अपने कुटुम्बियों की स्थिति का पता नहीं चलता कि वे किस स्थिति में हैं कुशल हैं या अकुशल हैं ॥२४॥ मेरे पुत्रों की वृत्ति अच्छी है या बुरी इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता ॥ २५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



राजोवाच ॥ २६ ॥

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥२७॥
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥२८॥

वैश्य उवाच ॥ २९ ॥

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥३०॥
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥३१॥
पतिस्वजनहार्दं च हार्दितैष्वेव मे मनः ।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥३२॥

राजा बोला—जिन पुत्र, स्त्री बन्धुओंने लोभ से तुम्हारी सारी सम्पत्ति छीन ली ॥२७॥ उनके लिए तुम्हारे मनमें किस प्रकार का स्नेह है ॥ २८ ॥ वैश्य बोला–आप जो कुछ कह रहे हैं सब सत्य हैं ॥३०॥ मैं क्या करूँ मेरा मन निष्ठुर नहीं होता है। जिन्होंने धन के लोभ से पितृस्नेह को त्याग कर मुझे घर से निकाल दिया है ॥३१॥ उन सबके प्रति मेरे हृदयमें प्रेम है। हे महाबुद्धिमान राजन् ऐसा क्यों हैं इस कारण को जान कर भी नहीं जान पाता ॥३२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥३६॥
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥३७॥

उनके लिए मैं कितना दुःखी होकर ऊर्ध्व श्वाँस ले रहा हूं यह मेरी चिन्तनीय दशा मुझको ही दुःख दे रही है ॥ ३३ ॥ इन सब कुटुम्बियों से त्यजित होने पर भी मेरे मन में निष्ठुरता नहीं आती है ॥३४॥ मार्कण्डेय जी बोले—इसके बाद राजा सुरथ व समाधि वैश्य दोनों मेधाऋषि के पास गये ॥ ३६ ॥ अभिवादन के बाद प्रीतिपूर्वक—राजा सुरथ व समाधि वैश्य बैठकर मेधाऋषि से कथा-वार्ता करने लगे ॥ ३७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥३८॥

राजोवाच ॥ ३९ ॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥

दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ।

ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥४१॥

जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ।

अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥४२॥

राजा बोला—भगवन् मेरे मनमें एक इच्छा है उसी को कहिये ॥३८॥ जिस बात से मेरे मन में दुःख होता है, मेरा चित्त मेरे वश में नहीं है मेरा राज्य मुझसे नष्ट हुआ है मेरा मन उसी में डूबा है ॥ ४१ ॥ हे मुनिसत्तम् ! यह जानते हुए कि अब यह मेरा नहीं है फिर भी अज्ञानी की भांति दुःखी होता हूं और यह वैश्य भी अपनी स्त्री-पुत्रादिकों से और भृत्यों से तिरस्कृत कर निकाल दिया गया है ॥ ४२ ॥ इसको स्वजनों ने भी छोड़ दिया है तब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्याति ।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥४३॥
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥४४॥
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥४५॥

ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥४७॥

भी हार्दिक प्रेम उनके प्रति रखता है इस प्रकार हम दोनों बहुत दुःखी हैं ॥ ४३ ॥ दृष्टि से देखते हुए भी दूषित विषय में हमारा मन स्नेहयुक्त है। हे महाभाग! हम दोनों जानते हुए भी मोह में अज्ञानियों की भाँति फँसे हैं ॥ ४४ ॥ हम दोनों में विवेकहीनता व मूर्खता बढ़ती दिखाई देती है ॥४५॥ ऋषि बोले—समस्त जीव, जन्तुओं को विषयादि का ज्ञान रहता है ॥४७॥ हे महाभाग! विषय भी अलग-अलग होते हैं—कुछ प्राणी दिन में नहीं देखते और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक् ।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥४८॥
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किंतु ते नहि केवलम् ॥४९॥
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥५०॥
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५१॥

कुछ रात में नही देखते हैं ॥ ४८ ॥ कोई प्राणि दिन तथा रात्रि दोनों में समान दृष्टि रखते हैं। मनुष्य सब विवेकी हैं और मृगादि-सब पशु-पक्षि सभी समझदार हैं ॥ ४९ ॥ मनुष्यों की समझ भी वैसी ही होती है जैसी समझ मृग-पशु-पक्षियों की होती है। प्राणी सभी समझदार होते हैं ॥ ५० ॥ इस प्रकार विवेकी होने पर भी कितनी भिन्नता रहती है देखिये सभी पशु-पक्षि भूख से दुःखी रहने पर भी अपने बच्चों की चोंच में अन्न देते जाते हैं और खुश होते हैं ॥५१॥ हे मनुष्यों ! अपने पुत्रों का पालन पोषण अपने स्वार्थ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥५२॥
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि ।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्त्ते निपातिताः ॥५३॥
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणः ।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥५४॥

वश करता है परन्तु वे पक्षी जो भूख से पीड़ित रहते हुए भी कणों का मोक्ष बिना मोह करते हैं और बदले में कुछ नहीं मिलता है ॥ ५२ ॥ लोभ के वशीभूत होकर प्रत्युपकार करते हैं कि वृद्धावस्था प्राप्त होने पर इसी प्रकार हमारी सेवा होगी। ऐसा मनुष्य नहीं जानते ॥५३॥ ऐसी बदला लेने की इच्छा न होने पर भी जगदम्बा के प्रसाद से मोह के जाल में फंस कर आदमी संसार को स्थिर रखने वाले हैं। इसमें आश्चर्य नहीं है। महामाया, योगमाया त्रिलोकीनाथ हरि की माया है ॥ ५४ ॥ वही योगमाया संसार को मोहित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



महामाया हरेश्चैषां तया संमोह्यते जगत् ।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥५५॥
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥५६॥
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥५७॥
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥५८॥

किये रहती है तथा वही महामाया ज्ञानियों का चित्त बलात् खींचकर मोह में फंसाये रहती हैं ॥ ५५ ॥ वे भगवती ज्ञानियों के चित्त को भी बल पूर्वक खीचकर मोह में डाले रखती हैं। इन्हीं ने सारे संसार को पैदा किया है ॥ ५६ ॥ वही भगवती मनुष्य को प्रसन्न होकर मुक्तिरूपी वर देती हैं। वही पराविद्या मुक्ति और मोक्ष का कारण है, वही सनातनी ब्रह्मज्ञानी विद्या है ॥ ५७ ॥ वही संसार के बन्धन का कारण है। वही सर्वेश्वरी, ईश्वरी भी हैं ॥ ५८ ॥ राजा बोला—हे भगवन् ! जिसे आप महामाया कह कर पुकारते हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



राजोवाच ॥५९॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति या भवान् ॥६०॥
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥६१॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदांवर ॥६२॥

ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥६४॥
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥६५॥

वह देवी कौन है ॥ ६० ॥ उनकी उत्पत्ति कैसे हुई है। और उसके कार्य क्या-क्या हैं ॥ हे ऋषि उन देवी का उद्भव, स्वरूप और प्रभाव कैसा है ॥ ६१ ॥ यह सब मैं आपके मुंह से सुनना चाहता हूँ ॥ ६२ ॥ ऋषि बोले—अजन्मा अमरणा जगन्मूर्ति जगदम्बा हैं। ये सारे संसार में व्याप्त हैं ॥ ६४ ॥ उनकी उत्पत्ति अनेक प्रकार की है मैं कहता हूं सुनो-देवों की कार्यसिद्धि के लिये जब तब वह दर्शन देती हैं ॥ ६५ ॥ तभी मनुष्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥६६॥
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥६७॥
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ।
स नाभिकमलेविष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥६८॥
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥६९॥

उस नित्य रहने वाली देवी को "उत्पन्ना" कहते हैं। कल्पान्त में सृष्टिके लय में जब बिष्णु भगवान एकार्णव योगनिद्रा में लीन रहते हैं ॥ ६६ ॥ उनके कानों से मैल के गिरने से मधु-कैटभ नाम के प्रसिद्ध दो भयानक डरावने राक्षस पैदा हुए ॥ ६७ ॥ ये दोनों ब्रह्मा जी का वध करने को तैयार हुए वे प्रजापति ब्रह्मा जी विष्णू भगवान की नाभिकमल पर बैठे हैं ॥ ६८ ॥ उन दोनों राक्षसों को देखकर सोचा विष्णू भगवान सोये हैं उनको जगाने की इच्छा से एकाग्र हो ॥ ६९ ॥ विष्णु भगवान की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥७०॥
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥७१॥

ब्रह्मोवाच ॥७२॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारःस्वरात्मिका॥७३॥
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥७४॥

आँख पर बैठी हुई योगनिद्रा की स्तुति करने लगे । जगत् माता, जगत् रक्षक तथा संसार की भक्षक है ॥७१॥ भगवान विष्णु की तेजस्वरूपा अनुपम शक्ति है उन्हीं निद्रा का चिन्तन करने लगे ॥७१॥ ब्रह्मा बोले—तुम स्वाहा हो, तुम स्वधा हो, तुम वषट्कार हो, और स्वर स्वरूपा हो ॥७३॥ हे नित्ये ! तुम अमृत स्वरूपा हो, अक्षरमयी त्रिमात्रा तुम्हीं हो, अर्ध-मात्रिका भी तुम्हीं हो जिसका उच्चारण विशेषता से है ॥ ७४ ॥ हे देवि तुम ही संध्या हो,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्वमेव संध्यां सावित्री त्वं देवि जननी परा ।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥७५॥
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥७६॥
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥७७॥
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥७८॥

सावित्री स्वरूपा हो, तुम ही संसार की जननी हो, तुमको ही सारा जगत धारण करता है ॥ ७५ ॥ तुम्हीं संसार को पैदा करती हो, तुम्हीं पालन करती हो, तुम्हारे द्वारा ही संसार का विनाश होता है। संसार की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिस्वरूपा हो तथा संसार का पालन करने में तुम स्थितिस्वरूपा हो ॥ ७६ ॥ हे देवि ! संसार के नाश समय संहार रूपा हो, महाविद्या, महामेघा, महामाया, महास्मृति ॥७७॥ महामोहा महादेवि, माहेश्वरि हो। हे दुर्गे ! तुम सम्पूर्ण चराचर की त्रिगुणात्मिका प्रकृतिस्वरूपा शक्ति हो ॥ ७८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरीत्वं ह्रींस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥७९॥
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥८०॥
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥८१॥

तुम कालरात्रि हो, महारात्रि हो, मोहरात्रि हो तथा दारुणरात्रि हो तुम श्री हो, तुम ईश्वरी हो, तुम ह्रीं मंत्ररूपी ज्ञान हो, जिससे बुद्धि को बोध मिलता है ॥७९॥ तुम लज्जा हो, पुष्टि हो, तुष्टि हो, शान्ति हो, क्षान्ति हो, खड्गिनी हो, शूलिनी हो, घोरा हो, गदिनी हो, चक्रिणी हो, ॥ ८० ॥ शंखिनी, चापिनी हो, बाण, परिघ, और भुशुण्डी आपके आयुध हैं। हे देवि ! तुम सौम्य हो, सौम्यतर हो, तथा संसार के समस्त पदार्थों में सर्वसुन्दरी हो ॥ ८१ ॥ हे देवि ! तुम श्रेष्ठ हो, श्रेष्ठतर हो, श्रेष्टतरों में सम्पूर्ण ईश्वरी हो—हे अखिला-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥८२॥
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥८३॥
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥८४॥
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥८५॥

त्मिके ! सब सद्, असद् पदार्थ हैं ॥८२॥ उन सब पदार्थों की शक्ति आप ही हो । आपकी स्तुति कैसे करूं जिसने संसार की रचना की है संसार का पालन करते हैं संहार करते हैं ॥८३॥ मुझको महेश्वर को विष्णु को तुम्हीं ने शरीर धारण कराया है । और भगवान विष्णु को निद्रावश कर लिया है कौन व्यक्ति आपकी स्तुति कर सकता है ॥८४॥ हे देवि ! आपकी स्तुति करने की सामर्थ्य मनुष्य व देवताओं में नहीं है इस तरह अपने उदार स्वभाव का वर्णन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥८६॥
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥

ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥८९॥
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥९०॥

सुन प्रसन्न हो ॥ ८५ ॥ इन दुष्ट दुराधर्ष मधु-कैटभ नाम के राक्षसों को मोहित कर जगत के स्वामी विष्णु को जगाओ । ॥ ८६ ॥ विष्णु भगवान को जल्दी ही बुद्धि दो जिससे इन राक्षसों का वध हो ॥ ८७ ॥ ऋषि बोले—उन राक्षसों को मारनेकी इच्छा से—भगवान विष्णु को जगाने वाले ब्रह्माजी उस तमोगुण रूपी निद्रादेवी की स्तुति कर चुके ॥ ८९ ॥ अव्यक्त जन्मा, ब्रह्माजी के सामने, विष्णु भगवान के मुंह, आँख, नाक, बाहू मन तथा हृदय से निकल कर भगवती योगमाया ने खड़े हो ब्रह्मा को दर्शन दिया ॥ ९० ॥ योगनिद्रा से मुक्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥९१॥
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥९२॥
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥९३॥
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥९४॥

होने पर विष्णु भगवान ने एकार्णवस्थित शेषशय्या से उठकर अवलोकन किया ॥९१॥ तो दोनों दुरात्मा अत्यन्त पराक्रमी मधु-कैटभ को देखा जो ॥ ९२ ॥ क्रोध से लाल नेत्र किये ब्रह्मा को मारने के लिये तैयार हैं। उनसे भगवान विष्णु ने उठ कर ॥ ९३ ॥ पांच हजार वर्ष तक मल्लयुद्ध किया—वे बलोन्मत्त राक्षस जगदम्बा की कृपा से मोहित हो गये ॥ ९४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥९५॥

श्रीभगवानुवाच ॥९६॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥९७॥

किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥९८॥

ऋषिरुवाच ॥९९॥

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥१००॥

विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ।

आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥१०१॥

हे केशव ! तुम हम दोनों से वर मांगो ॥ ९५ ॥ श्री भगवान बोले–यदि तुम हमसे प्रसन्न हो तो तुम दोनों मेरे द्वारा मारे जाओ ॥ ९७ ॥ मैं चाहता हूँ और दूसरे वर से कोई लाभ नहीं ॥९८॥ ऋषि बोले–ऐसी चाल चलकर विष्णु भगवान ने उन्हें छल लिया ॥१००॥ उन दोनों ने सारे जगत को डूबा देखकर विष्णु भगवान से कहा कि हमें ऐसे स्थान में मारो जहाँ पानी से पृथ्वी न डूबी हो ॥ १०१ ॥ ऋषि बोले—भगवान ने कहा ऐसा ही होगा तब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


ऋषिरुवाच ॥१०२॥

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता ।
कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने जघने शिरसीतयोः ॥१०३॥
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयःशृणु वदामि ते॥ऐं ॐ॥१०४॥

शंख, चक्र, गदाधारी भगवान ने उन दोनों राक्षसों का मस्तक अपनी जांघ पर रख चक्र से काट दिया ॥१०३॥ महामाया इसी प्रकार उत्पन्न हुई, ब्रह्माजी ने स्तुति की और देवी जी का वृतान्त तुमसे कहता हूँ सुनो ॥१०४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

उवाच १४ ॥ अर्द्ध० २४ ॥ श्लोक० ६६ ॥ मंत्र १०४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः

ॐ अस्य मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिर्महालक्ष्मीर्देवता उष्णिक् छन्दः शाकम्भरी शक्तिः दुर्गा बीजं वायुस्तत्वं यजुर्वेदः स्वरूपं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्—

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।

ॐ मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि हैं महालक्ष्मी देवता है, उष्णिक छन्द है, शाकम्भरी शक्ति है, दुर्गा बीज है, वायु तत्व है, यजुर्वेदः स्वरूप है । ऐसी महालक्ष्मी की प्रीति के लिये मध्यम चरित्र जपने के लिये विनियोग छोड़ता हूं ।

अर्थ—जो देवी अपने अठारह हाथों में—अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कमण्डल, दण्ड, शक्ति, तलवार, ढाल, शंख, घण्टा, सुरापात्र, त्रिशूल, पाश और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥१॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ २ ॥
तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ।
जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥

चक्र धारण किये हुए हैं ऐसी कमल के आसन पर प्रसन्न मुद्रा में बैठी महिषासुर का मर्दन करने वाली भगवती महालक्ष्मी का मैं भजन करता हूं।

ऋषि बोले—पहले देवताओं और राक्षसों में पूरे १०० वर्ष तक घोर युद्ध हुआ था उस युद्ध में राक्षसों का स्वामी महिषासुर था और देवताओं के राजा इन्द्र थे ॥ २ ॥ युद्ध में महाबली राक्षसी सेना ने देवताओं को हरा दिया और सब देवताओं को जीत कर महिषासुर इन्द्रासन का मालिक बना ॥ ३ ॥ सब देवता पराजित होकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥
यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥
सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥

प्रजापति, कमलयोनि ब्रह्मा जी के पास गये उनको साथ लेकर जहाँ महादेव व विष्णु भगवान थे वहाँ गये ॥ ४ ॥ इन्द्रादि देवताओं ने महिषासुर से अपने हारने का पूर्ण वृत्तान्त शिव और विष्णु भगवान को सुनाया कि हमें स्वर्ग से भी निकाल दिया ॥ ५ ॥ महिषासुर ने सूर्य, चन्द्रमा, इन्द्र, अग्नि, पवन, वरुण और यम के सम्पूर्ण अधिकारों को अपने हाथ में लेकर वह स्वयं अधिष्ठाता बन गया है ॥६॥ महिषासुर द्वारा स्वर्ग से निकाले जाने पर समस्त देवतागण पृथ्वी पर मनुष्यों की भाँति घूमते हैं ॥ ७ ॥ महिषासुर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ।
शरणं व प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥१०॥
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥११॥

द्वारा की गई करतूतों का वर्णन आपको सुनाया, अब हम आपकी शरण में आये हैं उसके वध का कोई उपाय निकालिये ॥ ८ ॥ देवताओं के बचन सुनकर भगवान विष्णु और शिव ने दैत्यों पर बहुत क्रोध किया जिससे उनके मुंह और भौहें टेढ़ी हो गयीं ॥ ९ ॥ इसके बाद कोप में भरे हुए चक्रपाणि विष्णु ब्रह्मा और शंकर भगवान के शरीरों से तेज निकला ॥ १० ॥ और सब इन्द्रादि देवताओं के शरीर से भी तेज निकला और सब एक हो गया ॥११॥ और देवताओं ने देखा सम्पूर्ण तेज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥१२॥
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥१३॥
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ।
याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥१५॥

मिलकर एक ज्योति के समान सम्पूर्ण दिशाओं को व्याप्त करने वाला पर्वत सा जान पड़ा। ॥१२॥ उस तेज की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती थी और वह एक स्त्री के स्वरूप में बदलने लगी ॥१३॥ भगवान् शंकर के तेज से देवी का मुख हुवा, यमराज के तेज से शिर के बाल पैदा हुए और विष्णु भगवान के तेज से उनकी भुजाएं उत्पन्न हुईं ॥१४॥ चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तन, इन्द्र के तेज से कटिभाग, वरुण के तेज से जांघ और पिंडली, पृथ्वी के तेज से नितम्ब भाग हुवा ॥ १५ ॥ ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा ।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥१६॥
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥१७॥
भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥१८॥
ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥१९॥

सूर्य के तेज से पैरों की अंगुलियां, वसुओं के तेज से हाथों की अंगुलियां और कुबेर के तेज से नासिका प्रकट हुई ॥ १६ ॥ प्रजापति के तेज से उसके दांत और अग्नि के तेज से उनके तीनों नेत्र प्रकट हुए ॥ १७ ॥ संध्या के तेज से भौंहें, वायु के तेज से कान उत्पन्न हुए। इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं के तेज से ही कल्याणमयी देवी की उत्पति हुई ॥ १८ ॥ महिषासुर द्वारा सताये हुए देवता सम्पूर्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥२०॥
शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥
वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः ।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥२२॥
कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ।

देवगणों के अंश से उत्पन्न महामाया को प्रकट देखकर बहुत प्रसन्न हुए॥ १९ ॥ धनुषधारी शिवने अपने त्रिशूल से निकाल एक त्रिशूल देवी को दिया। विष्णु भगवान ने अपने चक्र से एक चक्र निकाल कर देवी को दिया॥ २० ॥ वरुण देव ने शंख, अग्नि ने शक्ति, वायु ने धनुष और बाणों से भरे दो तरकस दिये॥ २१ ॥ देवताओं के राजा सहस्र नेत्रों वाले इन्द्र ने अपने वज्र से एक वज्र उत्पन्न कर तथा अपने ऐरावत हाथी से घंटा दिया॥ २२ ॥ यमराज ने अपने कालदण्ड से दण्ड, अम्बुपति वरुण ने नागपाश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥२३॥
समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः ।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥२४॥
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥२५॥
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु ।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥२६॥
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ।

प्रजापति ने अक्षमाला और ब्रह्मा ने कमण्डलु भेंट किया ॥ २३ ॥ सूर्य भगवान ने अपनी सम्पूर्ण किरणों से तेज निकालकर देवी के रोम-रोम में भर दिया । काल ने चमकती तलवार और ढाल दी ॥ २४ ॥ समुद्र ने उज्ज्वल हार तथा कभी जीर्ण न होने वाला दो वस्त्र भेंट किया । सुन्दर चूड़ामणि दी सुन्दर कुण्डल और एक गले में पहनने वाली हसुली दी ॥२५॥ सब बाहुओं के बाजू बन्द स्वच्छ नूपुर गरदन में पहनने का आभषण दिया ॥२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥२७॥
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥२८॥
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम् ।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥२९॥
ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥३०॥

तथा अंगुलियों में पहनने को रत्नजटित अंगूठी दी, विश्वकर्मा ने बहुत सुन्दर फरसा दिया ॥ २७ ॥ अनेक प्रकार के अस्त्र तथा अभेद्यकवच भी दिये । समुद्र ने मस्तक पर धारण करने वाला वक्षस्थल ( हृदय ) पर धारण करने वाला और कभी न कुम्हलाने वाली कमलों की मालाएं भी दीं ॥ २८ ॥ अति मनोहर कमल दिया । हिमालय ने सवारी के लिये सिंह तथा भांति-भांति के रत्न दिये ॥ २९ ॥ धन के मालिक कुबेर ने मधु से भरा कटोरा दिया । शेष ( नागेश ) ने जो पृथ्वी का भार-अपने ऊपर संभाले हैं उन्होंने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥३१॥
सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥३२॥
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत ।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥३३॥
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ।

बहुमूल्य मणियों से सुसज्जित हार भेंट किया ॥ ३० ॥ जो नागहार कहलाया और अन्य सभी देवताओं ने अनेक प्रकार के अस्त्र (आयुध) तथा आभूषण देवी को दिया ॥ ३१ ॥ सब देवों से आदर पाने से उच्चस्वर से अट्टहास सहित गर्जना की । उस गर्जन से आकाश भी गुंजायमान हो गया ॥ ३२ ॥ जिस शब्द का कहीं समावेश न हो सका वह प्रतिध्वनि के रूप में दुबारा सुनाई पड़ा जिससे सारा संसार विचलित होने लगा । और समुद्र काँप उठा ॥ ३३ ॥ पृथ्वी चलायमान होने लगी, पर्वत हिलने लगे । तब देवता प्रसन्न हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥३४॥
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥३५॥
संनद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥३६॥
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥३७॥

होकर सिंहवाहिनी ( सिंह पर सवार ) देवी को देखकर जय-जयकार करने लगे ॥ ३४ ॥ विनीत मुनिगण भक्ति सहित देवी की स्तुति करने लगे। ऐसा समस्त संसार को भयभीत देखकर ॥ ३५ ॥ राक्षसगण समस्त सेना को अस्त्र, कवच से सज्जित कर खड़े हो गये और महिषासुर क्रोध से बोला अहाः यह क्या हो रहा है ॥ ३६ ॥ महिषासुर सम्पूर्ण राक्षसों के मध्य हो देवी की गर्जन सुनकर ढूंढता हुवा चला वहाँ उसने सिंहवाहिनी देवी को देखा जो तीनों लोकों को अपनी प्रतिभा से व्याप्त कर रही थी ॥ ३७ ॥ देवी के पैर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पादाक्रान्त्यानतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् ।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥३८॥
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम् ।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥३९॥
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥४०॥
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ।

से आक्रान्त भूमि निचे दबी जा रही है। माथे के किरीट से जैसे आकाश उठा हो। धनुष की टंकार से पाताल भी भयभीत हो रहे थे ॥३८॥ अपनी सहस्र भुजाओं से दशो दिशाओं को आच्छादित कर देवी खड़ी हुई और राक्षसों के साथ युद्ध में प्रवृत्त हुई ॥ ३९ ॥ महिषासुर का सेनापति चिक्षुर महा बलवान था युद्ध करने लगा जिससे नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से युद्ध के मध्य में दिशाएँ मुक्त न रह सकीं ॥ ४० ॥ चामर नाम का महाअसुर भी अपने साथ चतुरंगिणी सेना लेकर देवी से युद्ध करने लगा और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥४१॥
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥४२॥
अयुतानां शतैः षड्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे ।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥४३॥
वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥४४॥

साठ हजार रथी सेना लेकर उदग्र नाम के राक्षस ने भी युद्ध आरंभ किया ॥४१॥ महाहनु नामक महा बलवान राक्षस एक करोड़ रथियों की सेना लेकर युद्ध करने लगा असिलोमा ( तलवार की नोक की तरह चुखीले रोएँ वाला ) नामक राक्षस ५० लाख रथ की पलटन साथ लेकर युद्ध में प्रवृत्त हुवा ॥ ४२ ॥ वाष्कल राक्षस भी साठ लाख सेना लेकर युद्ध करने लगा ॥४३॥ बिडालाख्य नामक दैत्य पचास लाख रथियों से घिरा हुवा युद्ध मैदान में युद्ध करने लगा ॥ ४४ ॥ और बहुत से दैत्य अयुत रथ-घोड़ा हाथी साथ में पैदल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥४५॥
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥४६॥
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥४७॥
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तिः केचित्पाशांस्तथापरे ॥४८॥

सेना लेकर लड़ने लगे ॥ ४५ ॥ राक्षस देवी के साथ कोटि कोटि सहस्र रथ हाथी तथा इतने ही ॥ ४६ ॥ घोड़ों के साथ महिषासुर संग्राम में उपस्थित हुवा राक्षस तोमर भिन्दिपाल शक्ति मूसल ॥ ४७ ॥ खड्ग पट्टिश आदि अनेक प्रकार के हथियारों से देवी के साथ युद्ध करने लगे। कोई दैत्य देवी के ऊपर शक्ति का प्रयोग करता था तथा कोई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ।
सापि देवि ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४९॥
लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ।
अनायस्तानना देवि स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥५०॥
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेशरी ॥५१॥
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ।

उनके ऊपर पाश फेकता था जिससे वह बंध जाय ॥ ४८ ॥ और कुछ दैत्य देवी के ऊपर तलवार से प्रहार करते थे जिससे देवी का बध हो जाय तब देवी ने अनेकों प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को ॥ ४९ ॥ साधारण ढंग से ही अपने शस्त्रास्त्रों से उनके शस्त्रास्त्रों के घर्षण को काट गिराया। तब देवों और ऋषियों ने देवी की स्तुति की ॥ ५० ॥ प्रसन्न मुखेश्वरी देवी राक्षसों पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करने लगीं देवी का वाहन सिंह भी क्रोध में भर कर गर्दन के बालों को हिलाता हुवा ॥ ५१ ॥ शत्रु सेना में ऐसा विचरने लगा जैसे वन में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥५२॥
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः ।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥५३॥
नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः ।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ॥५४॥
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥५५॥
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ।

दावानल फैलती हो। रणांगण में युद्ध करते समय देवी ने जितने स्वांस-प्रस्वांस छोड़े ॥ ५२ ॥ वे सब तत्काल सैकड़ों हजारों गणों के रूप में प्रकट हो गये वे भी युद्ध में फरसा भिन्दिपाल पट्टिश आदि हथियारों से असुरों का सामना करने लगे ॥ ५३ ॥ देवी की शक्ति से वृद्धि को प्राप्त हुए वे गण असुरों का नाश करते हुए नगाड़ा और शंख बजाने लगे ॥ ५४ ॥ कोई मृदंग बजाने लगा तब देवी ने अपनी गदा और त्रिशूल से शक्ति की वर्षा से ॥ ५५ ॥ तलवार से सैकड़ों महासुरों को मारा और बहुत से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥५६॥
असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥५७॥
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥५८॥
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥५९॥
श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ।

राक्षसों को घंटे की ध्वनि से मोहित कर मार दिया ॥ ५६ ॥ बहुत से दैत्यों का पाश में बांधकर धरती पर खींचा और मार दिया और कितनों को तलवार से दो टुकड़े कर दिया ॥ ५७ ॥ बहुत से गदा की चोट से मूछित हो गये और मर गये बहुत से मुसल की चोट से घायल हो मुंह से रक्त गिराने लगे ॥ ५८ ॥ कुछ राक्षस हृदय में त्रिशूल के वार से घायल हो पृथ्वी पर गिर गये बहुत से और कितने बाणों की वृष्टि से घायल हो गये ॥५५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥६०॥
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥६१॥
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥६२॥
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥६३॥

महिषासुर की सेना के यूथपति अपने २ प्राणों का मोह त्याग कर शरीर छोड़ने लगे और कितनों की बाहें कटगयीं कितनों की गर्दनें कट गई ॥ ६० ॥ कितनों के शिर कट गये और बहुत से राक्षसों के पेट फट गये कितनों की जाँघे कटीं और वे पृथ्वी पर गिर पड़े ॥ ६१ ॥ देवी ने कितने राक्षसों की एक बांह, आंख पैर नष्ट कर दिया तथा कितनों को बीच से दो टुकड़े कर दिया और कितनों को शिर काट कर गिर पड़ने पर उठने के बाद ॥ ६२ ॥ वेरुंड शरीर ( विना शिर के कवन्ध होकर ) परम आयुध लेकर देवी से लड़ते और दूसरे कबंध बाजे बजाने और नाचने लगे ॥६३॥ अन्य बड़े बड़े राक्षस जिनके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कवन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥६४॥
पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ।
अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥६५॥
शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।

शिर धड़ से कट कर अलग हो गये हाथों में खड्ग शक्ति और गदा लेकर दौड़ते थे और दूसरे महादैत्य देवी से ठहरो-ठहरो कहते हुए युद्ध के लिए ललकारते थे ॥ ६४ ॥ जहाँ यह युद्ध हुवा उस जगह रथ-हाथी घोड़े तथा राक्षसों के गिरने से पृथ्वी भर गई रास्ता निकलना दुलर्भ था ॥ ६५ ॥ राक्षसों की सेना के हाथी, घोड़े और असुरों के मरने से रक्त की नदी बह रही थी ॥ ६६ ॥ देवी ने क्षण मात्र में ही विशाल असुरों की सेना का नाश कर दिया जैसे अग्नि तृणादि को पल भर में राख बना देती है ॥ ६७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेशरः ।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥६८॥
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः ।
यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ॐ॥६९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देविमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ उवाच १॥ श्लोकाः ६८॥ मन्त्राः ६९॥ एवमादितः १७३ ॥ २ ॥

देवीवाहन सिंह भी अपने गर्दन के बालों को हिलाता हुवा जोर-जोर से गर्जन करता दैत्यों के प्राण नष्ट करता था ॥ ६८ ॥ तब देवीगणों ने भी उन महादैत्यों के साथ ऐसा युद्ध किया जिससे देवतागण उन पर आकाश से पुष्पवृष्टि करने लगे ॥ ६९ ॥

॥ श्री देवी माहात्म्येः महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# तृतीयोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

ध्यानम्—महामाया जगदम्बा की कान्ति प्रातःकालीन उदय होते हुए सहस्रों सूर्य के समान है। वे लाल रंग की रेशमी साड़ी पहने हैं, गले में मुण्डमाला पहिने हैं। रक्त चन्दन का लेप लगा है, जपमालिका अपने कर कमलों में, विद्या, अभय तथा वरद मुद्राएँ धारण किये हैं। तीनों नेत्रों से—सुशोभित कमलवत मुंह रत्नों से जटित अर्धचन्द्रमा सहित मुकुट धारण किये हुए अपने हृदय कमल में बैठी देवी का. ध्यान करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ।
सैनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ २ ॥
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ३ ॥
तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ।

ऋषि बोले—जब दैत्यों के सेनापति चिक्षुर ने देखा हमारी सेना का तहस-नहस हो रहा है तब वह देवी से युद्ध के लिए चला ॥ २ ॥ वह चिक्षुर देवी के ऊपर इस प्रकार बाणों की वर्षा करने लगा जिस प्रकार सुमेरु पर्वत पर मेघ पानी की धार वर्षाता हो ॥ ३ ॥ तब देवी ने सावधानी के साथ उसके रथ के घोड़ों और सारथि को मार दिया और उनके बाणों की वर्षा को काट दिया ॥ ४ ॥ साथ ही उसके धनुष तथा ध्वजा को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥
सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७ ॥
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ८ ॥
चिक्षेप च ततस्तच्च भद्रकाल्यां महासुरः ।

भी काट दिया। फिर उस चिक्षुर को बाणों की वर्षा कर उसका शरीर बींध दिया ॥ ५ ॥ धनुष, रथ, घोड़े, सारथि के नाश हो जाने पर वह राक्षस ढाल, तलवार ले देवी से लड़ने को दौड़ा ॥ ६ ॥ उस दैत्य ने बड़े वेग से देवी के वाहन सिंह के मस्तक पर प्रहार कर देवी की वाम भुजा पर भी प्रहार किया ॥ ७ ॥ उसका खड्ग देवी की भुजा पर लग कर टूट गया और तब क्रोधित हो लाल नेत्र वाले राक्षस ने त्रिशूल हाथ में लिया ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥१०॥
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥११॥
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ।
हुंकाराभिहता भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥१२॥

उस त्रिशूल को उस दैत्य ने भगवति भद्रकाली के ऊपर फेंका वह आकाश से गिरते हुए सूर्य मण्डल की भांति अपने तेज से आप ही प्रज्वलित हो गया ॥ ९ ॥ तथा उस शूल को अपनी ओर आते देख कर देवी ने भी अपने शूल से प्रहार किया जिससे राक्षस के शूल साथ ही साथ उस चिक्षुर राक्षस के भी सैकड़ों टुकड़े हो गये ॥ १० ॥ चिक्षुर के मारे जाने पर महिषासुर की सेना का अधिपति बना चामर नामक दैत्य हाथी पर चढ़ कर देवी से लड़ने संग्राम भूमि में आया ॥ ११ ॥ उस चामर ने देवी के ऊपर शक्ति का प्रहार किया-परन्तु जगदम्बा ने अपनी हुंकार से ही पृथ्वी पर गिरा दिया ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥१३॥
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः ।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥१४॥
युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥१५॥
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥१६॥

चामर ने अपनी शक्ति को भस्म हो नीचे गिरा देख कर कुपित हो शूल चलाया—देवी ने उसको भी बाणवृष्टि कर काट दिया ॥ १३ ॥ उस समय देवी वाहन सिंह उछल कर हाथी के मस्तक पर बैठ कर चामर राक्षस से मल्लयुद्ध करने लगा ॥ १४ ॥ वे दोनों लड़ते २ हाथी से पृथ्वी पर आ गये और क्रोध में भर पूर एक दूसरे के ऊपर भयंकर-प्रहार करने लगे । तब ॥ १५ ॥ उस सिंह ने उछल कर हाथ के थप्पड़ से मार कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१७॥
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥१८॥
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् ।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१९॥
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः ।

चामर का शिर धड़ से अलग कर दिया ॥ १६ ॥ इसी प्रकार देवी ने उदग्र राक्षस को पत्थर की शिला और पेड़ों की वृष्टि करके मार दिया । कराल नाम के राक्षस को दांत तथा मुक्कों की मार से मार डाला ॥ १७ ॥ क्रोध में भरी देवी ने गदा की चोट से उद्धतो का पंजर निकाल दिया । भिन्दिपाल से वाष्कल को तथा बाणों से ताम्र और अन्धक की मौत बुला दिया ॥ १८ ॥ त्रिनेत्रा परमेश्वरी ने त्रिशूल से उग्रास्य, उग्रवीर्य तथा महाहनु राक्षस को मार दिया ॥ १९ ॥ खड्ग से विडाल का मस्तक काट गिराया । दुर्धर-दुर्मुख-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥२०॥
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥२१॥
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान् ।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्॥२२॥
वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले ॥२३॥
निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ।

को भी अपने बाणों से मृत्यु की गोद में पहुँचाया ॥ २० ॥ महिषासुर अपनी सेना का इस प्रकार संहार होते हुए देख भैसे के रूप में देवी के गणों को त्रास देने लगा ॥ २१ ॥ कतनों को अपने मुंह के अग्रभाग से मारता था, किसी को खुरों से मारता किसी को पूंछ से चोट पहुँचाता और किसी को अपने भयंकर सींगों से मारता था ॥ २२ ॥ कुछ को धक्के से किसी को जोर की आवाज से, किसी को चक्कर देकर कितनों को अपने श्वास की वायु से धराशायी करता रहा ॥ २३ ॥ देवी के गणों को गिराता हुआ वह महिषासुर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सिंहं हन्तुं महादेव्या कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥२४॥
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥२५॥
वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥२६॥
धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥२७॥

देवी के वाहन सिंह को मारने के लिए दौड़ा और भगवती ने क्रोध किया ॥ २४ ॥ महावीर पराक्रमी राक्षस महिषासुर भी क्रोध कर अपने खुरों से पृथ्वी को खोदता हुआ सींगों से बड़े-बड़े पहाड़ों को गिरा गर्जन करने लगा ॥ २५ ॥ उसके वेग से घूमने से पृथ्वी फटने लगी तथा पूँछ की फटकार सें समुद्र धरती को डुबाने लगा ॥२६॥ सींग को हिलाने वाली चोटों से बादल के टुकड़े-टुकड़े हो गये तथा स्वास की प्रचण्ड वेगबायुवों से उड़े हुए पहाड़ आकाश से गिरने लगे ॥ २७ ॥ इस प्रकार महिषासुर को क्रोध से भरा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम् ।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाऽकरोत् ॥२८॥
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥२९॥
ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥३०॥
ततः एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ।
तं खड्गचर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥३१॥

अपनी ओर आते देखकर चण्डिका ने उसका वध करने के लिए महत क्रोध किया ॥२८॥ तब देवी ने पाश फेंककर महिषासुर को बांध लिया। बँध जाने पर राक्षस ने अपने भैंस का रूप त्याग दिया ॥ २९ ॥ और सिंह के रूप में प्रकट हो गया तब जगदम्बा ने ज्योंहि उसका शिर काटा त्यों ही वह राक्षस खड्गधारी पुरुष के समान हो गया ॥३०॥ देवी ने तत्काल ही ढाल-तलवारधारी राक्षस को मारा तब वह महिषासुर हाथी बन गया ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥३२॥
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥३३॥
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥३४॥
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥३५॥

और अपने सूंड से देवी के सिंह को खींचने और गर्जने लगा तब देवी ने उसका सूँड तलवार से काट दिया ॥ ३२ ॥ तब दैत्य ने पुनः भैंसे का रूप धारण किया पहले की तरह-चराचर प्राणियों सहित तीनों लोकों को भयभीत करने लगा ॥ ३३ ॥ तब क्रोधित जगन्माता चंडिका बारबार उत्तम मधु का पान करने लगी। उसके पीने से रक्त नेत्र करके हंसने लगी ॥ ३४ ॥ अब बली पराक्रमी महिषासु देवी के ऊपर सींगों से गर्जन के साथ पहाड़ों के खण्डों को फेंकने लगा ॥ ३५ ॥ तब देवी ने राक्षस के फेंके पहाड़ों को बाणवृष्टि करके चूर्ण-चूर्ण कर दिया और बोली जिससे उनका मुख मधु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥३६॥

देव्युवाच ॥ ३७ ॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥३८॥

ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥४०॥
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः ।

मद से लाल हो गया तथा अक्षर भी मुंह से साफ नहीं निकलते थे ॥ ३६ ॥ देवी बोली—ओ मूढ़ जब तक मधु पी रही हूँ जब तक क्षणमात्र खूब गर्जले-गर्जले, मैं तुझे बहुत शीघ्र ही इस युद्ध में मारूँगी तब सब देव लोग गर्जन करेंगे ॥३७-३८॥ मेधा ऋषि बोले—इतना कह देवी उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़गई और अपने पैर से उसको दबा दिया तब त्रिशूल से उसके कण्ठ पर शूल से आघात किया ॥३०-४०॥ और वह अपने मुखसे दूसरे रूपसे बाहर होने लगा आधे शरीर से बाहर निकलने पाया था कि देवी ने उसे अपने प्रभाव के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥४१॥
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥४२॥
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥४३॥
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरो गणाः ॥४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
उवाच ३। श्लोकाः ४१ ॥ मंत्राः ४४ ॥ एवमादितः ॥ २१७ ॥ ३ ॥

वशीभूत कर दिया ॥४१॥ वह अपने भैंसे के स्वरूप से आधा निकलकर देवी से युद्ध करने लगा तब देवी ने तलवार से उसका मस्तक काट गिराया। ॥ ४२ ॥ शिर कटने पर सारी राक्षसी सैना हाहाकार करके नाश हो गई। तथा सम्पूर्ण देवतागण प्रसन्न हो गये। ॥४३॥ देवताओं ने महर्षियों के साथ महादेवी की स्तुति की तथा गन्धर्व लोग गाने और अप्सराएँ नाचने लगीं ॥ ४४ ॥

श्री देवि माहात्म्ये महिषासुरबधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपतिनुतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

ध्यानम्—इन्द्रादिक सभी देवता जिस जया नामवाली दुर्गा की स्तुति व ध्यान करके सिद्धि को प्राप्त होते हैं वह देवि काले बादलों के समान शरीर की कान्ति मात्र से ही शत्रुओं को तथा उनके कुल को भय देती हैं तथा उनके बंधे हुए बालों के जूड़े पर बालचन्द्रमा सुशोभित है तथा उनके हाथों में शंख-चक्र-कृपाण-त्रिशूल है और वह त्रिनेत्रा देवि सिंह के ऊपर बैठी हुई तीनों लोकों का अपने तेज से पूर्ण करती हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥२॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥३॥

ऋषि ने कहा—भगवती दुर्गा द्वारा महापराक्रमी महिषासुर तथा सम्पूर्ण सेना का नाश होने से इन्द्रादि सभी देवता मीठे वचनों से भगवती की स्तुति रोमांचित हो करने लगे ॥ २ ॥ जिसने संसार को अपनी शक्ति से बनाया है निश्चय संपूर्ण देवताओं के तेजसमूह की मूर्ति हैं जो सम्पूर्ण देवता और ऋषियों द्वारा पूजने योग्य हैं। उस अम्बिका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥४॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥

देवि को हम भक्ति पूर्वक प्रणाम करते हैं । वह हम सबका कल्याण करे ॥ ३ ॥ जिसके प्रभाव का वर्णन करने में भगवान शेषनाग-ब्रह्मा-शिव भी असमर्थ हैं वे चण्डि देवी समस्त संसार का पालन करती हैं तथा भय और अशुभ का नाश करती हैं ॥ ४ ॥ पुण्यात्माओं के यहां तुम लक्ष्मीरूप से पापात्माओं के यहाँ दरिद्रा रूप में शुद्धआत्माओं के हृदय में बुद्धिरूप से सच्चरित्र के यहाँ तुम श्रद्धा के रूप में तथा शुद्ध वंशोत्पन्नो के यहाँ लज्जा स्वरूप हो कर निवास करती हो ऐसी सम्पूर्ण रूप से विचरने वाली देवी को हम सब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥

नमस्कार करते हैं ॥ ५ ॥ हे भगवती ! अपने अचिन्त्य स्वरूप का महिषासुरादि राक्षसों के नाश का अतुल पराक्रम का पुनः रजनीचर और देवताओं के संग्राम में आपके अद्भुत व्यवहारों का वर्णन किस तरह करें ॥ ६ ॥ हे महादेवी ! आप अधिकारी आद्या प्रकृति हो सत्व, रज, तमोगुणात्मक होते हुए भी तुम संसार के लिये सम्पूर्ण पदार्थों की अधिष्ठाता हो और किसी भी दोष से तुम्हारा साथ नहीं है यह जगत तुम्हारा ही अंश है ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता च
अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमाहि देवि ॥ ९ ॥

हे देवि ! सम्पूर्ण यज्ञों में मंत्र स्वरूपा हो, हवि ग्रहण करने में स्वाहा हो। तुम्हारे ही द्वारा सब देवता, ऋषि, पितृगण तृप्त होते हैं, इसी से तुम इनको तृप्त करने वाली स्वाहा और स्वधा नाम से पुकारी जाती हो ॥ ८॥–हे देवि ! तुम्हारी मोक्षवाली वृहत उपासना का केवल चिन्तन करने से मालूम नहीं होता। इन्द्रियों को दमन कर सब तत्वों का सार जानते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिए निर्दोष मुनि ही तुमको मुक्ति का हेतु जान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
देवीत्रयी भगवती भवभावनाय
वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १० ॥
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥

निरन्तर तुम्हारा ही स्तवन करते हैं। तुम भगवती हो। सर्वश्रेष्ठ परा विद्या हो ॥ ९ ॥— हे देवि! तुम शब्दात्मिका तीनों वेदों की मूर्ति ओंकार सहित निर्मल-ऋग-यजु-साम की आश्रय रूपा हो। वेदमाता हो। सब ऐश्वर्य से युक्त हो। तुम संसार की जीवनी शक्ति हो ॥१०॥ हे देवि ? समस्त शास्त्रों के तत्व को जानने के लिये मेधाशक्ति तुम्हीं हो। दुर्गम भवसागर को पार करने के लिये नौका रूपी दुर्गा तुम्हीं हो। हे देवि तुम मधु-कैटभादि राक्षसों का बध करने वाली। नारायण के हृदय में एकाकी वास करने वाली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥१२॥
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१३॥

लक्ष्मी देवि तुम्ही हो। महादेव की गौरी तुम्ही हो ॥ ११ ॥ हे देवि! महिषासुर के अस्त्र से पीड़ित होते हुए क्रोधित होते हुए भी तुम्हारा मुस्कुराता कमलवत मुख निर्मलपूर्ण चन्द्र के बिम्ब का अनुकरणीय सुवर्ण के समान सुशोभित मन को हरण करने वाला है यह बहुत आश्चर्य है ॥ १२ ॥ तुम्हारे क्रोध से क्रोधित होने पर भौंहे चन्द्रमा के उदयकालीन छवि को समान देखने पर महिषासुर के प्राण तुरन्त नहीं निकल गये यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्
नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥

बड़े आश्चर्य की बात है क्योंकि क्रोधित यमराज को देख कर कौन जीवित रह सकता है ॥१३॥ हे देवि! तुम परमात्मा स्वरूपा हो प्रसन्न हो जाओ क्रोधित होने पर कितने ही कुलों का आप नाश कर देती हैं यह अभी अनुभव हुआ है—जैसे महिषासुर सहित उसकी विशाल सेना नाश को प्राप्त हुई ॥ १४ ॥ सर्वदा अभ्युदय देने वाली आप जिस पर प्रसन्न रहती हैं। वे ही सर्वत्र सम्मानित हैं उन्हीं को धन, यश, धर्म होता है वे कष्ट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१६॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥१७॥

नहीं पाते हैं। वेही पुरुष धन्य हैं जिन्हें स्त्री-पुत्र सेवक आदि उद्वेगहीन होते हैं ॥ १५ ॥ हे देवि ! आपकी कृपा से धर्मात्मा मनुष्य प्रतिदिन श्रद्धा-भक्ति से धर्मानुष्ठान करता रहता है तथा मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग का अधिकारी होता है। इसलिए आप तीनों लोकों में निश्चय ही मनोवांछितफलदात्री हैं ॥ १६ ॥ हे दुर्गे ! आपका स्मरण करने से सब प्राणियों का भय आप ही दूर करती हैं अच्छी अवस्था में स्मरणीय होने पर उन्हें सर्वदा आनन्दित करती हो सद्बुद्धि देती हो। हे दरिद्रतारूपी दुःखको नष्ट करने वाली देवि ! सब पुरुषों के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१८॥
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥१९॥

कल्याण की एक मात्र साध्या तुम्हीं हो। दूसरा कोई नहीं ॥ १७ ॥ हे देवि ! इन सब निशाचरों के मारने से संसार सुखी हो ये राक्षस अनन्त समय तक नरकगामी रहें ऐसे कार्य करते रहें फिर भी आपके द्वारा युद्ध में मारे जाने पर स्वर्ग को ही जांय ऐसा आप विचार कर उन राक्षसां का वध करती हैं ॥ १८ ॥ आप तो शत्रुओं को दृष्टि मात्र से ही भस्म कर सकती थीं तब आपने उनपर शस्त्र क्यों चलाये—इसमें क्या रहस्य है—वह यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु खण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२१॥

है कि मेरे शस्त्रों से मारे जाने पर ये राक्षस स्वर्गगामी हों ऐसा आपका विचार परमोत्तम रहा है ॥ १९ ॥ हे देवि ! तुम्हारे चन्द्रमा के समान शीतल किरणों वाले मुंह का दर्शन करने से—आपके खड्ग और त्रिशूल के नोक की प्रभा से महिषासुर राक्षसों की आँख नहीं फूटी ॥ २० ॥ हे देवि दुराचारियों के सदाचार में बदलने वाला आपका शील है । आपका रूप ऐसा है जिसका चिन्तन कभी नहीं आ सकता है तथा उसकी किसी से तुलना भी नही की जा सकती है देवताओं के पराक्रम की वृद्धि करने वाली राक्षसों के परा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२२॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-

क्रम का ह्रास करने वाली आपने राक्षसों पर दयाभाव प्रकट किया है यह सत्य है ॥ २१ ॥ हे देवि! तुम्हारे समान त्रिभवन में वर देने वाली कोई नहीं है आपके समान किसी का पराक्रम भी किसी में नही है जिसकी उपमा दी जाय। मनोहर रूप होते हुए भी आप युद्ध में शत्रुओं का संहार करने वाली हैं ऐसा और दूसरा कोई नहीं है ॥ २२ ॥ हे देवि! आपको नमस्कार है—आपने महिषासुरादि राक्षसों को मारकर त्रिभुवन की रक्षाकी तथा उन्हें भी स्वर्ग पहुँचा दिया। उन्मत्त दैत्यों द्वारा जो हम लोगों को भय था उसको भी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मस्माकमुन्दमदसुरारिभवं नमस्ते ॥२३॥
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥२४॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२५॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२६॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।

आपने दूर किया ॥ २३ ॥ हे देवि ! आप अपने त्रिशूल से, अपनी तलवार से, अपने घण्टे की आवाज से तथा धनुष के प्रत्यंचा की झनकार से हमारी रक्षा करो ॥ २४ ॥ हे देवि !—हे ईश्वरी ! आप हम लोगों की पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशा में अपने त्रिशूल को घुमा घुमाकर रक्षा करो ॥ २५ ॥ हे देवि ! आपका सुहावना और डरावना रूप तीनों लोकों में विचरण करता है । आप इन्हीं रूपों से हमारी रक्षा करो ॥ २६ ॥ हे देवि !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥

ऋषिरुवाच ॥ २८ ॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२९॥
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता ।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान् सुरान् ॥३०॥

देव्युवाच ॥ ३१ ॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥३२॥

आपके करकमलों में जो खड्ग-त्रिशूल और गदा आदि जो जो अस्त्र हैं उनसे आप हमारी रक्षा करें ॥ २७ ॥ ऋषि ने कहा—देवताओं से इस प्रकार स्तुति की जाने पर तथा नन्दन-बनी फूलों और धूपादि से पूजित होने पर महादेवि ॥ २९ ॥ प्रसन्नमुखी देवि ने स्तुति करते हुए देवताओं से कहा ॥ ३० ॥ देवि ने कहा—हे देवताओं तुम लोग जो चाहो सो वर मांगो ॥ ३२ ॥ देवताओं ने कहा—हे भगवति ! आपने सब कुछ कर दिया अब कुछ शेष नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥३४॥
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥३५॥
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥३६॥
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥३७॥

रहा है ॥३४॥ हे देवि ! हमारा प्रबल शत्रु महिषासुर आपके द्वारा मारा गया अब आप और वर देना चाहती हैं तो ॥३५॥ हे देवि ! इस स्तुति से विपत्ति में जब कभी आपका स्मरण हम करें तब आप हमारी विपत्ति का नाश करना—हे कमलानने ! जो तुम्हारा ध्यान करे । उसे—॥ ३६ ॥ हे अम्बिके ! आप सर्वदा—वित्त, पराक्रम, धन, स्त्री, पुत्रादि सम्पदाओं से वृद्धि करती रहे आपमें सब सामर्थ्य है ॥ ३७ ॥ ऋषि ने कहा—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः ।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥३९॥
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा ।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥४०॥
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत् ।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥४१॥

हे राजा सुरथ ! जब भद्रकाली की स्तुति कर देवताओं ने उन्हें प्रसन्न किया तब तथास्तु (वर बचन) देकर अन्तर्ध्यान हो गई ॥३९॥ हे भूपति राजा सुरथ–इस तरह तीनों लोकों का हित करनेवाली देवी सम्पूर्ण देवताओं के तेज से प्रकट हुई थी—वही कथा मैंने तुमसे सुनाई ॥ ४० ॥ फिर जिस प्रकार गौरी देवी के शरीर से दुष्ट राक्षसों तथा शुंभ-निशुंभ-राक्षस का वध करने के लिये आपका प्रादुर्भाव हुवा ॥४१॥ देवताओं का उपकार करने-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते॥ह्रीं ॐ॥४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥
उवाच ५ ॥ अर्धश्लोक २ ॥ श्लोकाः ३५ ॥ एवम् ४२ ॥ एवमादितः २५९ ॥

—:—

वाली, संसार का रक्षण करने वाली किस तरह उत्पन्न हुई सो ठीक-ठीक मैं कहता हूं। सुनो ॥ ४२ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देविमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नामचतुर्थो-
ऽध्यायः॥ उवाच ५, अर्द्ध २ श्लोका ३५ ॥ मंत्र ४२ ॥ एवमादितं २५९ ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# पञ्चमोऽध्यायः

विनियोगः-

ॐ अस्य श्रीउत्तमचरित्रस्य रुद्रऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तमचरित्रपाठे विनियोगः।

ध्यानम्—

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।

विनियोग:—ॐ इस उत्तम चरित्र के रुद्रऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द: है, भीमा शक्ति है, भ्रामरी बीज है, सूर्यतत्व है, सामवेद स्वरूप है, महासरस्वती की प्रीति के लिये उत्तमचरित्र के पाठ का विनियोग करता हूँ।

ध्यानम्—देवी अपने कमलवत हाथों में क्रमश: घण्टा, त्रिशूल-हल, मुसल, चक्र, धनुष और बाण धारण किये हैं। शरदपूर्णिमा के चन्द्र के समान शीतल सुन्दर मुख की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २ ॥
तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ३ ॥

कान्ति वाले चन्द्रमा के समान पार्वती के शरीर से उत्पन्न महासरस्वती देवी का मैं निरन्तर भजन करता हूँ जो शुम्भादि दैत्यों का नाश करती हैं।

ऋषि ने कहा—पहले शुम्भ और निशुंभ नाम के असुरों ने अपने बल और पराक्रम से देवताओं के राजा इन्द्र से उसका राज्य तथा यज्ञ का भाग छीन लिया ॥ १-२ ॥ वे दोनों राक्षस शुंभ-निशुंभ, सूर्य, चन्द्र, कुबेर, वरुणादि के अधिकार का सभी कार्य करने लगे ॥ ३ ॥ वही, वायु, अग्नि का कार्य करने लगे तथा अपने राज्य के छिन जाने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ५ ॥
तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः ।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६ ॥
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७ ॥

से राज्यहीन ॥ ४ ॥ पराजित स्वर्ग से निकले देवता अपराजिता देवी का चिन्तन करने लगे ॥ ५ ॥ और विचार करने लगे कि जिस देवी ने हमें वर दिया था, कहा था कि स्मरण करने पर मैं तुम्हारा दुःख दूर कर दूँगी ॥ ६ ॥ ऐसा विचार कर सब देवतागण हिमालय पहाड़ पर खड़े हो विष्णुमाया भगवती की स्तुति करने लगे ॥ ७ ॥ देवताओं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवा ऊचुः ॥ ८ ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम् ॥ ९ ॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥१०॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥११॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।

ने कहा—देवी को नमस्कार है शिवा को सैकड़ों बार नमस्कार है। प्रकृति को नमस्कार, भद्रादेवी को नमस्कार सर्वदा नमस्कार है ॥ ८-९ ॥ रौद्ररूपी देवी, नित्या देवी, गौरी देवी एवं धात्री देवी को बारम्बार नमस्कार है। ज्योत्स्ना रूपी चन्द्र किरण की तरह रूपवाली सुखस्वरूपा देवी को नमस्कार है ॥१०॥ कल्याणी वृद्धिरूपा, सिद्धिरूपा, नैर्ऋता देवी, लक्ष्मीस्वरूपा शर्वाणि देवी को बारम्बार नमस्कार हैं ॥ ११ ॥ दुर्गा, दुर्गपारा, सारा,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१२॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै ।१४। नमस्तस्यै ।१५। नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै ।१७। नमस्तस्यै ।१८। नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।

सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रा देवि को सैकड़ों बार नमस्कार है ॥ १२ ॥ अति सौम्या, अति रौद्रा देवी को बार-बार नमस्कार है । जगत्प्रतिष्ठा ( जगत की आधारभूता, प्रतिष्ठा करने वाली ) देवी को बार-बार नमस्कार है ॥ १३ ॥ जो विष्णुमाया के नाम से सब प्राणियों में कही जाती हैं उनको नमस्कार है नमस्कार है नमस्कार हैं ॥ १४-१६ ॥ जो चेतनाशक्ति नाम से सब में कही जाती है उनको नमस्कार हैं ३॥१७-१९॥ जो बुद्धिरूप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तस्यै ।२०। नमस्तस्यै ।२१। नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।२३। नमस्तस्यै ।२४। नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।२६। नमस्तस्यै ।२७। नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।२९। नमस्तस्यै ।३०। नमस्तस्यै नमो नमः ॥३१॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।३२। नमस्तस्यै ।३३। नमस्तस्यै नमो नमः ॥३४॥

से सब में कही जाती हैं उनको नमस्कार है ३ ॥२०–२२॥ जो निद्रारूप से सब में कही जाती हैं उनको नमस्कार है ३ ॥२३–२५॥ जो क्षुधा रूप से सब में कही जाती हैं उनको नमस्कार है ३ ॥२६–२८॥ जो छायारूप से सब में कही जाती हैं उनको नमस्कार है ३ ॥२९–३१॥ जो शक्ति रूपसे सब में कही जाती है उनको नमस्कार है ३।–३२–३४ जो तृष्णा रूप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।३५। नमस्तस्यै ।३६। नमस्तस्यै नमो नमः ॥३७॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।३८। नमस्तस्यै ।३९। नमस्तस्यैं नमो नमः ॥४०॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।४१। नमस्तस्यैं ।४२। नमस्तस्यै नमो नमः ॥४३॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ।४४। नमस्तस्यै ।४५। नमस्तस्यै नमो नमः ॥४६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।

से सबमें विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३॥३५–३७॥ जो शान्ति रूप से सबमें कहीं जाती है उनको नमस्कार है ३ ॥३८–४०॥ जो जातिरूप से सबमें विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३ ॥४१–४३॥ जो लज्जारूपसे सबमें विद्यमान उन्हें हमारा प्रणाम है ३॥४४–४६॥ जो शान्तिरूप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तस्यै ।४७। नमस्तस्यै ।४८। नमस्तस्यै नमो नमः ॥४९॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।५०। नमस्तस्यै ।५१। नमस्तस्यै नमो नमः ॥५२॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।५३। नमस्तस्यै ।५४। नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।५६। नमस्तस्यै ।५७। नमस्तस्यै नमो नमः ॥५८॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।५९। नमस्तस्यै ।६०। नमस्तस्यै नमो नमः ॥६१॥

से सबमें स्थित हैं उनको नमस्कार हैं ३॥४७–४९॥ जो श्रद्धारूप से सबमें स्थित हैं उनको नमस्कार है ३ ॥५०–५२॥ जो क्रान्तिरूप से सबमें विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३॥५३-५५॥जो लक्ष्मीरूप से सबके यहां विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३ ॥५६–५८॥ जो वृत्ति रूप से सब में विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३ ॥५९–६१॥ जो स्मृतिरूप से सबमें विद्यमान हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।६२। नमस्तस्यै ।६३। नमस्तस्यै नमो नमः ॥६४॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।६५। नमस्तस्यै ।६६। नमस्तस्यै नमो नमः ॥६७॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।६८। नमस्तस्यै ।६९। नमस्तस्यै नमो नमः ॥७०॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ।७१। नमस्तस्यै ।७२। नमस्तस्यै नमो नमः ॥७३॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।

उनको नमस्कार है ३ ॥६२–६४॥ जो दया रूप से सबमें विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३ ॥६५–६७॥ जो तुष्टि रूप से सबमें विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३॥६८–७०॥ जो मातृ रूप से सबमें विद्यमान हैं उनको नमस्कार है ३॥७१–७३॥ जो भ्रांति रूप से सबमें विद्यमान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तस्यै ।७४। नमस्तस्यै ।७५। नमस्तस्यै नमो नमः ॥७६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥७७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
नमस्तस्यै ।७८। नमस्तस्यै ।७९। नमस्तस्यै नमो नमः ॥८०॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८१॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।

हैं उनको नमस्कार है ३॥७४-७६॥ जो व्याप्त रूप से सब जीवों की इन्द्रियों में व्याप्त रहती हैं उनको नमस्कार है ॥७७॥ जो चैतन्य रूप से सब जगत में व्याप्त हैं उनको नमस्कार है ३ ॥७८-८०॥ प्रथम अपना इच्छित वर प्राप्ति के लिए हम (देवों) ने जिसकी स्तुति की थी, तथा इन्द्र ने बहुत काल तक जिसकी पूजा की थी जो देवी सर्वमंगला है वही देवी हम सबका कल्याण करें ॥८१॥ असुरों द्वारा दुःखी होकर आपकी शरण में आए हैं तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥८२॥

ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥८४॥
साऽब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥८५॥
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ।
देवैः समस्तैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥८६॥

नम्रता पूर्वक हम देवगण जिसका ध्यान करते हैं वही देवी हमारी विपत्तियों का तत्काल नाश करें ॥८२॥ ऋषि ने कहा—हे राजा ! इस स्तुति को सुन देवी देवताओं के सामने गंगा में स्नान करने आई ॥ ८४ ॥ उस समय पार्वती के शरीर से उत्पन्न हुई शिवा ने देवताओं से पूछा तुम किसकी स्तुति कर रहे हो ॥ ८५ ॥ तब शिवा बोली यह सब देवता राक्षसों से तिरस्कृत और युद्ध में पराजित होकर यहां एकत्र होकर मेरी ही स्तुति कर रहे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका ।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥८७॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती ।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥८८॥
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥८९॥
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा ।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥९०॥

हैं ॥ ८६ ॥ पार्वती के शरीर से अम्बिका देवि का प्रादुर्भाव हुआ इस कारण वह समस्त संसार में कौशिकी कहलाई ॥ ८७ ॥ कौशिकी के प्रकट होने के बाद पार्वती देवी का शरीर काले रंग का हो गया तब वे हिमालय पर रहने वाली कालिका देवि के नाम से कही जाने लगीं ॥ ८८ ॥ तब शुंभ-निशुंभ के नौकर चण्ड-मुण्ड अत्यन्त मनोहर रूप धारण करने वाली अम्बिका देवी के पास आये और उन्हें देखा ॥ ८९ ॥ उन दोनों नौकरों ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥९१॥
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥९२॥
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥९३॥
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ।

शुंभ से जाकर कहा कि हिमालय पहाड़ पर अत्यन्त सुन्दर स्त्री बैठी है ॥ ९० ॥ हे दैत्यैश्वर ! ऐसी सुन्दर स्त्री कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी । आप पता लगाइये वह स्त्री किसकी है, कौन है पकड़ लीजिये ॥९१॥ हे दैत्यराज ! वह स्त्री रत्न हैं उसके अंग प्रत्यंग बहुत सुन्दर हैं जिससे सम्पूर्ण दिशाएं भी शोभा को प्राप्त हो रही हैं वह अभी भी हिमालय पहाड़ पर स्थित है आप देखें ॥ ९२ ॥ हे दैत्यराज ! आपके घर में सब प्रकार के मणि रत्न, रथ, घोड़ा, हाथी हैं जो तीनों लोकों में दुर्लभ हो गये ॥९३॥ इन्द्र का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥९४॥
विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥९५॥
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥९६॥
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति ।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥९७॥
मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ।

ऐरावत हाथी जो सब हाथियों में श्रेष्ठ है आपके पास है पारिजात वृक्ष और उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा यह भी आपने उससे छीन लिया है ॥ ९४ ॥ आपके पास रत्नों से जड़ा ब्रह्मा का विमान जिसके वाहन हंस है आपके पास है ॥ ९५ ॥ कुबेर से महापद्मनिधि छीन लाये हैं तथा समुद्र ने किंजिल्किनी नाम की माला भेंट की है ॥ ९६ ॥ वरुण का छत्र जो सुवर्ण की वर्षा करता है वह आपके पास है तथा प्रजापति का सर्वश्रेष्ठ रथ अब आपके पास है ॥९७॥ हे दैत्यराज ! आपने यमराज से उत्क्रान्तिदा नामकी शक्ति छीन ली है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥९८॥
निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ।
वह्निश्चापि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥९९॥
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समन्तान्याहृतानि ते ।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥१००॥

ऋषिरुवाच ॥ १०१ ॥

निशम्येति वचः शुम्भःस तदा चण्डमुण्डयोः ।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥१०२॥

आपके भाई निशुंभ ने पाश भी वरुण से छीन लिया है ॥ ९८ ॥ और निशुम्भ ने समुद्र में पैदा होने वाले सभी रत्न अपने अधिकार में कर लिये हैं । अग्नि देव ने भी दो वस्त्र आपकी सेवा में भेंट किये हैं ॥ ९९ ॥ हे दैत्यराज ! जब सभी प्रकार के रत्न आपने अपने अधिकार में कर लिये हैं तब स्त्रियों में सर्वसुन्दरी पर्वत पर स्थित कल्याणमयी देवि को क्यों नहीं अपने यहां लाते ॥ १०० ॥ ऋषि ने कहा—चण्ड-मुण्ड का वचन सुनकर शुम्भ ने महादैत्य सुग्रीव को दूत बनाकर देवी के पास कहला भेजा ॥ १०२ ॥ कहा—कि देवी से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥१०३॥
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥१०४॥

दूत उवाच ॥ १०५ ॥

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥१०६॥
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ।

तुम ऐसी बात कहना जिससे देवी प्रसन्न होकर मेरे पास आ जाय ॥१०३॥ दूत सुन्दर पर्वत स्थित देवी के पास गया और अत्यन्त मधुर .व कोमल वाणी से बोला ॥ १०४ ॥ दूत ने कहा—हे देवि ! इस समय तीनों लोकों के अधिपति दैत्यराज शुम्भ हैं उन्हीं का भेजा हुआ दूत मैं आया हूँ ॥ १०६ ॥ उन्होंने सम्पूर्ण देवताओं को युद्ध में परास्त कर दिया है इस कारण उनकी आज्ञा का उल्लंघन बिना किये समस्त देव उनकी आज्ञा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥१०७॥
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥१०८॥
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम् ॥१०९॥
क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥११०॥
यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।

मानते हैं। उनका तुम्हारे लिये यह संदेश है सुनो ॥ १०७ ॥ त्रिलोकी का राजा मैं हूँ देवताओं का मैं अधिष्ठाता हूँ तथा यज्ञों का पृथक् २ भाग मैं ही भोगता हूँ ॥ १०८ ॥ त्रिलोकी में जितने रत्न हैं मेरे पास हैं देवराज इन्द्र का ऐरावत हाथी भी मैंने हरण कर लिया है ॥ १०९ ॥ समुद्र मंथन में प्राप्त उच्चैःश्रवा नामका घोड़ा भी देवताओं ने मेरे अर्पण नम्रतापूर्वक कर दिया है ॥ ११० ॥ इसके बाद भी देवता गन्धर्व नागों के पास

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥१११॥
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥११२॥
मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम् ।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥११३॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ।
एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥११४॥

जो भी रत्नादि थे वे सब मेरे पास आ गये हैं ॥ १११ ॥ हे देवि ! संसार में सब स्त्रियों से उत्तम स्त्री रत्न तुम्हें मानते हैं तुम हमारे पास चलो क्योंकि इन रत्नों के भोगने वाले तो हम ही हैं ॥ ११२ ॥ हे चंचल नेत्रोंवाली सुन्दरी ! तुम मेरे या मेरे भाई महाबली निशुम्भ के पास चलो तुम भी रत्नस्वरूपा हो ॥ ११३ ॥ मेरे साथ विवाह करने में तुम्हें अतुलनीय ऐश्वर्य मिलेगा । अपनी बुद्धिसे विचार कर तुम मेरी स्त्री बन जाओ ॥११४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऋषिरुवाच ॥ ११५ ॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥११६॥

देव्युवाच ॥ ११७॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥११८॥
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥११९॥

ऋषि ने कहा—दूत के इन बचनों को सुनकर कल्याणरूपा दुर्गा देवी ने जो संसार की धारणकर्त्ता हैं मन में ही गम्भीर मुस्कान से बोली ॥११६॥ देवी ने कहा—दूत तुमने जो बातें कही हैं वे सभी सत्य हैं उनमें झूठ बिलकुल नहीं है—कि शुम्भ तीनों लोकों का राजा है और निशुम्भ उसके समान ही पराक्रमी है ॥ ११८ ॥ किन्तु इस विषय में मैंने पूर्व में प्रतिज्ञा करली है उसे झूठ कैसे करूँ—यह प्रतिज्ञा मैंने अपनी अल्पबुद्धि से कर ली है उसे सुनो—॥ ११९ ॥ जो मेरे अभिमान को चूर्ण कर युद्ध में जीत लेगा और जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



योमां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥१२०॥
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥१२१॥

दूत उवाच ॥ १२२ ॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥१२३॥
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ।

मेरे समान संसार में बलवान होगा वही मेरा पति होगा ॥ १२० ॥ इसलिये शुम्भ अथवा महादैत्य निशुम्भ स्वयं ही पधारें मुझे जीत कर शीघ्रही मेरा पाणिग्रहण करलें । इसमें विलम्ब मत करो ॥१२१॥ दूत ने कहा—हे देवि ! तुम घमण्डपूर्ण ऐसी बातें मेरे सामने मत कहो । तीनों लोकों में शुम्भ-निशुम्भ के सामने युद्ध में खड़ा हो ऐसा कौन पुरुष है ॥ १२३ ॥ हे देवि ! और राक्षसों के सामने और भी समस्त देव युद्ध में नहीं ठहरसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥१२४॥
इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥१२५॥
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ।
केशाकर्षणनिर्धूत गौरवा मा गमिष्यसि ॥१२६॥

देव्युवाच ॥ १२७ ॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ।

फिर तुम एकमात्र स्त्री होकर कैसे लड़ोगी ॥ १२४ ॥ जिन शुम्भ-निशुम्भादि राक्षसों के सामने समस्त इन्द्रादि देवता युद्ध में नहीं ठहर सके उनके सामने तुम स्त्री होकर कैसे युद्ध करोगी ॥ १२५ ॥ इस कारण तुम केवल मेरे कहने से ही मेरे स्वामी शुम्भ-निशुम्भ के पास चलो ऐसा करने से तुम्हारा गौरव बढ़ेगा। नहीं तो वे दैत्यराज तुम्हारे केश पकड़ कर घसीटते हुए ले चलेंगे तब तुम्हारी प्रतिष्ठा नहीं रहेगी ॥ १२६ ॥ देवी ने कहा– तुम ठीक कहते हो ? शुभ-निशुम्भ बलवान और पराक्रमी हैं—किन्तु मैंने बिनासोचे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥१२८॥
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः ।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॥ॐ॥१२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या-दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥
उवाच ९॥ त्रिवा० ६६॥ श्लोकाः ५४॥ एवम् ॥ १२९ एवमादितः ३८८ ॥

समझे जो प्रतिज्ञा करली है उसके लिये मैं क्या करूँ ॥ १२८ ॥ अब तुम जाकर जो कुछ मैंने कहा है वह सब दैत्यराज से सम्मानपूर्वक कह दो फिर वे जो उचित समझेंगे वह करेंगे ॥ १२९ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देवी-दूत संवादो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
- उवाच ९ । अवदानम ६६ । श्लोकाः ५४ । मन्त्राः १२९ । एवमादितः ॥ ३८८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ।

ध्यानम्—शिव और भैरव ही हैं अंक जिसके नागराज के आसन पर बैठी हैं—नागों की मणियों से सुशोभित, सूर्य के समान तेजस्वी तीन नेत्र वाली हैं जिनके हाथ में माला, घड़ा, कपाल, कमल हैं तथा मस्तक में अर्धचन्द्र हैं ऐसी पद्मावती देवी का मैं चिन्तन करता हूं ।

ऋषि ने कहा—देवी की इतनी बात सुन कर दूत को क्रोध हुआ उसने दैत्यराज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २ ॥
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥ ३ ॥
हे धूम्रलोचनाशु त्व स्वसैन्यपरिवारितः ।
तामानयबलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ४ ॥
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥

से सव विस्तारपूर्वक कहा—॥ २ ॥ दूत से देवी की बातें सुन कर दैत्यराज ने राक्षसों के अधिपति धूम्रलोचन से क्रोधित हो कहा—॥ ३ ॥ हे धूम्रलोचन! तुम सेना सहित जाकर उस दुष्टा देवी को बलपूर्वक झोंटे पकड़कर घसीटते हुए ले आओ। ॥ ४ ॥ यदि देवी की कोई रक्षा करें तो चाहे देवता हो, यक्ष हो या गंधर्वादि भी क्यों न होवे उनको अवश्य मार डालना ॥ ५ ॥ ऋषि ने कहा—शुम्भ की आज्ञा पाकर सेनापति धूम्रलोचन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ७ ॥
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ९ ॥

साठ हजार सेना लेकर जल्दी चला ॥ ६-७ ॥ हिमालय पर पहुच उसने उस पर रहने वाली देवी को देखा और ललकारकर कहा—तू शुम्भ-निशुम्भ के पास क्यों नहीं चलती ॥ ८ ॥ यदि मेरे स्वामी के पास तू नहीं चलती है तो तुझे बलपूर्वक केश पकड़कर खींचता हुआ ले चलूंगा ॥ ९ ॥ देवी ने कहा—शुंभ ने तुझे बलवान जान बलवती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देव्युवाच ॥ १० ॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः ।
बलान्नयसि मामेव ततः किं ते करोम्यहम् ॥ ११ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ १३ ॥
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिकां ।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥ १४ ॥
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ।

सेना सहित भेजा है यदि तू बलपूर्वक ले जायगा तो मैं कुछ नहीं कर सकती ॥१०-११॥ ऋषि ने कहा—इस प्रकार देवी के वाक्य सुनकर धूम्रलोचन राक्षस देवी की ओर दौड़ा, तब देवी ने हूं शब्द से ही उस राक्षस को भस्म कर दिया ॥ १२-१३ ॥ इसके बाद क्रोधित राक्षसी सेना देवी पर, देवी राक्षसों पर अनेकों प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करने लगे। ॥ १४ ॥ और सिंह भी क्रोधित हो गर्दन के बालों को हिलाता हुआ राक्षसी सेना पर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १५ ॥
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ॥ १६ ॥
केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥ १७ ॥
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे ।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ १८ ॥
क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ।

कूद पड़ा ॥ १५ ॥ उसने कुछ राक्षसों को पंजों से, जबड़ों से तथा कितनों को होठों से मार डाला ॥ १६ ॥ कितनों का पेट नख से फाड़ डाला, कितनों का थप्पड़ मार कर शिर शरीर से अलग कर दिया ॥ १७ ॥ उसने दैत्यों का पेट फाड़कर उनका रक्त चूसा कितनों की बाहें और मस्तक काट डाले ॥ १८ ॥ देवी वाहन क्रोधित सिंह ने कुछ क्षणों में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥
श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥ २० ॥
चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१ ॥
हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा यदि वः संशयो युधि ।

ही दैत्यों की विशाल सेना का नाश कर दिया ॥ १९ ॥ धूम्रलोचन का देवी के द्वारा बध तथा सम्पूर्ण सेना का विनाश देवी वाहन सिंह द्वारा सुनकर ॥ २० ॥ बहुत क्रोधित हो दैत्याधिपति शुंभ ने होठ कंपाते हुए चण्ड-मुण्ड नामक महाअसुरों को आज्ञा दी ॥२१॥ हे चण्ड-हे मुण्ड! तुम दोनों दैत्य बलवान हो और तुम बहुत बड़ी सेना लेकर जाओ और देवी को पकड़ लाओ । ॥ २२ ॥ देवी को बांधकर खींचकर ले आओ यदि कुछ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २३ ॥
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॐ ॥२४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ उवाच ४ ॥ श्लोकाः २० ॥ मन्त्राः २४ ॥ एवमादितः ४१२ ॥

संदेह हो तो समस्त अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग कराकर राक्षसों द्वारा मार डालना ॥ २३ ॥ उस देवी के मारे जाने के बाद सिंह के मारे जाने पर भी उस देवी को उसी अवस्था में मेरे पास जल्दी ले आना ॥ २४ ॥

इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुंभ-निशुंभ सेनानी धूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ उवाच ४ । श्लोकाः २० । मंत्रा २४ । एवमादितः ४१२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं ।
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कल्हाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां ।
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

ध्यानम्—रत्नमयी सिंहासन पर बैठी सुमधुर तोते की बोली सुनने वाली श्यामवर्ण वाली एक पैर कमल पर रखे मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण किये रक्त वस्त्र व चोली पहिने कमलपुष्प की माला धारण किये शंख हाथ में लिए हल्के मधुपान से मस्त मस्तक पर बिंदी लगाये हैं मैं ऐसी मातंगी देवी का चिन्तन करता हूं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः ।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३ ॥
ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥ ४ ॥
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति ।

ऋषि कहते हैं—शुम्भ की आज्ञा पा चण्ड-मुण्ड चतुरंगिणी सेना से सज्जित हो नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों सहित चले। ॥२॥ हिमालय की सुवर्णमयी शिखर पर देवी को मन्द-मन्द मुस्कुराते सिंह पर बैठी देखा ॥ ३ ॥ उनको देख सभी ने अपने-अपने हथियार संभाले और देवी के पास जा खड़े हुए। सभी राक्षस देवी को पकड़ने का प्रयास करने लगे—॥ ४ ॥ तब क्रोध से काले मुख वाली देवी शत्रुओं पर कुपित हुई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥
भ्रुकुटी कुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् ।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥ ६ ॥
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥ ७ ॥
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८ ॥

॥५॥ जिससे देवी की भौंहे और माथे के सिकुड़ने से उसमें से बहुत शीघ्र ही काली देवी करालवदना असि-पाश धारण किये प्रकट हुईं। ॥ ६ ॥ विचित्र खड्ग धारण किये सिंहचर्म की साड़ी पहिने, नर के मुण्डों की माला धारण किये थी। उनके शरीर का मांस क्षुधा से सूख गया था ॥ ७ ॥ विशाल मुख वाली अपनी जीभ बाहर निकाले थीं। उनके रक्तनेत्र भीतर को धंसे थे तथा अपने नाद से सब दिशाओं को पूर्ण कर रही थी। ॥ ८ ॥ बड़े वेग के साथ कालिका देवो राक्षसी सेना पर टूट पड़ीं और बड़े-बड़े

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् ।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥
पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥१०॥
तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥११॥
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥१२॥

दैत्यों का बध करने लगीं । ॥ ९ ॥ तथा पार्श्वरक्षकों, अंकुशादि धारण किये सेनानियों, घंटा सहित हाथियों को एक हाथ से पकड़ कर मुंह में रखने लगीं । ॥ १० ॥ इसी तरह घोड़े, रथ और सैनिकों को पकड़-पकड़ कर उन्हें भयंकर स्वरूप से चबाने लगीं । ॥ ११ ॥ किसी के केश पकड़कर, किसी की ग्रीवा ( कण्ठ ) दबा कर किसी को पैरों से कुचल कर, किसी को छाती से धक्का देकर मार डालती । ॥ १२ ॥ राक्षसों द्वारा फेंके हुए अस्त्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः ।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥१३॥
बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥१४॥
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः ।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१५॥
क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥

शस्त्रों को मुंह से पकड़ लेतीं और दातों से चबातीं । ॥ १३ ॥ बलवती असुरों की विशाल सेना को देवी ने इस प्रकार मारा और खाया । ॥ १४ ॥ किसी को तलवार से मारा, किसी को खट्वांग से पीटा तथा किसी को दातों के अग्रभाग से कुचल कर मार दिया । ॥ १५ ॥ देवी द्वारा सारी सेना को क्षणमात्र में मरते देख चण्ड कालिका देवी की तरफ दौड़ा ॥ १६ ॥ महा असुर मुण्ड ने भी सहस्रों बाणों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥१७॥
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥
ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ।
काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥१९॥
उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत ॥२०॥

और चक्रों का प्रहार कर देवी को ढक दिया ॥ १७ ॥ अनेकों चक्र देवी के मुख पर ऐसे सुशोभित हो रहे थे जैसे बादल की घटा में सूर्य की आभा प्रतिबिम्बित होती है । ॥ १८ ॥ भयंकर शब्दों वाली काली देवी अत्यन्त क्रोध से हंसी उससे बिकराल मुँह के दांतों की प्रभा से वह देवी उज्ज्वल प्रतीत होती है । ॥ १९ ॥ देवी ने बड़ी तलवार हाथ में ले हूं कहकर चण्ड पर आक्रमण किया और उसके बाल पकड़ कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥२१॥
हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥२२॥
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ।
प्राह प्रचण्डाट्टहाससंमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥२३॥
मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥२४॥

शिर काट डाला। ॥२०॥ चण्ड को मरा जान मुण्ड भी देवी पर झपटा उसे भी देवी ने धरती पर पटक कर खड्ग से काट दिया ॥२१॥ महा पराक्रमी चण्ड-मुण्ड के मरने के बाद उसकी बची राक्षसी सेना व्याकुल हो होकर चारो ओर भागीं। ॥ २२ ॥ तब कालिका देवी ने चण्ड-मुण्ड का मस्तक हाथ में लिया और चण्डिका के पास जाकर अट्टा-ट्टहास करते हुए कहा ॥ २३ ॥ हे देवि-मैंने चण्ड-मुण्ड नामके महापराक्रमी पशुओं को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता ।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ॐ॥२७॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
उवाच २ । श्लोकाः २५ । मंत्राः २७ । एवमादितः ॥ ४३९ ॥

तुम्हारी भेंट कर दिया है अब शुंभ-निशुंभ का वध तुम्ही स्वयं करना । ॥ २४ ॥ ऋषि ने कहा—उन दोनों चण्ड-मुण्ड नाम के पशुओं को देख कर कल्याणी चण्डिका ने सुन्दर बात कही ॥ २६ ॥ इन चण्ड-मुण्डों को मारकार तुम आयीं हो इस कारण आपका नाम चामुण्डा होगा ॥ २७ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये चण्ड-मुण्ड वधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥
उवाच २ ॥ श्लोकाः २५ ॥ मन्त्राः २७ ॥ एवमादितः ४३९ ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अष्टमोऽध्यायः ।

ध्यानम्—

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २ ॥

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३ ॥

ध्यानम्—अरुण वर्ण के शरीर करुणापूर्ण दृष्टि से तथा हाथों में पाश और अंकुश, धनुष और बाण धारण किये अणिमादि अष्टसिद्धिमयी किरणों वाली देवी का ध्यान करता हूं।

ऋषि ने कहा—चण्ड-मुण्ड के मारे जाने तथा बलवती विशाल सेना का संहार होने से असुरेश्वर ॥ २ ॥ शुंभ ने अति क्रोधित हो सब दैत्य सेना को लड़ने की आज्ञा दी। ॥ ३ ॥ अभी शीघ्र लड़ने वाले ८६ दैत्य सेनापति और कम्बू नामक राक्षस ८४ असुर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ।
कम्बूनां चतुराशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ४ ॥
कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥
कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः ।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६ ॥
इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥

अपनी-अपनी सेना के साथ युद्ध करने जांय ॥ ४ ॥ पचास कोटि वीर्य नामके असुर तथा ५० धूम्र कंजे के कुल में पैदा हुए ५०० बीर मेरी आज्ञा से लड़ाई में जांय ॥ ५ ॥ कालक दौर्हद मौर्य कालकेयादि असुर मेरी आज्ञा से सज कर युद्ध भूमि में जाय ॥६॥ महाअसुर शासनकरी भी सब को आज्ञा दे—कई सहस्र महासेना को साथ ले युद्धस्थल के लिये निकला ॥ ७ ॥ उन महाअसुरों की सेना को आती देखकर चण्डिका देवी ने अपने धनुष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ८ ॥
ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप ।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ९ ॥
धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥१०॥
तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिता: ॥११॥

की टंकार से पृथ्वी और आकाश को गुंजायमान कर दिया ॥ ७ ॥ हे राजन्-देवी वाहन-सिंह ने भी घोर गर्जना आरम्भ की चण्डिका देवी ने भी अपना घण्टा बजाकर उस शब्द को बहुत बढ़ा दिया ॥९॥ धनुष की टंकार, सिंह की गर्जना घंटे की वृहद् ध्वनि से सम्पूर्ण दिशाएं गूंज उठीं। इस भयंकर निनाद से कालिका देवी ने अपना मुख और बढ़ा दिया ॥ १० ॥ इस निनाद को सुनकर दैत्य सेना ने चारो ओर से बाण वर्षा से देवी सिंह तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥
ब्रह्मेशगुहविष्णुनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१३॥
यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् ।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥१४॥
हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१५॥

काली को घेर लिये ॥ ११ ॥ हे राजा ! इसी समय असुरदल का नाश करने के लिये तथा देवताओं का भयनाश करने के लिये ॥ १२ ॥ ब्रह्मा, महेश, स्वामि कार्तिक, विष्णू और इन्द्र के शरीरों से शक्तियाँ निकल कर उन्हीं देवताओं के समान बल, रूप, पराक्रम से युक्त देवी के पास आई ॥ १३ ॥ जैसा रूप जिस देवता का था उसी प्रकार के वाहन और आभूषण से युक्त अनेकों देवियाँ असुरों से लड़ने आई ॥ १४ ॥ ब्रह्मा की शक्ति हंस के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥१६॥
कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥१७॥
तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥१९॥

विमान पर बैठी, अक्षमाला और कमण्डल लेकर आई, ब्रह्माणी कहलाई ॥१५॥ माहेश्वरी बैलपर बैठी त्रिशूल धर धारण किये चन्द्ररेखा से सुशोभित बड़े-बड़े सर्पों का आभूषण पहने आई ॥ १६ ॥ कार्तिक की शक्ति उनके स्वरूप धारण किये मोर पर बैठी हाथ में शक्ति ले दैत्यों से युद्ध करने आई ॥१७॥ वैष्णवी देवी गरुड़ पर आसीन शंख, चक्र, गदा, शार्ङ्ग धनुष तथा खड्ग हाथ में लेकर आई ॥१८॥ वाराही देवी भी जो वाराह भगवान् यज्ञ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥२०॥
वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२१॥
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥२२॥
ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ।

के अधिष्ठात्री हैं उनका स्वरूप धारण कर युद्धभूमि में आईं ॥१९॥ नृसिंह भगवान् का स्वरूप धारण कर वे नारसिंही भी युद्ध भूमि में आईं जिनके बालों के हिलने से नक्षत्र भी हिलने लगे थे ॥२०॥ इन्द्र की शक्ति उसी के समान रूप वाली सहस्रनेत्रों वाली ऐन्द्री भी, ऐरावत हाथी पर बैठ कर आईं ॥ २१ ॥ इसके बाद देव शक्तियों से घिरे हुए महादेव जी ने चण्डिका से कहा—इन राक्षसों का वध जल्दी करो जिससे मेरी प्रसन्नता बढ़े ॥ २२ ॥ तब देवी के शरीर से सैकड़ों सियारिनों की भांति शब्द करने वाली अत्यन्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥२३॥
सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥२४॥
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥२५॥
त्रैलोक्यमिन्द्रोलभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥
बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ।

भयावनी परम उग्र चण्डिका प्रकट हुईं ॥२३॥ तब देवी ने धूम्रवर्ण की जटा वाले महादेव से कहा कि आप शुंभ-निशुंभ के पास मेरे दूत बनकर जावें ॥ २४ ॥ जो ये दानव युद्ध की इच्छा से आये हैं उनमें से शुम्भ-निशुंभ तथा और भी जो गर्वीले बड़े पराक्रमी राक्षस हों उनको भी कहिये कि ॥ २५ ॥ इन्द्र त्रैलोक्य का राज्य प्राप्त करें देवता यज्ञ भाग की प्राप्ति करें तथा तुम यदि जीवित रहना चाहते हो तो पाताल को भाग जाओ ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥२७॥
यतो नियुक्तो दौत्येन तथा देव्या शिवः स्वयम् ।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥२८॥
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥२९॥
ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥३०॥

यदि तुम अपने बल का घमंड करके युद्ध में रत होना चाहते हो तो आओ हमारी योगिनियाँ तुम्हारा सब का रक्त पी जावेंगी। मांस खाकर तृप्त होंगी ॥ २७ ॥ चूँकि देवी ने भगवान् शिव को दूत कर्म के लिये नियुक्त किया था इस कारण जो दूत कर्मवाली शक्ति थी शिवदूती कहलाई ॥२८॥ वे महादैत्य शिव के मुँह से देवी का संदेश सुनकर क्रोधान्ध हुए और जहाँ कात्यायनी थी वहाँ दौड़े ॥ २९ ॥ और घमंड में भरकर पहले ही देवी पर बाण, शक्ति, और तलवार आदि अस्त्रों की वर्षा की ॥३०॥ देवी ने कौतूहलवश धनुष टंकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३१॥
तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् ।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥३२॥
कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः ।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति ॥३३॥
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ।

की तथा उसके द्वारा छोड़े हुए-बाणों से राक्षसों द्वारा छोड़े गये बाण, शूल, शक्ति और फरसों को काट दिया ॥३१॥ फिर काली कौशिकी देवी के आगे आईं और त्रिशूल द्वारा शत्रुओं को विदीर्ण करने लगी और खट्वांग से उनको कुचलती हुई चारो ओर घूमने लगी जैसे बादलों में बिजली घूमती हो ॥३२॥ ब्रह्माणी जिस-जिस तरफ दौड़ती उसी ओर अपने कमण्डल का जल छिड़क कर मरे हुए राक्षसों का बल पराक्रम नष्ट करने लगी ॥३३॥ माहेश्वरी ने त्रिशूल से, वैष्णवी ने चक्र से अत्यन्त क्रोधित कुमारी (कार्तिकी)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥३४॥
ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥३५॥
तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥
नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥

ने अपनी २ शक्ति से दैत्यों का संहार आरंभ किया ॥ ३४ ॥ ऐन्द्री के वज्र के प्रहार से पीडित हो सैकड़ों राक्षस रक्त की धारा बहाते हुए पृथ्वी पर सो रहे ॥ ३५॥ वाराही देवी ने अपने थुथुनों की मार से नष्ट कर दिया। दाढ़ों के अग्रभाग से छाती फाड़ी तथा कितने दैत्यों को चक्र की चोट से विदीर्ण कर दिया ॥ ३६ ॥ नारसिंही भी दिगम्बरावस्था में जोर से निनाद करती हुई अपने नखों से अन्यान्य महादैत्यों को फाड़ते हुए दिशाओं को कम्पायमान करती हुई विचरण करने लगी ॥ ३७ ॥ शिवदूती के भयंकर अट्टहास से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥३८॥
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥३९॥
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् ।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तवीजो महासुरः ॥४०॥
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥

निस्तेज भयभीत हो सब असुर पृथ्वीपर गिर पड़े और उन्हें शिवदूती अपना ग्रास बनाने लगी ॥ ३८ ॥ मातृगणों ने भी असुर सेना का मर्दन किया उसे देख दैत्यसेना भाग खड़ी हुई ॥ ३९ ॥ मातृगणों द्वारा दैत्यसेना को पीडित होकर भागते देखकर रक्तबीज नामक राक्षस क्रोध से लड़ने गया ॥ ४ ॥ रक्तबीज के रक्त बिन्दु जमीन पर गिरने से उसी के समान महाबली दैत्य पैदा हो जाते थे ॥ ४१ ॥ महादैत्य रक्तबीज भी हाथ में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥४२॥
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥४३॥
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥४४॥
ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः ।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥

गदा ले ऐन्द्री से युद्ध करने लगा। तब ऐन्द्री ने अपने वज्र से रक्तबीज का बध कर दिया ॥ ४२ ॥ उसके शरीर से गिरे हुए खून से उसी के समान पराक्रमी योद्धा उत्पन्न हुए ॥ ४३ ॥ उसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरी उतने ही पुरुष उत्पन्न हुए। वे सभी रक्तबीज के समान पराक्रमी बीर और बलवान थे ॥ ४४ ॥ वे रक्त बिन्दु से पैदा होने वाले पुरुष भी अनेकों प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से मातृगणों पर प्रहार करते हुए युद्ध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥४६॥
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥४७॥
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः ।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥४८॥
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना ।

करने लगे ॥ ४५ ॥ मातृगण जब वज्र से पुनः प्रहार करने लगे तब उसका मस्तक घायल हुआ तो अनेकों हजारों पुरुष उस रक्त के बहने से उत्पन्न हो गये ॥ ४६ ॥ वैष्णवीने युद्ध में चक्र से रक्तबीज पर प्रहार किया और ऐन्द्री ने भी उस दैत्य सेनापति पर गदा से प्रहार किया ॥ ४७ ॥ वैष्णवी के चक्र से घायल होकर उसके शरीर से रक्त बहने लगा और रक्त से उसके आकार के समान हजारों महादैत्य उत्पन्न हो गये जिससे सारा संसार व्याप्त हो गया ॥ ४८ ॥ कौमारी ने शक्ति से, वाराही ने खड्ग से और माहेश्वरी ने त्रिशूल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥४९॥
स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् ।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥५०॥
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥
तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥५२॥
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा ।

से महाअसुर को घायल किया ॥ ४९ ॥ उस रक्तबीज महाअसुर ने क्रोधित होकर गदा से सभी मातृदेवियों पर प्रहार किया ॥ ५० ॥ मातृकाओं द्वारा शक्ति, त्रिशूल आदि अनेकों बार घायल होने से जो उसके शरीर से रक्त की धार पृथ्वी पर गिरती थी उससे भी सैकड़ों असुर पैदा हो गये ॥ ५१ ॥ इस प्रकार उस महादैत्य के रक्त से उत्पन्न असुरों से सारा संसार व्याप्त हो गया जिससे देवगण बहुत भयभीत हो गये ॥ ५२ ॥ देवताओं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥५३॥
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् ।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥५४॥
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् ।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥५५॥
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥५६॥

को भयभीत दुःखी देखकर चण्डिका ने काली से कहा कि हे चामुण्डे तुम अपना शरीर और मुख और बढ़ाओ ॥ ५३ ॥ जिससे मेरे अस्त्रों द्वारा मारे जाने पर रक्त बिन्दुओं और उनसे पैदा होने वाले राक्षसों को प्रबल वेग के साथ शीघ्र ही भक्षण करो ॥ ५४ ॥ इस प्रकार युद्धस्थल में घूमती हुई उत्पन्न होनेवाले असुरों को भक्षण करती चलो इसी प्रकार जब रक्त क्षीण हो जायगा तब वह भी मारा जायगा ॥ ५५ ॥ आप उग्रा हो-इस प्रकार वेग से खाने से दैत्यों का उत्पन्न होना समाप्त हो जायगा ऐसा काली जी को समझाकर देवी ने त्रिशूल से रक्तबीज को मारा ॥ ५६ ॥ और काली ने इस प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥५७॥
न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥५८॥
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति ।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥५९॥
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥६०॥

सम्पूर्ण रक्त अपने मुख में ले लिया तब रक्तबीज ने देवी को गदा से मारा ॥ ५७ ॥ लेकिन गदा के प्रहार से देवी को बिल्कुल वेदना नहीं हुई और रक्तबीज के घायल शरीर से बहुत सा रक्त गिर गया ॥ ५८ ॥ उसके रक्त गिरते ही देवी चामुण्डाने अपने मुंह में सारा रक्त पी लिया रक्त से उत्पन्न होने वाले दैत्य मुख में ही रह गये और रक्तबीज का रक्त भी पी लिया ॥ ५९ ॥ इसके बाद देवी ने रक्तबीज को, जिसका रक्त चामुण्डाने पी लिया था वज्र, बाण, खड्ग और ऋष्टि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ।
स पपात महोपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ॥६१॥
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥६२॥
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ॐ॥६३॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥
उवाच १ । अर्द्धश्लोकाः १ । श्लोकाः ६१ । एवम् ६३ । एवमादितः ५०२ ॥

---

आदि से मार दिया ॥ ६० ॥ इस प्रकार शस्त्रों के समुदाय से मर कर एवं रक्तहीन होकर वह महादैत्य रक्तबीज पृथ्वी पर गिर गया ॥ ६१ ॥ हे महीपाल—इस प्रकार निरक्त रक्तबीज महाअसुर के मरने से देवताओं में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और वे सभी हर्षित हुए ॥ ६२ ॥ और मातृगणों ने उन असुरों का रक्त पान किया जिसके मदसे उन्मत्त होकर वे नृत्य करने लगीं ॥ ६३ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
उवाच १ ॥ अर्ध० १ ॥ श्लोकाः ६१ ॥ मंत्रा ६३ ॥ एवमादितः ॥ ५०२ ॥

---

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# नवमोऽध्यायः ।

ध्यानम्—

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

ॐ राजोवाच ॥ १ ॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम ।

ध्यानम्—मैं तप्त सुवर्ण के समान सुन्दर रुद्राक्ष की माला धारण किये पाश, अंकुश, दंड और वर को धारण किये माथे पर अर्धचन्द्र और आभूषणों से सुशोभित होकर तीन नेत्र वाले अर्धनारीश्वर के वश में हूं।

राजा ने कहा—हे भगवन्! आपने देवी के अद्भुत आख्यान रक्त-बीज के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २ ॥
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥ ६ ॥

वध से सम्बन्ध रखने वाली कथा कही ॥२॥ अब मैं रक्तबीज के बाद की कथा सुनने की इच्छा करता हूं ॥ शुम्भ और निशुम्भ ने कुद्ध होकर क्या-क्या कर्म किये ॥३॥ ऋषि ने कहा—रक्तबीज के मारे जाने पर तथा बहुत सेना के नाश हो जाने से शुम्भ और निशुंभ ने क्रोध किया ॥ ५ ॥ और बहुत बड़ी राक्षसी सेना का नाश होते देखकर अच्छी विशाल बलवती सेना के साथ शुंभ नामक असुर क्रोधित होकर दौड़ा ॥ ६ ॥ उसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तस्याग्रतस्तथा पृष्टे पार्श्वयोश्च महासुराः ।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ ७ ॥
आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥
ततो युद्धमतीवासीद् देव्या शुम्भनिशुम्भयोः ।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ९ ॥
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ।

आगे पीछे बगल में महाअसुरों की सेना भी दातों से होठ चबाती हुई देवी को मारने के लिये दौड़ी ॥७॥ अपनी सेना द्वारा चारों ओरसे घिरा महावीर शुम्भ राक्षस भी मातृगणों के साथ युद्ध करने की इच्छा तथा देवी के मारने के लिए क्रोधित हो आगे आया ॥८॥ तब शुंभ-निशुंभ के साथ देवी का अत्यन्त प्रबल युद्ध हुवा शरों की वर्षा ऐसी होती थी जैसे बादलों से जल की बृष्टि होती हो ॥ ९ ॥ तब देवी ने स्वयं बाणों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥११॥
ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥१२॥
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥१३॥

की वर्षा कर राक्षसों की बाण-वर्षा के जाल को काट दिया और उनके (राक्षसों) शरीर के अंगों को बीधने लगी ॥ १० ॥ निशुंभ भी चमकती तलवार और ढाल लेकर आया और देवी वाहन सिंह के ऊपर झपट उसके शिर में मारा ॥ ११ ॥ वाहन को घायल होता देख देवी ने क्षुरप्र नामके वाणोंसे मारा जिस कारण निशुंभ नामके दैत्य की तलवार कट गई और उसकी आठ चन्द्रमा से जटित ढाल को भी काट दिया ॥ १२ ॥ तलवार और ढाल के कट जाने पर असुर ने शक्ति मारी देवी ने आगे बढ़कर अपने चक्र द्वारा उस शक्ति के दो टुकड़े कर दिये ॥१३॥ और क्रोध से निशुंभ ने देवी पर त्रिशूल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥१४॥
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥१५॥
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥१६॥
तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥१७॥

मारा उस शूल को आते देखकर देवी ने मुष्टि के प्रहार से चूर-चूर कर दिया ॥ १४ ॥ तब उसने गदा घुमाकर देवी को मारा वह गदा भी त्रिशूल से कट गई ॥ १५ ॥ तब दैत्यराज निशुंभ को हाथ में फरसा लेकर आते देखा तब देवी ने बाण समूहों से घायल कर राक्षस को सुला दिया ॥ १६ ॥ उस भयंकर पराक्रमी भाई के मारे जाने का हाल सुन उसके धराशायी होने पर शुंभ अति क्रुद्ध होकर अम्बिका का वध करने के लिये चल पड़ा ॥ १७ ॥रथ पर बैठे-बैठे ही शुंभ उत्तम आयुधों से आठ भुजाओं से नभ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥
तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् ।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥१९॥
पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च ।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥२०॥
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥२१॥

को दीप्तमान करता हुआ शोभा को प्राप्त हुआ ॥१८॥ उस दैत्य को आते देखकर देवी ने शंखनाद किया और धनुष की प्रत्यंचा का न सहन करने वाला शब्द किया ॥ १९ ॥ तथा अपने घंटे का शब्द किया जिस शब्द के प्रभाव से समस्त दैत्य सेना का तेज पराक्रम का नाश कर दिया ॥२०॥ तथा सिंह ने भी दहाड़ना शुरू किया जिससे बड़े-बड़े गजराजों का मद नाशहो जाताथा ॥ जिससे दशो दिशाएं पृथ्वी और आकाश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥२२॥
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥२३॥
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ।

सहित गूंज उठी ॥२१॥ तब काली ने आकाश मंडल में उछल कर अपने दोनों हाथों से पृथ्वी का ताडन किया ॥ करों से ताडन करने से महा भयंकर शब्द हुवा जिसने पूर्व के शब्दों को शान्त कर दिया ॥२२॥ और शिवदूती अट्टहास करने लगी इन शब्दों को सुन सब दैत्य भय से थर्रा उठे और शुंभ बहुत क्रोधित हुआ ॥ २३ ॥ तब देवी ने कहा हे दुरात्मा शुंभ खड़ा रह, ॥ आकाश मंडल में स्थित देवता जय हो, जय हो उच्चारण करने लगे ॥ २४ ॥ तब शुम्भ ने ज्वालाओं से युक्त अतिभीषण शक्ति चलायी वह्नि की तरह पर्वत के समान आती हुई शक्ति को देख देवी ने महोल्कया नाम की शक्ति से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥
सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥२६॥
शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥२८॥
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ।

उसका नाश कर दिया ॥ २५ ॥ उस समय के सिंहनाद से तीनों लोक भयभीत हुए उस भयंकर शब्द ने और सब शब्दों को शान्त कर दिया ॥२६॥ तब शुंभ के द्वारा चलाये गये अनेक बाणों को जिसकी संख्या १ लाख थी देवी ने अपने बाणों से भेदन कर दिया ॥ २७ ॥ तब क्रोध से देवी ने शुंभ असुर को त्रिशूल से घायल किया उस आघात से मूर्छित हो वह पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ २८ ॥ इतने में निशुंभ को फिर होश हुवा वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥२९॥

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ।

चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥३०॥

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ।

चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैःसायकांश्च तान् ॥३१॥

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ।

अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥३२॥

निशुंभ अपने धनुष के बाणों की वर्षा कर काली और सिंह को घायल करने लगा ॥ २९ ॥ फिर दस हजार बाहें बनाकर वह राक्षसराज चक्रों से प्रहार करने लगा और देवी को ढक दिया ॥३०॥ तब भगवती दुर्गा अति क्रुद्ध हो दुर्गम पीड़ा को नाश करने लगीं और अपने बाणों से राक्षस के चक्रों का नाश कर दिया ॥३१॥ तब निशुम्भ वेग से गदा ले चण्डिका की ओर दौड़ा। दैत्य सेना के साथ निशुम्भ को आते देखकर ॥३२॥ उसकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३॥
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् ।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥३४॥
भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥३५॥
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ।

गदा को तलवार से चण्डिका ने काट दिया। तब उसने शीघ्रता से त्रिशूल हाथ में लिया ॥३३॥ त्रिशूल हाथ में लिये आते देखकर निशुम्भ को मर्दन किया॥ देवों को पीड़ित करने वाले राक्षस को देवी चण्डिका ने वेग से विद्ध किया ॥३४॥ उसकी छाती त्रिशूल से छेद दी त्रिशूल से शिर वेध देने पर उसके हृदय से एक दूसरा महाबलवान तथा वीर्यवान पुरुष देवी से खड़ी रह, खड़ी रह कहता हुवा प्रकट हुवा ॥३५॥ तब देवी उसे देखकर तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥३६॥
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥३७॥
कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३८॥
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥३९॥

उसकी बात सुनकर हंस पड़ी ॥ और बोलते हुए शिर को खड्ग से काट कर पृथ्वी पर गिरा दिया ॥३६॥ तब दांत से गर्दन को चबाता हुवा सिंह असुरों को खाने लगा । शिवदूती और काली दूसरे और असुरों को खाने लगी ॥३७॥ कौमारी की शक्ति से कोई कोई महाअसुर टुकड़े २ होकर मर गये । ब्रह्माणी के मंत्र से पवित्र किये जल द्वारा निस्तेज हो गये ॥३८॥ कितने असुर माहेश्वरी के त्रिशूल से मारे गये । कितनों को बाराही ने अपने दांत की चोट से पृथ्वी पर चूर्ण किया ॥३९॥ वैष्णवी ने चक्र ले कितने ही असुरों को खण्ड

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥४०॥
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॐ ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः॥९॥
उवाच २ ॥ श्लोकाः ३९ ॥ एवम् ४१ ॥ एवमादितः ५४३ ॥

खण्ड कर दिया ॥ कितने ही राक्षस ऐन्द्री के हाथ से निकले हुए वज्र से नाश हुए ॥ ४० ॥ कितने ही दूसरोंकी झपट से मरे कितने महायुद्ध से भाग गये ॥ और जो कुछ बचे उन सबको काली शिवदूती और सिंह ने खा लिया ॥ ४१ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुम्भवधो नमः नवमोऽध्याय ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# दशमोऽध्यायः।

ध्यानम्—

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्
रम्यैर्भुजैश्चदधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेंदुलेखाम्

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥१॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् ।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥

ध्यानम्—मैं तपे हुए सुवर्ण के समान तपे हुए वर्ण वाले, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि ये ही तीन नेत्र हैं जिसके, धनुष, बाण, अंकुश और पाश हाथों में धारण किये शिव शक्ति रूपा कामेश्वरी का ध्यान करता हूं जो मस्तक पर अर्द्धचन्द्र भी धारण किये हैं।

ऋषि ने कहा—प्राणप्रिय निशुम्भ को मरा हुवा देख क्रोधयुक्त होकर शुंभ भगवती से कहने लगा ॥२॥ कि अपने बल का घमंड करने वाली दुष्ट दुर्गे! तू गर्व मतकर। हे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



बलावलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्धयसे यातिमानिनी ॥ ३ ॥

देव्युवाच ॥ ४ ॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ५ ॥

ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखालयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६ ॥

अभिमानिनी दुर्गे तू दूसरों का बल लेकर लड़ती है ॥३॥ देवी ने कहा—हे दुष्ट इस जगत में मैं अकेली हूं कोई शक्ति मुझसे अलग नहीं है ॥ वे सब शक्तियाँ मेरी ही विभूति हैं ॥५॥ देख ये सब मुझसे ही तब ब्रह्माणी आदि सब शक्तियां देवी के मुख में चली गई अम्बिका वहां अकेली रह गई ॥६॥ देवी बोली—हे शुम्भ मैं अपनी विभूतियों द्वारा इस युद्ध में अनेक रूप होकर विद्यमान थीं उन सब रूपों का संहार करके अब एक हूं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देव्युवाच ॥ ७ ॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता ।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥१०॥
शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः ।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥११॥
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ।

तू स्थिर रह । ॥८॥ ऋषि ने कहा—तब देवी और शुम्भ दोनों युद्ध में प्रवृत्त हो गये देखने वाले देवगणों मनुष्यों के सामने दारुण युद्ध होने लगा ॥१०॥ फिर भी देवी और शुम्भ की शर वृष्टि तीक्ष्ण बाणों से कुन्तायुधादि दारुण अस्त्रों से ऐसा युद्ध होने लगा कि सम्पूर्ण लोक भयभीत हो गया ॥११॥ अम्बिका ने अस्त्रों को चलाया उन सब अस्त्रों को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥१३॥
ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥१५॥

राक्षसराज शुम्भ ने काट दिया । तब शुम्भ ने भी देवी के ऊपर दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया ॥१२॥ तब परमेश्वरी चण्डिका ने आसानी से उग्र हुँकारमात्र के उच्चारण आदि द्वारा नाश कर दिया ॥१३॥ तब असुर ने सौ बाणों से देवी को आच्छादित कर दिया देवी ने भी क्रोध से बाणों द्वारा राक्षसराज का धनुष काट दिया ॥१४॥ धनुष कट जाने पर दैत्येन्द्र शुम्भ ने शक्ति ली । देवी ने उसके हाथ की शक्ति को चक्र से काट दिया ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥
तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥१७॥
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥१८॥
चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ।

॥१५॥ तब खड्ग और सौ चन्द्रमा और चमकते हुए सूर्य के तेज के समान। जिसमें लगे थे ऐसी ढाल लेकर दैत्यों का स्वामी वह शुम्भ भगवति की ओर दौड़ा। ॥१६॥ बाद में पास पहुंचे हुए शुम्भ के खड्ग और सूर्य के समान तेज वाली ढाल को चण्डिका ने धनुष से छोड़े हुए तेज बाणों द्वारा काट दिया ॥ १७ ॥ घोड़े और सारथी के मारे जाने तथा रथ और धनुष के कटने पर। शुम्भ ने अम्बिका को मारने के लिए कठोर मुग्दर उठाया ॥१८॥ देवी ने मुग्दर लिये दैत्य को तेज बाणों से काट दिया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥१९॥
स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥२०॥
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२१॥
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥२२॥
नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ।

शुम्भ मुक्का तान कर देवी की ओर दौड़ा ॥ १९ ॥ दैत्यपुङ्गव शुम्भ ने देवी के हृदय पर मुक्का मारा तब देवी ने भी एक थप्पड़ से उसकी छाती पर मार ॥ २० ॥ राक्षसराज को भूमि पर गिरा दिया । और वह दैत्यराज सहसा शीघ्र ही उठ गया ॥ २१ ॥ और देवी को पकड़ आकाश में उड़ गया । वहां निराधार होने पर भी देवी युद्ध करने लगी । ॥ २२ ॥ आकाश में दैत्य और चण्डिका परस्पर युद्ध करने लगे । वह युद्ध सिद्ध-मुनियों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥२३॥
ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥२४॥
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः ।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥२५॥
तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥२६॥
स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ।

को भय देने वाला था ॥ २३ ॥ बहुत देर तक अम्बिका ने उसके साथ बहुत युद्ध किया। और देवी ने शुम्भ को घुमाकर ऊँचा उठाकर पृथ्वी पर पटक दिया ॥ २४ ॥ पृथ्वी पर गिरने के बाद तुरन्त मुक्का उठा कर देवी की ओर दौड़ा। देवी ने दैत्यराज शुम्भ को अपनी ओर मुक्का उठाकर आते देखकर ॥ २५ ॥ त्रिशूल से देवी ने उसको बेध दिया। वह पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ २६ ॥ त्रिशूल की नोक के मारने से वह देवी के सामने ही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि ।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥२८॥
उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३०॥

प्राणहीन हो गया। उसके गिरने से समुद्र, पृथ्वी, पर्वत, द्वीप सब हिल गये ॥ २७ ॥ उस दुरात्मा के मारे जाने से सारा अखिल (संसार) प्रसन्न हो गया। सारा जगत स्वस्थ हो गया। आकाश निर्मल हो गया ॥ २८ ॥ जितने अनिष्टसूचक मेघ और उल्का शुम्भ के सामने थे वे नष्ट हो गये। सारी नदियां अपने सीधे मार्ग से बहने लगीं ॥२९॥ तब सब देवगण हर्ष युक्त और निर्मल हो गये। गन्धर्वराज मनोहर गीत गाने लगे ॥ ३० ॥ कोई बाजे बजाने लगे तथा अप्सरायें नृत्य करने लगीं सुंदर पवन चलने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥३१॥
जज्वलुश्चाग्नयःशान्ताःशान्तादिग्जनितस्वनाः ॥३२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुंभवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥
उवाच ४ ॥ अर्द्धश्लोकः १ ॥ श्लोका २७ ॥ एवम् ३२ ॥ एवमादितः ॥ ५७५ ॥

लगीं, सूर्य प्रकाश युक्त हो गया ॥ ३१ ॥ सम्पूर्ण अग्नियां प्रज्वलित होने लगीं तथा सब दिशाएं शान्त हो गईं ॥ ३२ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# एकादशोऽध्यायः ।

ध्यानम्—

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद् विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥२॥

ध्यानम्—प्रातःकालीन सूर्य की आभा की तरह, मस्तक पर चन्द्रमाका मुकुट जिसके है उभरे हुए स्तन और तीन नेत्रों वाली, जिनका मुख हर समय मुस्कुराता है—तथा हाथों में वरद, अंकुश, पाश एवं अभय मुद्रा हैं ऐसी भुवनेश्वरी देवी का मैं ध्यान करता हूं।

ऋषि ने कहा—शुंभ के मारे जाने पर इन्द्र के साथ अग्नि आदि देवता आनन्द से सब दिशाओं को प्रकाशित करते हुए देवी की इस प्रकार स्तुति करने लगे ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥
आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥४॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥

हे देवी ! अपने भक्तों का दुःखदूर करने वाली आप हैं। सब जगत् की माता और सब चराचर की ईश्वरी हैं। हे विश्वेश्वरी ! आप प्रसन्न हो कर इस संसार की रक्षा कीजिये ॥३॥ आप ही संसार की एकमात्र आधार भूत रूप हैं आप ही पृथ्वी का रूप हो कर स्थित हैं। सम्पूर्ण जगत को आप ही जलरूप हो आनन्दित करती हैं। आपका पराक्रम अतुल है ॥ ४ ॥ आप अत्यन्त पराक्रमी वैष्णवी शक्ति का रूप धारण कर इस जगत का पालन करती हैं। संसार का कारण परममाया अविद्या भी आप ही है जिससे ये सब जीव मोहित रहते हैं। आपकी प्रसन्नता से मुक्ति मिलती है ॥ ५ ॥ हे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ॥६॥
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ ७ ॥
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

देवी—संसार की संपूर्ण बिद्याएँ आप ही हैं-जितनी पतिव्रता स्त्रियाँ है वे आपका अंश हैं और आप ही हैं जो इस संसार के भीतर और बाहर सब जगह स्थित हैं। कोई भी वस्तु आप से अलग नहीं है। हे देवी! इसके सिवाय और कौन सी स्तुति आपकी हमलोग कर सकते हैं ॥६॥ जो आपकी स्तुति करता है—उसे आष स्वर्ग, मुक्ति देती हैं तथा सब प्रणियों में आप विराजमान हैं। इसलिए आपकी स्तुति के लिए कुछ कहना उचित नहीं है ॥७॥ आप सब जीवों के हृदय में बुद्धि रूप से विराजती हैं-इस कारण जीवों को स्वर्ग और मुक्ति आप ही देती हैं। नारायण विष्णु भगवान की आप शक्ति हैं आपको हम लोग प्रणाम करते हैं ॥८॥ कला और काष्ठा अर्थात् घड़ी, पल आदि जो काल है उसको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।

अन्त तक पहुँचाने वाला आपही का स्वरूप है। संसार का नाश करने वाला स्वरूप भी आपका ही है। हे नारायणि! आपको प्रणाम है ॥९॥ आप ही सब मंगलों का रूप हैं। कल्याण और सम्पूर्ण अर्थों को सिद्धि करने वाली, सबको शरण देने वाली, त्रिनयना गौरी आप ही हैं! हे नारायणि। आपको प्रणाम है ॥१०॥ उत्पत्ति, पालन, संहार करने के लिए आप ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश में विराजमान रहती हैं और आपही सनातनी नित्या हैं। सब गुणों की आप आधार हैं, तीनों गुणों से आप संयुक्त हैं आपको प्रणाम है ॥११॥ आप दुःखी लोगों को शरण देती हैं। उनकी रक्षा आप करती हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

आप सब जगत की पीड़ा हरने वाली हैं, हे नारायणी आपको प्रणाम है ॥१२॥ हंस-युक्त विमान पर आरूढ़ होकर ब्रह्माणी का रूप धारण किये कमण्डलु के जल छिड़कनेवाली नारायणी को हम प्रणाम करते हैं ॥१३॥ त्रिशूल चन्द्रमा, नागराज शेष को धारण कर बैल पर सवार माहेश्वरी स्वरूपवाली नारायणी को हम प्रणाम करते हैं ॥१४॥ मोर पर आरूढ़, पापरहित महाशक्ति धारण किये कौमारी आप हैं ऐसी नारायणि को हम प्रणाम करते हैं ॥ १५ ॥ शंख, चक्र, गदा पद्म और शस्त्रों को धारण किए तथा वैष्णवी शक्ति भी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥

विद्यमान हैं ऐसी नारायणी देवी को हम प्रणाम करते हैं ॥१६॥ महाचक्र हाथ में लिए दाँतों से पृथ्वी उठाये वाराहरूप धारण किये सबका कल्याण करनेवाली शक्ति को हम प्रणाम करते हैं ॥१७॥ आपने तीनों लोकों की रक्षा के लिए दैत्यों का बध करने के लिए जो नृसिंह रूप धारण किया था ऐसी नारायणी को हम प्रणाम करते हैं ॥१८॥ शिर पर किरीट धारण किये हाथ में वज्र लिए, सहस्रों आँखों से प्रकाशमान बृत्रासुर के बध करनेवाली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २० ॥
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २२ ॥
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।

इन्द्राणि रूप आप ही हैं—हे नारायणि हम प्रणाम करते हैं—॥१९॥ शिवदूती का रूप धारण किये दैत्यों का बल नाश करने वाली, भयानक रूप होकर भयानक शब्द धारण करनेवाली हे नारायणि आपको प्रणाम है ॥२०॥ चामुण्डा रूपा—बड़े बड़े दांत निकाले, डरावनी सूरत वाली मुंडमाला धारण किये, चण्ड-मुण्ड को मारने वाली, हे नारायणि, आपको प्रणाम है ॥ २१ ॥ लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, पुष्टि, स्वधा, ध्रुवा महामाया रूपा नारायणि आपको प्रणाम हैं ॥ २२ ॥ सब वस्तु धारण करने वाली, बुद्धि, सरस्वती, उत्तम ऐश्वर्य, रजोगुण और तमोगुण युक्त मूलशक्ति आप सब में समर्थ हैं, हे नारायणि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नयिते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २३ ॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ २४ ॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २६ ॥

प्रसन्न होवें हम प्रणाम करते हैं ॥ २३ ॥ सब लोगों के समान रूपा समर्था और शक्तियों से युक्त जो आप दुर्गा हैं आप प्रसन्न होकर हमारा भय दूर कीजिये । हम आपको प्रणाम करते हैं ॥ २४ ॥ हे कात्यायनी ! तीन नेत्रों से आपका परम सुन्दर मुख है वह सम्पूर्ण संसारी विकारों से हम लोगों की रक्षा करें, आपको हम प्रणाम करते हैं ॥२५॥ आपका त्रिशूल जो ज्वाला के समान भयंकर है उससे अत्यन्त उग्र राक्षसों को मारने वाली आप हमलोगों की रक्षा करें—हम आपको ( भद्रकाली को ) प्रणाम करते हैं । ॥२६॥ हे देवि ! आपका घण्टा जिसके शब्द से सम्पूर्ण जगत् व्याप्त होता है, जो दैत्यों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ २७ ॥
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥२९॥
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ।

के तेज को नाश करता है। वह हम सबों की पुत्र के समान रक्षा करें॥ २७ ॥ हे चण्डिके-आपका उज्ज्वल हाथ जो असुरों के मांस व रुधिर से भरा है-सदा हमारा कल्याण करें। हम लोग आपको प्रणाम करते हैं ॥२८॥ हे देवि! आप जिस पर प्रसन्न होती हैं-उसके रोगों को दूर करती हैं और जिस पर आप अप्रसन्न होती हैं उसकी सब कामनाएं नष्ट होती हैं जो कोई आपकी शरण में रहते हैं। उन लोगों को कभी दुःख नहीं होता और जो लोग आपकी शरण में हैं उनके आश्रित रहने वाले भी सुखी रहते हैं ॥२९॥ हे अम्बिका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥३२॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।

हे देवि ! आप अनेक रूप धारण कर धर्मद्रोही राक्षसों का बध करती हैं। आपके सिवाय ऐसा करने वाला कौन है ॥३०॥ विद्या, ज्ञान, शास्त्र उपनिषद और कर्मकाण्ड के बताने वाले जो वेद के वचन हैं इन सबके होते हुए भी इस संसार को ममतारूपी महाअन्धकार में गिराने वाली सिवाय आपके दूसरा कोई नहीं हैं ॥ ३१ ॥ जहां पर राक्षस महाविषैले सांप, शत्रु, चोर, जिस प्रकार अग्नि से घिर कर या समुद्र की लहर में पड़कर कोई व्याकुल हो उन जगहों पर आपका स्मरण करने से आप ही वहां उपस्थित होकर उसकी रक्षा करती हैं ॥ ३२ ॥ आप संसार की रक्षा करने से विश्वेश्वरी और संसार को धारण करने में विश्वात्मिका कहलाती हैं और आपको विश्व के ईश इन्द्रादि देवता और इसी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३३॥

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥३४॥

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥३५॥

तरह संसार के आश्रित लोग भक्तिपूर्वक नम्र होकर आपकी बन्दना करते हैं ॥३३॥ हे देवि ! जिस तरह आपने इस समय असुरों को मार कर हम लोगों की रक्षा की है इसी तरह सर्वकाल हम लोगों की रक्षा कीजिये और सम्पूर्ण जगत् के पापों को क्षय करो उत्पन्न होने वाले महाविघ्नों का भी शमन करो ॥ ३४ ॥ हे देवि ! तुम संसार की पीड़ा का नाश करने वाली हो आपके चरणारविन्द में हम लोग प्रणाम करते हैं ! अब आप प्रसन्न होकर तीनों लोक में रहने वाले लोगों को वरदान दीजिये ॥ ३५ ॥ इतनी स्तुति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देव्युवाच ॥ ३६ ॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥३७॥

देवाउचुः ॥ ३८ ॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥

देव्युवाच ॥ ४० ॥

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ।

के बाद देवों ने कहा—हे देवताओं! तुम लोगों को जो वर मांगना हो मांगो मैं वरदान दूँगी जिससे तुम लोगों का और सम्पूर्ण जगत् का उपकार होगा ॥३६-३७॥ तब देवतालोग बोले—कि हे अखिलेश्वरी! शुम्भ इत्यादि असुरों के मारे जाने से सकल लोक के दुःख का नाश हो गया इसी तरह जब कभी हम लोगों को दुःख देनेवाले दुष्ट असुर प्रकट हों तब उन सबको भी आप नाश कीजिये ॥ ३९ ॥ यह सुन देवी जी ने कहा—कि अट्ठाइसवें चतुर्युग में वैवस्वत मन्वन्तर के आने पर जब दूसरे शुम्भ और निशुम्भ महा असुर उत्पन्न होंगे ॥४०-४१॥ उस समय मैं नन्दनाम के गोप के घर में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१॥
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा ।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥४३॥
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान् ।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥४४॥
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ।

उन शुम्भ-निशुम्भ महा असुरों का नाश करूँगी। विन्ध्याचल पर्वत पर निवास करूँगी ॥ ४२ ॥ फिर पृथ्वी तल में अत्यन्त भयंकर रूप धारण करके विप्रचिती के सन्तान के दैत्यों को मारूँगी ॥४३॥ उन असुरों को मारकर खाने से मेरे सब दांत रुधिर से अनार के फूल की तरह लाल हो जायेंगे ॥ ४४ ॥ तब देवता और मनुष्य लोग स्वर्गलोक और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥४५॥
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्टयामनम्भसि ।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥४६॥
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥४७॥
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥४८॥

मृत्युलोक में हर समय मेरी स्तुति करते हुए रक्तदन्तिका नाम करके कहेंगे ॥ ४५ ॥ फिर जब सौ वर्ष तक पृथ्वी पर बर्षा नहीं होगी कुवाँ इत्यादि में कहीं पानी न रहेगा। उस समय मुनि लोग पानी के लिये मेरी स्तुति करेंगे तब मैं पृथ्वी में पार्वती के समान अयोनिजा अर्थात् अपने आप ही उत्पन्न हूंगी ॥ ४६ ॥ जब मैं १०० नेत्रों से उन मुनियों को देखूँगी तब मुनि लोग शताक्षी नाम से सम्बोधित कर मेरी स्तुति करेंगे ॥ ४७ ॥ हे देवी ! तब मैं अपने शरीर से शाक उत्पन्न करके उसी से सब लोगों का पालन करूँगी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥४९॥
दुर्गा देवीति विख्यात तन्मे नाम भविष्यति ।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥५०॥
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥५१॥
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥५२॥

॥४८॥ तब पृथ्वी में मेरा नाम शाकंभरी होगा और उसी शाकम्भरी अवतार से दुर्ग नामक राक्षस का वध करूंगी ॥ ४९ ॥ तब देवी दुर्गा के नाम से प्रसिद्धि पाऊंगी और हिमालय पर्वत पर भयंकर रूप से प्रकट हो जाऊंगी ॥ ५० ॥ मुनि लोगों की रक्षा के लिए राक्षसों का भक्षण करूंगी–तब ऋषि लोग नम्रता से मेरी स्तुति करेंगे ॥ ५१ ॥ तब मैं भीमा देवी के नाम से प्रसिद्धि पाऊंगी जब अरुण नामक असुर तीनों लोकों का बाधक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम् ।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥५३॥
भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥५४॥
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ॐ॥५५॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याःस्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

उवाच ४ ॥ अर्धश्लोक १ ॥ श्लोकाः ५० ॥ एवम ५५ ॥ एवमादितः ॥ ६३० ॥

---

उत्पन्न होगा ॥ ५२ ॥ तब मैं भ्रामरी रूपा जिसमें असंख्य भौंरे मेरे चरण में लिपटे रहेंगे ऐसा रूप धारण कर सबके उपकार के लिए अरुण नामक राक्षस को मारूंगी ॥५३॥ तब मुझे सब लोग भ्रामरी के नाम से प्रसिद्ध करेंगे और मेरी स्तुति करेंगे—इसी तरह से जब दैत्यों से तुम लोगों को दुःख पहुचेगा ॥ ५४ ॥ तब मैं इस पृथ्वी पर उत्पन्न होकर—तुमलोगों के शत्रुओं का नाश करूंगी ॥ ५५ ॥

इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये—नारायणि स्तुतिर्नाम एकादशोध्यायः॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं ।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

ध्यानम्—देवी सिंह पर बैठी, बिजली के समान कान्तिमान, भाला, ढाल लिए हुये ८ कन्याओं के मध्य में हाथों में चक्र, गदा, खड्ग, ढाल, बाण धनुष, त्रिशूल, और तर्जनी से धनुष की डोरी बजाती हुई माथे पर चन्द्र धारण किये हैं ऐसी त्रिनेत्रा दुर्गा देवी का भजन करता हूं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ देव्युवाच ॥ १ ॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३ ॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः ।

देवी ने कहा—हे देवताओं—इस स्तोत्र से जो कोई चित्त स्थिर कर नित्य मेरी स्तुति करेगा। उसका दुःख मैं निःसन्देह नाश कर दूँगी ॥ १-२ ॥ जो कोई मधुकैटभ का नाश महिषासुर का वध और शुंभ-निशुंभ के मरण की कथा को पढ़ेगा ॥ ३ ॥ तथा अष्टमी नवमी और चौदश को एकचित्त होकर मेरे इस उत्तम माहात्म्य को सुनेगा ॥ ४ ॥ उसको किसी प्रकार का पाप नहीं लगेगा किसी प्रकार की दरिद्रता नहीं रहेगी और इष्ट-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५ ॥
शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः ।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति ॥ ६ ॥
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत॥ ७ ॥
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ८ ॥
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम ।

मित्रों से कभी वियोग नहीं होगा ॥ ५ ॥ उसको शत्रुभय, राजभय, और चौरभय नहीं रहेगा हथियार, अग्नि और जल से किसी प्रकार का भय न रहेगा ॥ ६ ॥ इस लिए मेरे माहात्म्य को स्वस्थ हो पढ़ना चाहिये यह माहात्म्य सुनने से भी सब प्रकार का कल्याण भक्तों का होता है ॥ ७ ॥ महामारी आदि उपसर्गों से शेष जो कष्ट तथा, दैहिक-दैविक और भौतिक इन त्रितापों को शान्त करता है ॥ ८ ॥ जिस घर में मेरा यह माहा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥
बलिप्रदाने पूजयामग्निकार्ये महोत्सवे ।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥१०॥
जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् ।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥११॥
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ।

त्म्य नित्य पढ़ा जायेगा मैं हमेशा उसके पास रहूंगी अलग नहीं होऊंगी ॥ ९ ॥ बलिप्रदान, पूजा, होम और पुत्र के जन्म तथा विवाहादि मंगल में इस मेरे चरित्र को पढ़ना और सुनना चाहिये ॥ १० ॥ ज्ञानी हो या अज्ञानी हो जो बलिप्रदान, पूजा और होम करता है उसको प्रीति युक्त मानती हूं ॥ ११ ॥ शरतकाल में मेरी पूजा प्रतिवर्ष की जाती है उस समय मेरे माहात्म्य को श्रद्धा के साथ जो कोई सुनेगा ॥ १२ ॥ वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥१४॥
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥१५॥
शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥१६॥

मनुष्य सब दुःखों से छूट कर मेरे प्रसाद से अन्न, धन, धान्य, पुत्र इत्यादि को पावेगा इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है ॥१३॥ मेरे इस माहात्म्य और मेरी शुभ उत्पत्ति मेरे पराक्रम को जो सुनेगा वह मनुष्य निर्भय हो जायगा ॥१४॥ जो पुरुष मेरे इस माहात्म्य को मन लगाकर सुनेंगे उनके शत्रुओं का नाश हो जायगा। और सुनने वाले का कल्याण होगा और उसे सुनने वाले के कुल की वृद्धि होगी ॥ १५ ॥ शान्ति कर्म में, खराब स्वप्न देखने में ग्रहों की पीड़ा में मेरे इस माहात्म्य को सुनना चाहिये ॥ १६ ॥ इसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः ।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥
बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१८॥
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥

सुनने से महामारी और ग्रहपीडा शान्त होती है दुःस्वप्न का दोष नष्ट हो जाता है ॥ १७ ॥ पूतना आदि बालग्रहों से ग्रसित बालकों की रक्षा के लिये मेरा माहात्म्य करता है जिन मनुष्यों का आपसमें झगड़ा हो गया हो तो इस मेरे माहात्म्य से मेल हो जाता है ॥१८॥ इस माहात्म्य के पढ़ने से वाघादि दुष्ट जानवरों का बल नाश हो जाता है इसके पढ़ने से भूत, पिशाचों का भय नाश हो जाता है ॥ १९ ॥ मेरा सम्पूर्ण यह माहात्म्य सन्निधि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१॥
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥२२॥
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥

करने वाला है बलिदान, पुष्पांजलि, अर्घ्य, धूप और उत्तम, गन्ध, दीप ॥ २० ॥ ब्राह्मणों को भोजन कराना होम और वर्ष दिन तक रात-दिन पंचामृत से स्नान कराने से उनको वस्त्राभूषण देने से जितनी प्रसन्नता मनुष्यों पर होती है ॥ २१ ॥ उतनी एक दिन मेरे चरित्र को सुनने से होती है और उसका पाप नाश हो जाता है तथा उसके शरीर के सब रोग छूट जाते हैं ॥ २२ ॥ मेरे जन्म के चरित्र सुनने से भूत-पिशाचादि से मनुष्यों की रक्षा होती है। युद्ध में मनुष्यों को शत्रुओं से भय नहीं होता। फिर हे देवी ! उसके पढ़ने से जिसने मेरी स्तुति की है तथा ब्राह्मणों ने जो मेरी स्तुति की है ॥२३॥ उससे मनुष्यों की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥२४॥
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥२५॥
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥२६॥
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ।

उत्तम बुद्धि का प्रकाश होता है शत्रुभय नहीं होता है। फिर हे देवता लोगों ! आप और ऋषि लोगों ने जो मेरी स्तुति की है ॥ २४ ॥ तथा ब्राह्मणों ने जो मेरी स्तुति की है उसके सुनने और पढ़ने से मनुष्यों को उत्तम ज्ञान होता है। वन में जहां मनुष्य चारों ओर अग्नि से घिरा हो या कहीं भयावनी जगह में अकेला पड़ गया हो ॥२५॥ वहाँ चारों ओर से चोरों द्वारा घिर गया हो वहाँ, कहीं पशुओं से घिरा हो वहाँ। जंगल में बाघ, सिंह, जंगली हाथी की चपेट में आया हो ॥२६॥ या राजा ने मारने का हुक्म दिया हो वा कैद में पड़ा हो या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२७॥
पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे ।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् ।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥२९॥
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥३०॥

ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥३२॥

नाव पर चढ़ कर हवा में पड़ा हो महाजलार्णव में घूमता हो या कहीं नाव फस गई हो, छूटती न हो ॥२७॥ या कही लड़ाई में उस पर हथियार का मेहवरसता हो । सर्वबाधाओं से वेदना हो जो महान कष्टकारी हो ॥२८॥ तो इस मेरे चरित्र का स्मरण करने से उन सब दुःखों से, उपद्रवों से छूट जायगा । मेरे प्रभाव से सिंह चोर आदि सब दुष्ट ॥२९॥ दूर ही से भाग जायंगे ॥३०॥ मेधा ऋषि ने कहा-हे सुरथ ! भगवती यह सब बात देवताओं से कह-कर ॥३२॥ देखते ही देखते देवताओं की दृष्टि से अन्तर्धान हो गई तब देवता लोग निर्भय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत ।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥३३॥
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहितारयः ।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥३४॥
जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे ।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥३५॥
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥

होकर पहले की तरह अपना-अपना अधिकार पाकर उसका पालन करने लगे।३३। और निसन्देह अपना यज्ञ भाग लेने लगे। जब देवी ने शुम्भ दैत्य का वध किया ॥३४॥ अतुल पराक्रमी जगत् के विध्वंस करने वाले निशुंभ को मार डाला बाकी दैत्य पाताल को भाग गये ॥ ३५ ॥ इस प्रकार हे सुरथ ! देवी नित्या हैं बारंबार नित्या हैं जब-जब देवताओं के ऊपर दुःख पड़ता हैं तब-तब अवतार लेकर जगत की रक्षा करती हैं ॥ ३६ ॥ वही भगवती सम्पूर्ण संसार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥३७॥
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥३८॥
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥३९॥
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ।

को मोह लेती हैं वही देवी सबको पैदा करती हैं वही देवी निष्कामभक्ति पूर्वक पूजन करने से मुक्ति और आत्मतत्व देती हैं जो फलप्राप्ति के निमित्त पूजा करने से प्रसन्न हो कर ऐश्वर्य देती हैं ॥ ३७ ॥ मेधाऋषि कहते हैं—हे राजन्! महाप्रलय में महामारी के स्वरूप से जो महाकाली रहती हैं उन्हीं में यह सब ब्रह्माण्ड मिल जाता है ॥ ३८ ॥ वही महाकाल प्रलय में संहारशक्ति, सृष्टि-काल में सृष्टि शक्ति हैं, स्थिति-काल में सनातनीशक्ति होकर पालन करती हैं ॥ ३९ ॥ और मनुष्यों के घर में सब प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सैवाभावे तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥४०॥
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा ।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॐ ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥
उवाच २ ॥ अर्धश्लोकाः २ ॥ श्लोकाः ३७ ॥ एवम् ४१ ॥ एवमादितः ६७१ ॥

---

का ऐश्वर्य देती हैं उसके अभाव में वह अलक्ष्मीरूपा हो दरिद्रता देती है ॥ ४० ॥ और फिर स्तुति पूजा महाकाली की करने से फल-फूल चढ़ाने से धूप देने से प्रसन्न हो कर धन-पुत्र देती है धर्म करने से अच्छी बुद्धि देती हैं ॥ ४१ ॥

इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये फलस्तुति वाक्य
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

---

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# त्रयोदशोऽध्यायः ।

ध्यानम्—

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत ॥ २ ॥

ध्यानम्—उदयकालीन सूर्य के समान कान्तिमान शरीरवाली चारों हाथों में पाश, अंकुश, तथा वर, अभय मुद्रा धारण किये हुए त्रिनेत्रा शिवा का भजन करता हूं।

ऋषि ने कहा—यह देवी का प्रभाव और उत्तम माहात्म्य मैंने कहा—वही सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाली पालन करने वाली और नाश करने वाली हैं ॥१-२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ।
तया त्वमेव वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५ ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७ ॥
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् ।

वही विष्णु माया भगवती बिद्या देती हैं। उस देवी से आप और वैश्य इसी तरह वेद और शास्त्र के जानने वाले भी मोहित हो रहे हैं, और मोहित रहेंगे ॥ ३ ॥ आप उस जगतमोहिनी महामाया परमेश्वरी की शरण में जाइये ॥ ४ ॥ आराधना करने से वही देवी मनुष्यों को भोग, स्वर्ग, मुक्ति देती हैं ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय ऋषि ने कहा—हे क्रौष्टुकि! मेधाऋषि की बात सुनकर राजा सुरथ ॥ ६-७ ॥ ममत्व-और राज्य छिन जाने से दुःखी और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ८ ॥
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥ ९ ॥
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वामूर्तिं महीमयीम्॥ १० ॥
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः ।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ११ ॥
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ।

व्याकुल महाभाग और महाव्रती मेधाऋषि को साष्टांग प्रणाम करके ॥८॥ उस वैश्य समेत तपस्या की इच्छा से वहाँ से चले और एक स्थान पर नदी के किनारे देवी के दर्शन करने के लिये बैठ गये और देवीसूक्त द्वारा देवी की स्तुति करने लगे—यह क्रिया उन लोगों ने मिट्टी की मूर्ति बनाकर ॥ ९-१० ॥ उसे फूलों का हार बनाकर पहिना कर एकाग्र मन से-धूप-दीप-होम आदि द्वारा पूजन करके किया ॥११॥ इसके बाद महाराज सुरथ और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥१२॥
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥१३॥

देव्युवाच ॥ १४ ॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥१५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ १६ ॥

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ।
अत्रैव च निजं राज्यं हत शत्रुबलं बलात् ॥१७॥

वैश्य ने अपना-अपना शरीर काटकर रक्त निकाल कर देवी को बलिदान दिया। इस तरह सभी इन्द्रियों को संयत कर तीन वर्ष तक पूजन किया ॥ १२ ॥ तभी वह जगत की माता चण्डिका देवी प्रसन्न हो प्रकट हुई और अपना दर्शन देकर बोली—कि हे महाराज सुरथ ! हे कुलनन्दन वैश्य ! तुम जो चाहो वही, वर मुझसे दोनों लोग माँग लो। वही मैं तुम्हें दूँगी मैं तुम लोगों से अति प्रसन्न हूं ॥ १३-१४-१५ ॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले—हे क्रौष्टुकि ! इतनी आज्ञा देवी की पाकर सुरथ राजा ने दूसरे जन्म में चिरकाल तक राज्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥१८॥

देव्युवाच ॥ १९ ॥

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥२१॥
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥२२॥

करने का वर मांगा और इस जन्म में भी अपने बल पराक्रम से शत्रुओं का संहार कर अपना राज्य अपने वश में करने के लिये भी वर मांगा तथा वैश्य ने भी संसार से विरक्त होकर तत्वज्ञान का वर देवी जी से मांगा। जिससे सभी प्रकार का विकार दूर हो जाय। राजा सुरथ और वैश्य से वर मांगने पर ॥ १८ ॥ देवी जी बोली–हे सुरथ ! अल्प समय में ही तुम अपना राज्य वापस पा जाओगे ॥ १९-२० ॥ और सभी शत्रुओं का भी नाश हो जायगा ॥ २१ ॥ और तुम्हारी आज्ञा से राज्य का सारा कार्य चलेगा और दूसरे जन्म में तुम विवस्वान नाम से सूर्य के पुत्र होकर ॥ २२ ॥ सावर्णि नाम के मनु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति २३॥
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥२४॥
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥२५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥२७॥
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥२८॥

पृथ्वी में होंवोगे ॥२३॥ और हे वैश्य तुम जो वरदान चाहते हो ॥ २४ ॥ वही वर मैं तुम्हें देती हूँ। संसिद्धि भक्ति के लिये तुम्हें पूर्ण ज्ञान होगा ॥ २५ ॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले कि हे सुरथ! और वैश्य इन दोनों को प्रसन्न हो देवी ने अभीष्ट वर दे दिया ॥ २७ ॥ वर देकर देवी शीघ्र ही अन्तर्ध्यान हो गईं। ऐसा वर देवी द्वारा पाकर क्षत्रियों में श्रेष्ठ राजा सुरथ!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सूर्याजन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२९॥
सावर्णिर्भविता मनुः ॥ क्लीं ॐ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

उवाच ६ । अर्धश्लोकाः ११ । श्लोकाः १२ । एवम् २९ । एवमादितः ७०० ॥ समस्त उवाचमन्त्राः ५७ । अर्द्धश्लोका ४२ । श्लोकाः ५३५, अवदानानि ॥ ६६ ॥

सूर्य से उत्पन्न होकर सावर्णि नाम के मनु होंगे ॥ २८-२९ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



हृदयादिन्यासः—ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ हृदयाय नमः ।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ शिरसे स्वाहा ।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ शिखायै वषट् ।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि ते रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ कवचाय हुम् ।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम् ।

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता द्वितीया, ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवीमाहात्म्य-पाठे विनियोगः ।

ध्यानम्–

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥

ध्यानम्—सिंह पर सवार देवी के मस्तक पर अर्धचन्द्र शोभित है, मरकत मणियों के समान शरीर की कान्ति है तथा चारो हाथों में शंख, चक्र, धनुष, बाण, लिए हुए अपने तीनों नेत्रों से सुशोभित तथा कानों में रत्नों से जड़े कुंडल तथा सम्पूर्ण शरीर में आभूषण को धारण किये हुए पैरों में घुघुरुओं से बजती हुई पायलें धारण किये हैं जो दुर्गा हमारी सम्पूर्ण दुर्गति तथा दरिद्रता को नाश करने वाली है उन्हीं दुर्गा का मैं ध्यान करता हूं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १ ॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।

मैं ( देवी ) रुद्र, वसु, आदित्य, विश्वदेवगण रूप से विचरण करती हूं । मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि, दोनों अश्विनी कुमारों की आत्मा हो मैंने धारण कर रखी है ॥ १ ॥ मैं ( देवी ) शत्रु का नाश करने वाला, सोम ( सोमयाग ) त्वष्टा नाम विश्वकर्मा, पूषा अर्थात् सूर्य एवं भग ईश्वर नाम के देवताओं को धारण किये हुए हूं । जो देवताओं की उद्देश्यपूर्ति के लिये प्रचुर हवि से युक्त सोमयागादि का अनुष्ठान किया है । उन सबके यज्ञ का फल मैं ( स्वयं ) धारण करती हूँ ॥ २ ॥ मैं (देवी) ब्रह्माण्ड की एक मात्रा स्वामिनी ही हूं । मैं पार्थिव रूपी तथा अपार्थिव रूपी धन भी देती हूं । मैं ( देवी ) ब्रह्म साक्षात्कार रूपा सभी का ज्ञान रूपा हूँ ॥ यही ज्ञान हो सभी उपासनाओं का आदि है ॥ प्रपंच रूप से अनेक भावों में अवस्थिता हूं । मैं सभीजीवों में भरि भावों से प्रविष्ट हूं । देवता इस प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥ ३ ॥
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥ ४ ॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।

मेरी अनेकों भावों से उपासना करते हैं ॥ ३ ॥ जीव जो भी अन्नादि भक्ष्य पदार्थों का भक्षण करता है, मेरा दर्शन करता है, एवं प्राण धारण करता है, ये जितनी भी क्रियाएँ होती हैं, सभी मेरे द्वारा ही सिद्ध होती हैं ॥ जो मुझे सब कर्मों में नहीं देख पाते हैं समझ नहीं पाते हैं वे इस संसार में नाश की ओर ही अग्रसर होते हैं। हे सौम्य रूपा! जो जो तत्व तुमसे कहे हैं उनको श्रद्धा के साथ सुनो ॥ ४ ॥ मैं (देवी) ने स्वयं ही ज्ञान तत्वों का उपदेश दिया है। देवता और मनुष्यों द्वारा यही चरणसेवा है। मैं जिसकी इच्छा करती हूं। उसे सबसे उच्चपद देती हूं। उसको ब्रह्मा बनाती हूं। ऋषि बनाती हूं। उसको आत्मज्ञान धारण करने योग्य बुद्धि भी देती हूं ॥ ५ ॥ मैं (देवी) ब्रह्मज्ञान विरोधी विनाश करने योग्य रुद्र (एकादश रुद्र) को हनन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ ६ ॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्ममयोनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।
ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूंद्यां वर्ष्मणोपस्पृशामिः ॥ ७ ॥
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥ ८ ॥

॥ इति ऋग्वेदोक्त देवीसूक्तं समाप्तम् ॥

करने के लिये प्रणव रूप धनुष पर आत्मा स्वरूप बाण युक्त करती रहती हूं । इसी प्रकार मैं ही जनसमूह के लिये युद्ध भी करती हूं ॥ मैं स्वर्ग तथा मृत्यु दोनों ही लोकों में भी सभी भावों में प्रविष्ट हूं ॥६॥ मैं ( देवी ) ने जगत्पिता को उत्पन्न किया । इसके शिखर भाग में आनन्दमय कोषाभ्यन्तरस्य विज्ञानमय कोष में हमारा कारण अवस्थित है । मैं सभी भुवनों में प्रविष्ट हो अवस्थिता हूं ॥ यह जो दूरस्थ स्वर्ग लोक है वह भी ( मैं ) ने अपने शरीर द्वारा स्पर्श किया है ॥ ७ ॥ मैं ( देवी ) जलवायु की भांति प्रवाहित रहती हूं तभी यह सभी भुवनों की सृष्टि आरम्भ होती है इस स्वर्गलोक और मृत्युलोक के परे भी मैं आत्मा रूप ही वर्तमान हूं ॥ इसी प्रकार मेरी महिमा का ज्ञान होता है ॥ ८ ॥

॥ इति ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त हिन्दी भाषाटीका समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

## अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् ।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ २ ॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ३ ॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ४ ॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तयैं नमो नमः ॥ ९ ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥
या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥
या देवि सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी सर्वभतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥२७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२९॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।३०।

( नोट—विस्तारभय से इसका दुबारा हिन्दी अर्थ नहीं दिया गया है। इसका अर्थ ५ वें अध्याय के श्लोक संख्या ९ से लेकर ८२ श्लोक तक हिन्दी भाषा में देखने का कष्ट करें। देखें पृष्ठ नं० १३३से—१४० तक )

इति तन्त्रोक्त देवीसूक्तम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

## अथ नवार्णजपविधिः ।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति मूलेन करौ संशोध्य—

करन्यासः—ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठि-काभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः—ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः वामनासापुटे। ॐ विंः नमः मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये।

'एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्'

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चाण्मुडायै विच्चे इति दिग्बंधः,

दिङ्न्यासः—ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ध्यानम्—खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ १ ॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ २ ॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ ३ ॥

जप आरम्भ करने के पूर्व 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः।' इससे माला की पूजा और प्रार्थना करे—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरुमाले त्वं गृह्णासि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" का १०८ जप करे ।

जप पूरा करके उसे भगवती को समर्पित करते हुए कहे—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

( नोट—पाठ आरम्भ के पहले की तरह ही यहां भी क्रम से ही दिया गया है। देखें पृष्ठ ३९ से )।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ प्राधानिकरहस्यम् ।

ॐ अस्य श्रीसरस्वतीप्रधानरहस्यमन्त्ररूपस्य, ब्रह्माऋषिरनुष्टुप्छंदः महाकाली देवता क्रां वीजम्, कीं शक्तिः, क्रूं कीलकम्—(महाकाली प्रीत्यर्थें) यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः । वीजत्रयेण षडंगः ।

ध्यानम्—रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्त सर्वाङ्गभूषणा ।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥१॥
रक्त तीक्ष्ण नखा रक्त रसना रक्तदन्तिका ।
पतिन्नारी वानु रक्ता देवीं भक्तं भजेज्जनम् ॥२॥

विस्तारभय से दुबारा अर्थ नहीं लिखा गया है । देवी कवच और इस रहस्य के ध्यान का अर्थ मूर्ति रहस्य के श्लोक ५-६ में देखें ।

राजोवाच—

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥

राजा ने कहा—हे भगवन् आपने चण्डिका नाम की देवी के अवतारों का सविधि वर्णन किया किन्तु ब्रह्मन् अब उन अवतारों का मूलमुख्यरूप कहिये ॥ १ ॥ हे द्विज !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज ।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥

ऋषिरुवाच—

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ३ ॥
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नंव्यवस्थिता ॥ ४ ॥

देवी के जिस स्वरूप की आराधना जिस विधि से मुझे करनी चाहिये वह स्वरूप और आराधना करने की विधि मुझसे विधिपूर्वक कहिये ॥ २ ॥ ऋषि ने कहा—यह रहस्य परम गुप्त है इस कारण यह कहने योग्य नहीं है। परन्तु हे नराधिप ! तुम भक्त हो ! इसलिये ऐसा कोई विषय नहीं है जो तुमसे न कहूं ॥ ३ ॥ जो सबकी आदिरूपा सत्व, रज और तम तीनों गुण वाली परमेश्वरी महालक्ष्मी हैं वह लक्ष्य और अलक्ष्य स्वरूपा हैं तथा सम्पूर्ण जगत में स्थिति रूप से व्याप्त हैं ॥ ४ ॥ हे राजन्—वह हाथों में मातुलिंग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रतीं ।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥ ५ ॥
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा ।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना ।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ ८ ॥

( बीजौरा फल ) गदा, खेट, पानपात्र तथा सिर पर नाग, लिंग और योनि धारण किये हैं ॥ ५ ॥ तपाये सुवर्ण के समान कान्ति वाली तथा तपाये सुवर्ण के सुन्दर आभूषण धारण किये अपने तेज से सम्पूर्ण आकाश को परिपूर्ण करती हैं ॥ ६ ॥ उस परमेश्वरी ने सम्पूर्ण जगत को शून्य देखकर केवल तमोगुण से एक दूसरों से श्रेष्ठरूप धारण किया ॥ ७ ॥ वह काजल के ढेर के समान कान्ति वाली, दाढ़ों से शोभायमान, सुन्दर मुखवाली, विशाल नेत्रा, सूक्ष्मकटि से सुशोभित हैं ॥ ८ ॥ खड्ग, पानपात्र, शिर तथा खेट से शोभित चार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा ।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणाऽहि शिरःस्रजम् ॥ ९ ॥
सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा ।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥१०॥
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥११॥
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥१२॥

भुजा वाली और कबन्ध का हार तथा सर्पों के सिर की माला धारण किये हैं ॥ ९ ॥ उस तामसी स्त्री ने महालक्ष्मी से कहा—हे माता! तुम मेरा नाम रखो और बताओ मैं तुमको नमस्कार करती हूँ ॥ १० ॥ महालक्ष्मी ने उस तामसी स्त्री से कहा—मैं तुम्हारे नाम और कर्म बताती हूं ॥ ११ ॥ महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृषा, निद्रा, तृष्णा, एकवीरा, कालरात्रि और दुरत्यया ॥ १२ ॥ ये तुम्हारे नाम कर्मानुसार हैं। इन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ।
एभिःकर्माणिं ते ज्ञात्वा योऽधीतेसोऽश्नुतेसुखम् ॥१३॥
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥१४॥
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी ।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥१५॥
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती ।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥१६॥

नामों से तुम्हारे कर्मों को जानकर जो भी मनुष्य इनको पढ़ता है। वही सुखी होता है ॥१३॥ हे राजन्! महालक्ष्मी ने उससे यह कहकर अतिशुद्ध सतोगुणी चन्द्रमा के समान कान्ति वाला दूसरा स्वरूप धारण किया ॥ १४ ॥ वह उत्तम स्त्री अक्षमाला, अंकुश, वीणा तथा पुस्तक धारण किये थी। महालक्ष्मी ने उनके भी नाम रख दिये—जो आगे हैं ॥ १५ ॥ महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी कामधेनु, बीजगर्भा, अधीश्वरी ॥ १६ ॥ उसके बाद महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती से कहा—तुम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् ।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुनं स्वानुरूपतः ॥१७॥
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥१८॥
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम् ।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥१९॥
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥२०॥

दोनों देवी अपने २ स्वरूप के अनुसार स्त्री-पुरुष का जोड़ा उत्पन्न करो ॥१७॥ महालक्ष्मी ने उन दोनों से यह कहकर हिरण्यगर्भ सुन्दर कमल पर बैठा हुवा स्त्री-पुरुष का एक जोड़ा स्वयं ही उत्पन्न किया ॥ १८ ॥ पुरुष को हे ब्रह्मन्, ! हे विरंचि, हे धातः ! तथा स्त्री को श्रीः, पद्मा, कमला और लक्ष्मी नाम से सम्बोधित किया ॥ १९ ॥ महाकाली और महासरस्वती ने भी स्त्री-पुरुषों के जोड़े उत्पन्न किये। हे राजन्! उनके भी स्वरूप और नाम कहता हूं ॥ २० ॥ महाकाली ने नीलकण्ठ, रक्तबाहु, श्वेतांग, चन्द्रशेखर पुरुष और एक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम् ।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥२१॥
स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥२२॥
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप ।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥२३॥
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥२४॥

गोरी स्त्री उत्पन्न किया ॥ २१ ॥ पुरुष के रुद्र, शंकर, स्थाणु, कपर्दी, त्रिलोचन तथा स्त्री के त्रयी, विद्या, कामधेनु, भाषा, अक्षरा और स्वरा नाम रखे ॥ २२ ॥ हे राजन्! सरस्वती ने गोरी स्त्री और कृष्णवर्ण पुरुष उत्पन्न किये उन दोनों के नाम भी कहता हूं। ॥ २३ ॥ पुरुष के विष्णु, कृष्ण, हृषिकेश, वासुदेव और जनार्दन तथा स्त्री के नाम उमा, गौरी, सती, चण्डी, सुन्दरी, सुभगा और शिवा रखे ॥ २४ ॥ इसी तरह तीनों स्त्रियां शीघ्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥२५॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृपत्रयीम् ।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥२६॥
स्वरया सह संभूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत् ।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद्गौर्या सह वीर्यवान् ॥२७॥
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप ।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२८॥

ही पुरुष तत्व को प्राप्त हुईं। उनको दिव्य दृष्टि वाले ही पुरुष देखते हैं। दूसरे नहीं ॥ २५ ॥ हे नृप ! महालक्ष्मी ने वेदत्रयी पत्नी ब्रह्मा को, वर देने वाली गौरी शिव को, लक्ष्मी विष्णु को दी ॥ २६ ॥ ब्रह्मा ने स्वरा के साथ मिलकर एक अण्डा उत्पन्न किया और वीर्यवान् रुद्र भगवान ने गौरी के साथ मिलकर उसे फोड़ दिया ॥ २७ ॥ हे राजन् ! उस अण्ड से महतत्व आदि स्थावर-जंगम रूप महाभूतात्मक सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न किया ॥ २८ ॥ भगवान विष्णु ने लक्ष्मी के साथ उसका पालन किया और महादेवि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥२९॥
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥३०॥
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥ॐ॥३१॥

ने गौरी के साथ सम्पूर्ण जगत का संहार किया। ॥ २९ ॥ हे महाराज! महालक्ष्मी सर्व सत्वमयी ईश्वरी हैं। निराकार हैं और साकार भी। उसके अनेक नाम हैं। ॥ ३० ॥ वह अपने नामों के सिवाय अन्य किसी प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं जानी जा सकती हैं ॥ ३१ ॥

इति भगवत्यां प्राधानिकरहस्यम् समाप्तम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ वैकृतिकरहस्यम् ।

अस्य श्री वैकृतिकरहस्य मंत्रस्य विष्णुऋषिः उष्णिकछंदः श्रीमहालक्ष्मी-देवता श्रीं बीजम्—ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् जपे विनियोग, बीजत्रयेण षडंगः ।

ध्यानम्—सर्वास्याद्या महालक्ष्मिस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।
लक्ष्यालक्ष्य स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥१॥
मातुलिंगं गदा खेटं पानपात्रं च बिभ्रती ।
नागं लिंगं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनी ॥२॥
तप्तकांचनवर्णाभा तप्तकांचन भूषणा ।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥३॥

इस ध्यान का हिन्दी अर्थ प्राधानिकरहस्य के श्लोक संख्या ४।५।६ में देखें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ १ ॥
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥ २ ॥
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ ३ ॥

ऋषि ने कहा—हे राजन् ! मैंने जिस तामसी, सात्विकी और राजसी त्रिगुणात्मिका देवी का वर्णन किया है । वह शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा और भगवती भी कहलाती हैं ॥१॥ तमोगुण वाली महाकाली विष्णु भगवान की योगनिद्रा हैं । जिनकी स्तुति मधु-कैटभ के नाश के लिये ब्रह्मा ने की थी ॥ २ ॥ वह काजल के समान काली हैं उसके दस मुंह दस भुजाएँ दस पैर हैं और तीस विशाल नेत्र हैं । ॥ ३ ॥ हे राजन् ! वह सुन्दर दाढ़ों और दांतो वाली महाकाली भयंकर रूपवाली होने पर भी । भक्तों को रूप-सौभाग्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपाणि भूमिप ।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ४ ॥
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥ ५ ॥
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा ।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ ७ ॥

और कान्ति आदि महाश्री देने वाली हैं ॥ ४ ॥ वह खड्ग, बाण, गदा, शूल, शंख चक्र, भुशुण्डी। परिघ, धनुष और रुधिर टपकता हुवा सिर धारण करती हैं ॥ ५ ॥ वह दुरत्यया महाकाली विष्णु की माया हैं। जिसकी आराधना से चराचर जगत् वश में होता है ॥ ६ ॥ जो सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुई हैं वह अत्यन्त कान्तिमान हैं। वह महिषमर्दिनी त्रिगुणात्मिका साक्षात् महालक्ष्मी हैं ॥ ७ ॥ उनका मुख श्वेत,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥१०॥
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥११॥

भुजाएं नीली, स्तनमण्डल श्वेत है। उनके कटि और चरण लाल, जांघे नीली हैं वह उत्कट मदवाली है ॥ ८ ॥ उनके जघन विचित्र हैं वह चित्र-विचित्र माला, वस्त्र और आभूषण धारण करती हैं। विचित्र लेपन करती है वह रूप लावण्यवती और सौभाग्यवती हैं ॥ ९ ॥ वह देवी अठारह भुजावाली है और सहस्र भुजावाली भी हैं। अब क्रम से उनके दाहिने और बाएँ हाथों के आयुध कहते हैं ॥ १०॥ अक्षमाला, कमल, बाण, तलवार, वज्र, गदा, चक्र, त्रिशूल, फरसा, शंख, घंटा, फाँसी ॥ ११ ॥ शक्ति, दण्ड,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥१२॥
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३॥
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत ।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥१५॥

ढाल, धनुष, पानपात्र और कमण्डलु शोभित हैं वह कमल पर बैठी हैं ॥ १२ ॥ हे राजन् ! जो मनुष्य सर्वदेवमयी ईश्वरी महालक्ष्मी की पूजा करता है वह सब मनुष्यों और देवताओं का स्वामी होता है ॥ १३ ॥ हे नृप ! जो गौरी के देह से उत्पन्न हुई और केवल सत्वगुण प्रधाना है वह शुम्भासुर को मारने वाली साक्षात् सरस्वती है ॥ १४ ॥ वह आठ भुजाओं से सुशोभित है—वह बाण, मुसल, शूल, चक्र, शंख घंटा, हल, धनुष, धारण करती हैं ॥ १५ ॥ ऐसी शुंभ-निशुंभ नाशिनी देवी को जो भक्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१६॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥१७॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥१८॥
विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे ।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेश पुरतो देवतात्रयम् ॥१९॥

पूजता है वह सर्वज्ञ होता है ॥ १६ ॥ हे राजन्! शुम्भ-निशुम्भमर्दिनी का जो स्वरूप है वह तुमसे कहा। अब उन जगन्माताओं की उपासना अलग २ सुनों—॥ १७ ॥ जब महालक्ष्मी का पूजन करे तब महाकाली तथा सरस्वती का दक्षिण और बाम क्रम से पूजन करे। उनके पीछे की तरफ देवियों सहित तीनों देवताओं का पूजन करे ॥ १८ ॥ मध्य में सरस्वती के साथ ब्रह्मा का, दक्षिण में गौरी के साथ रुद्र का, बाईं तरफ लक्ष्मी के साथ विष्णु का पूजन करे। इनके आगे सामने तीनों देवियों का पूजन करे ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥२०॥
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥२१॥
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्ट प्रशान्तये ।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥२२॥

अष्टादश भुजावाली, लक्ष्मी का महालक्ष्मी के सामने—और उनके बाम भाग में महाकाली के सामने दशमुखी काली का, दक्षिण में अष्टभुजा सरस्वती का इस प्रकार महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिये ॥ २० ॥ अठारह भुजा का पूजन करना हो अथवा दशमुखवाली अष्टभुजा का पूजन करना हो तो दक्षिण और उत्तर की तरफ पूजन करें। ॥ २१ ॥ अष्टभुजी ऐसे कालमृत्यु का दक्षिण उत्तर में पूजन करना इससे सर्वारिष्ट शान्त होते हैं यदि अष्टभुजा शुम्भासुरमर्दिनी का पूजन करना हो तो ॥ २२ ॥ नवशक्तियों का तथा रुद्र और विनायक का पूजन अवश्य करना चाहिये। नमो देव्यै इस स्तोत्र से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥२३॥
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥२४॥
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥२५॥
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥२६॥

महालक्ष्मी का पूजन करे ॥ २३ ॥ इन तीनों अवतारों के चरित्र से तथा इन्हीं स्तोत्रों के आधार से स्तुति पाठ करे—यह अठारह भुजा वाली देवी पूजनीय हैं—यही महिषमर्दिनी ॥२४॥ महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती हैं। यही पुण्य-पापों की ईश्वरी-सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी हैं ॥ २५ ॥ जो पुरुष महिषासुरमर्दिनी का पूजन करता है—वह जगत का स्वामी होता है। तीनों लोकों को धारण करने वाली तथा भक्तों से प्रीति करने वाली, चण्डिका ॥ २६ ॥ का अर्घ्य, आभूषण, गन्ध, पुष्प, अक्षत, से धूप, दीप,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अर्घ्याद्यैरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः ।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥२७॥
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ।
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥२८॥
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः ।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥२९॥
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥३०॥

नैवेद्य और अनेक भक्ष्यपदार्थों से पूजन करना चाहिये ॥ २७ ॥ हे राजन् ! रुधिर मिले मांस की बलि से तथा मदिरा से भी पूजा करनी चाहिये। प्रणाम, आचमन, सुगन्धित चन्दन से ॥ २८ ॥ कपूर, ताम्बूल ले भावभक्ति के साथ पूजन करे। देवी के आगे वाम भाग में कटे सिर वाला महिषासुर महिष का ॥ २९ ॥ पूजन मोक्ष प्राप्ति के लिये करें। दक्षिण की ओर अग्रभाग में समग्र धर्मरूप ईश्वर का ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः ॥३१॥
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥३२॥
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात् ।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥३३॥
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥३४॥

चराचर को धारण करने वाले देवी के सिंह का पूजन करे। इन कार्यों को तथा स्तवन और पाठ करने में बुद्धिमानों को एकाग्र मन से ही करना चाहिये ॥ ३१ ॥ तथा अंजली बनाकर मेरे चरित्र का पाठ करे—यदि समय न रहे तो मध्यम चरित्र से ही स्तुति करे, किन्तु केवल प्रथम या उत्तम से पाठ न करे ॥ ३२ ॥ आधे चरित्र का पाठ कभी न करें इससे विघ्न होता है। प्रदक्षिणा नमस्कार करके हाथ जोड़ सावधानी से ॥ ३३ ॥ जगद्धात्री से बार-बार क्षमा याचना करे। सप्तशती के प्रत्येक मंत्र अथवा महालक्ष्मी स्तोत्र ( देव्यायया तत् )। से तिल, घी और खीर की आहुति दे ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ।
भूयो नामपदैर्देवी पूजयेत्सुसमाहितः ॥३५॥
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्राणानारोप्य चात्मनि ।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥३६॥
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥३७॥
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥३८॥

सावधानी से देवी को हवि प्रदान करे। भगवती का नाम और पदों से पूजन करे ॥३५॥ एकाग्रचित्त सावधान हो तथा हाथ जोड़ कर आत्मा में प्राणों को रोक ॥ नम्रता से बहुत देर तक चण्डिका देवी का ध्यान करे और उन्हीं में तन्मय हो जाव ॥ ३६ ॥ इस तरह जो भक्तिभाव से परमेश्वरी का पूजन करता है—वह सर्वप्रकार के अभीष्ट सुखों को भोग अन्त में देवी के लोक को प्राप्त करता है ॥ ३७ ॥ जो पुरुष भक्तों के ऊपर दया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् ।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥३९॥

॥ इति वैकृतिकंरहस्यं सम्पूर्णम् ॥

वाली चण्डिका का पूजन नहीं करता है। देवी उसके पुण्यों को विफल कर उसे जन्मभर दुःख शोक से भस्म करती रहती हैं ॥ ३८ ॥ इसलिए हे महिपाल तुम सम्पूर्ण लोकों की माहेश्वरी चण्डिका का उपरोक्त कहे विधान से पूजन करो सुख पावोगे ॥ ३९ ॥

## अथ मूर्तिरहस्यम् ।

अस्य श्रीं मूर्तिरहस्य मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छंदः महासरस्वतीदेवता ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् जपे विनियोगः ॥ बीजत्रयेणषडंगः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ध्यानम्—

सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्वैकगुणाश्रया ।
साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुंभासुर निवर्हिणी ॥

ऋषिरुवाच—

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १ ॥
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा ।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥ २ ॥

ऋषि ने कहा—इस प्रकार नंदा भगवती नामवाली जो नन्द से उत्पन्न होगी। उसकी भक्तिपूर्वक स्तुति करने से तीनों लोक वश में होगा ॥ १ ॥ वह देवी सुवर्ण के आभूषणों से सुशोभित है उसकी कान्ति सुवर्ण के समान है—देवी सुवर्ण के वर्ण की है वह देवी सुवर्ण के समान दीप्तिमान है ॥ २ ॥ कमल, अंकुश, पाश और शंख से उसकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा ।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥ ३ ॥
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयाऽनघ ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥ ४ ॥
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा ।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशाति भीषणा ॥ ५ ॥
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका ।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ ६ ॥

चारों भुजाएँ शोभित हैं। इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी, श्रीरुक्मा और कमलासना येही नाम हैं ॥ ३ ॥ हे निष्पाप ! मैंने रक्तदन्तिका नाम की जिस देवी का वर्णन किया है। उसका संपूर्ण भयानक स्वरूप कहता हूं सुनो ॥४॥ रक्तवस्त्रा, रक्तवर्णा, रक्त का ही सब अंगों में आभूषण शोभित है, रक्त, आयुध, रक्त नेत्र, रक्त केशवाली, अतिभयंकर ॥५॥ रक्त वर्ण के तीक्ष्ण नख वाली, रक्त आसन पर स्थित, रक्त दाँत वाली। देवी भक्त के वश में उसी प्रकार रहती है जैसे स्त्री पति के अनुकूल रहती है उसका हम भजन करते हैं। ॥ ६ ॥ वह देवी पृथ्वी के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनौ ।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीवमनोहरौ ॥ ७ ॥
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी ।
भक्तान् सम्पादयेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ ८ ॥
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा ।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ ९ ॥
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥१०॥

समान विशाल-सुमेरु के समान दोनों स्तन हैं। वे दोनों स्तन, बड़े लम्बे, मोटे अत्यन्त मनोहर ॥ ७ ॥ कड़े शोभायमान और आनन्द के समुद्ररूप हैं सब कामनाओं को देने वाला दोनों स्तनों को देवी अपने भक्तजनों को पिलाती हैं ॥ ८ ॥ देवी की भुजाओं में खड्ग, पात्र, हल और मूसल सुशोभित है। वह देवी रक्तचामुण्डा और योगेश्वरी के नाम से विख्यात हैं ॥ ९ ॥ वह स्थावर जंगम रूप सम्पूर्ण जगत में व्याप्त हैं। जो पुरुष भक्ति-भाव से देवी की पूजा करता है वह चराचर में व्याप्त होता है ॥ १० ॥ जो पुरुष रक्तदन्तिका के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुस्तवम् ।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥११॥
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषित तनूदरी ॥१२॥
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥१३॥
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम् ।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥१४॥

इस स्तोत्र को पढ़ता है। देवी उसकी ऐसी सेवा करती हैं जैसे स्त्री अपने प्रिय पति की ॥११॥ शाकंभरी देवी का नील वर्ण है, नील कमल के समान नेत्र हैं, गंभीर नाभि है, त्रिवली से विभूषित उनका सूक्ष्म उदर है॥ १२॥ कड़े ऊँचेगोल मोटे समान मांसल वाले स्तन हैं। उसके हाथ में कमल है उस पर भौंरे गुंजार रहे हैं ॥१३॥ और कमल पर ही विराजमान हैं। पुष्प पल्लव और फल से युक्त शाक संचय है। अनेक सुन्दर रसों वाली क्षुधा तृष्णा मृत्यु और वृद्धावस्था को दूर करने वाली॥ १४॥ चमकता हुवा धनुष शाक समूह धारण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी ।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥१५॥
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम् ।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती ॥१६॥
शाकम्भरी स्तुवन्ध्यायञ्जपन्सम्पूजयन्नमन् ।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥१७॥
भीमाऽपि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥१८॥

किए हैं। वह शांकभरी शताक्षी है और वही दुर्गा भी कही गई हैं ॥ १५ ॥ वही विशोका-दुष्टदमनी उमा, चण्डी, गौरी, सती, कालिका और विपत्तियों का नाश करने वाली पार्वती हैं ॥१६॥ जो मनुष्य शाकंभरी का ध्यान जप पूजन स्तुति और नमस्कार करता है। वह शीघ्र ही अन्न पान अमृत फल पाता है ॥ १७ ॥ भीमा देवी भी नील वर्णा हैं उनकी दाढें और दाँत बड़े सुन्दर हैं। उनके नेत्र विशाल हैं, कुच गोल और पयपूर्ण स्थूल हैं ॥ १८ ॥ वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चन्द्रहासं च डमरुं पान पात्रं च बिभ्रती ।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥१९॥
तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् ।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥२०॥
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते ।
इत्येता मूर्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप ॥२१॥
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥२२॥

चन्द्रहास तलवार, डमरू, कंपाल और ढाल धारण किये हैं। वह एकवीरा, कालरात्रि, कामदा, नाम से कही जाती हैं ॥ १९ ॥ तेजोमंडला दुर्धर्शा, भ्रामरी चित्रकान्तिभृत। चित्राभरण भूषिता चित्रानुलेपना ॥ २० ॥ चित्रभ्रमरपाणि और महामारी इन नामों से प्रसिद्ध हैं। हे नृप! ये देवि की मूर्तियां शास्त्र में वर्णित हैं ॥ २१ ॥ ये मूर्तियाँ जगन्माता, चण्डिका की कामधेनु कहलाती हैं। हे राजन्! यह परमगुप्त चरित्र है इसको किसी से भी नहीं कहना चाहिये ॥ २२ ॥ हे नृप। जो इन दिव्यमूर्तियों के आख्यान को पढ़ता है उसे सभी प्रकार की अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। उसे सर्वदा सभी प्रकार से प्रयत्न कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥२३॥
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि ।
पाठमात्रेण मंत्राणां मुच्यते सर्वकिल्विषैः ॥२४॥
देव्याध्यानं मयाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं महत् ।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥२५॥
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम् ॥२६॥

देवी का जप करते रहना ही चाहिये ॥ २३ ॥ सात जन्मों के उपार्जित किये भयकंर पाप ब्रह्महत्या के समान भीं हों तो भी पाठ करनें से ही मुक्त हो जाता है ॥२४॥ यह देवी का ध्यान जो मैं कहता हूं गुप्त से भी गुप्त है इसको प्रयत्न पूर्वक करने से सब कामों की सिद्धि होती है ॥ २५ ॥ यह देवी सभी रूपों में है यह संसार भी सभी देवीमय ही है इसलिए विश्वरूपा देवी को नमस्कार करता हूं ॥ २६ ॥

॥ इति मूर्तिरहस्यं समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्र मालामंत्रस्य पुरन्दर ऋषिः अनुष्टुप्छंदः इन्द्राक्षी देवता महालक्ष्मी बीजं सूर्यस्तत्वं भुवनेश्वरी शक्तिः माहेश्वरी कीलकं शक्तिः प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ ऐं इन्द्राक्षी अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ( हृदया० )
ॐ क्लीं महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः ( शिरसि )
ॐ ह्रीं भुवनेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः ( शिखायै० )
ॐ क्लीं माहेश्वरी अनामिकाभ्यां नमः ( कवचायहुँ )
ॐ क्रीं कात्यायनी कनिष्ठिका० नमः ( नेत्रत्रयाय० )
ॐ श्रीं कौमारी करतलकरपृष्ठा० ( अस्त्रायफट् )

अथमंत्रः—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं ऐं स्वाहा ।

अथदिगबन्धः—ॐ ब्रह्माणी पूर्वे, ॐ माहेश्वरी आग्नेय्यां । ॐ कौमारी याम्यां । ॐ वैष्णवी नैर्ऋत्यां । ॐ वाराही पश्चिमायां ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ नारसिंही वायव्यां । ॐ कालरात्रिः उदीच्यां । ॐ सरस्वतीं ऐशान्यां । ॐ भैरवीं ऊर्ध्वे । ॐ विन्ध्यवासिनीं अधः ।

ध्यानम्—ॐ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभां ।
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदम् ॥ १ ॥
इन्द्राक्षी युवतीं देवीं नानालंकार भूषिताम् ।
प्रसन्न वदनाम्भोजामप्सरोगण सेविताम् ॥ २ ॥
द्विभुजां सौम्यवदनां पाशांकुशधरां परां ।
त्रैलोक्य मोहिनी देवीमिन्द्राक्षीं तां नता वयम् ॥३॥

इति ध्यात्वा—गायत्रेसहमूलेनावाहनम् ॥ अथस्तोत्रम्—

ॐ इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातया ।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला ।
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रि तपस्विनी ॥ ३ ॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विकटाक्षी जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ ४ ॥
अजिता भद्रदानन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यया परमेश्वरी ॥ ५ ॥
सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ।
इन्द्राक्षी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ॥ ६ ॥
महिषासुरहन्त्री च चामुण्डा गर्भदेवता ।
वाराही नारसिंही च भीमाभैरव वाहिनी ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



श्रुतिः स्मृतिमहामेधा विद्या लक्ष्मी सरस्वती ।
अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ॥ ८ ॥
भैरवी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ।
एतैर्नामपदैर्दिव्यैस्स्तुता शक्रेण धीमता ॥ ६ ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं वित्तं गीतं यशोबलम् ।
नाभिमात्रे जले स्थित्वा सहस्रं परिसेव्यया ॥१०॥
जपेत्स्तोत्रमिदं मंत्रं वाचासिद्धिर्भवेत्तव: ।
अनेन विधिनाभक्त्या मंत्रसिद्धिश्च जायते ॥११॥
शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधि वंधनात् ।
आवर्तन सहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ॥१२॥
सायं प्रातः पठेन्नित्यं षण्मासात्सिद्धिमाप्नुयात् ।
चोर व्याधिभयं नास्ति मनसापरि चिन्तयेत् ॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



संवत्सर प्रमाणेन सर्वकामार्थ सिद्धये ।
राजानं वशमाप्नातिषण्मासान्नात्र संशयः ॥१४॥

॥ इति इन्द्राक्षीस्तोत्रसम्पूर्णम् ॥

## ❀ अथ देव्यापराधक्षमापनस्तोत्रम् ❀

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुति महो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः ॥
न. जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परंजाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणं ॥ १ ॥

विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालसतथा
विधेया शक्य त्वा तव चरणयोर्याच्युतिरभूत् ॥
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि ! सकलोद्धारिणि ! शिवे !
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि ! बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषा मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मदीयोयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे !
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥
जगन्मातर्मातस्तव चरण सेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि ! द्रविणमपि भूयस्तव मया ॥
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुते
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥
परित्यक्त्वा देवान्विविध विधसेवाकुल तथा
मया पञ्चाशीतेरधिकमुपनीते तु वयसि ॥
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपानापि भविता
निरालम्बो लम्बोदर जननि ! कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपम गिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कनकैः ॥
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि ! जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥
चिताभस्मा लेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजग पतिहारी पशुपतिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं,
भवानि ! त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम् ॥ ७ ॥
न मोक्षस्या कांक्षा न च विभव वाञ्छापि च
न मे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि ! जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव ! शिव ! भवानीति जपतः ॥ ८ ॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किं रुक्ष चिन्तन परैर्नकृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब ! परं तवैव ॥ ९ ॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे ! करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठ त्वं मम भावयेथाः क्षुधा तृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्र मत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराध परं परावृतं, नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥
॥ इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं देव्यापराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# अथ भगवत्यानीराजनम् ।

ॐ जयदेवि जयदेवि जयकृष्णे माये जय निरवधिछाये रंतुं रमण सुशीले त्रिगुणी कृतकाये ॥ षट्कोणोपरि शक्तित्रयचक्रं दत्तं तदुपरि नागदलीकृत भूपुरमपिदत्तम् ॥ एवं सप्तावरणित पूरितयंत्रं हृदये मनसा निहितं द्वाविंशति मन्त्रं ॥ जयदेवि जय-देवि ॥ १ ॥ सजलघनच्छविकाये पितृवनकृतसदने घोरानन परिभूषितरिपुभय कृत रदने ॥ शवकर रचितानीवी शवयुग ताटङ्के मुण्डसुमाल सुशोभित शिवशवपर्यङ्के ॥ जयदेवि जयदेवि ॥ २ ॥ सद्यश्छिन्नशिरोवर खड्गाभयवरदे मुक्तकचावलि रुचिरे ब्रह्मादिकवरदे ॥ विपरीतारति सक्ते दूरीकृत वसने महिषादिक परिभक्षण रक्तीकृत रदने ॥ जयदेवि जयदेवि ॥३॥ पात्रासादन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वल्यलि परिपूजा सकलैः ब्रह्मादिभिरपि विबुधैरभिपूजित-सुफलैः ॥ तवच्चरण द्वयभक्तिज्योषङ्किलमातः ईहे किंचिन्नान्यं मानसधृतशातः ॥ जयदेवि जयदेवि ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमद्शंकराचार्यं विरचितं भगवत्यानीराजनं संपर्णम् ॥

## अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममालास्तोत्रम् ।

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥१॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गं निहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला ॥२॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥३॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥४॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥५॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ॥६॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ।

॥ इति दुर्गा द्वात्रिंशन्नाममालास्तोत्रम् ॥

मुद्रक—ज्योतिष प्रकाश प्रेस—कालभैरव मार्ग, वाराणसी ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


# दुर्गा सप्तशती मूल

सम्पूर्ण अंगों से सुसज्जित कर प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों का आधार लेकर सर्व शुद्ध पाठ तथा अन्य बहुत से उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है।

छपाई सुन्दर—कागज बढ़िया देते हुए भी शुद्धता का ध्यान रखकर नवदुर्गा का रंगीन चित्र दिया है।

मूल्य ७)००

डाक व्यय अलग—

प्राप्तिस्थान—

श्री राजराजेश्वरी पुस्तकालय, कालभैरव मार्ग
वाराणसी--२२१००१


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection